स्त्रीदर्पण

जिस में विद्यानुरागी लड़कियों और स्त्रियों का
परमार्थ साधन और गृह कार्य्य की प्रवी-
णता और निपुणता और उत्तम वार्त्ता
लाप का वर्णन अति सरलता और
सुगमता सहित किया गया है

काश्मीरि पण्डित माधव प्रसाद एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर
ज़िलअ सुलतांपुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ
दूसरी बार
मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में
मुद्रित हुआ॥

अक्तूबर सन् १८७९ ई॰

स्त्रीदर्पण

जिस में विद्यानुरागी लड़कियों और स्त्रियों का
परमार्त्थ साधन और गृह कार्य्य की प्रवी-
णता और निपुणता और उत्तम वार्त्ता
लाप का वर्णन अति सरलता और
सुगमता सहित किया गया है

काश्मीरि पण्डित माधव प्रसाद एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर
ज़िलअ़ सुल्तांपुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ
दूसरी बार
मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में
मुद्रित हुआ॥

अक्तूबर सन् १८७६ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् नवम्बर सन् १८७९ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल्ल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपर की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
व्याकरण और ज्योतिष।	अमरविनोद	भगवद्गीता
सिद्धान्त चन्द्रिका	जगदविनोद	भगवतीगीता
लघुकौमुदी	औषधिसङ्ग्रह कल्पवल्ली	श्रीमद्भागवत सटीक
मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी	निघण्ट भाषा	तथा दशम स्कन्ध
शीघ्रबोध	वैद्यदर्पण	हनुमान बाहुक
पाराशरी सटीक	रामविनोद	सांख्यतत्त्वकौमुदी
मुहूर्त्त गणपति	कोष और इतिहास॥	सुखसागर टेपका
सङ्ग्रह शिरोमणि	शिवसिंह सरोज	ब्रह्मसार
जातक चन्द्रिका	सामुद्रिक	परमार्त्थसार
लघु जातक भाषाटीका	गणित कामधेनु	प्रेमसागर
सहित	कमीशन बड़ोदा	सूरसागर
भाषाजातकालङ्कार	शब्दार्त्थकोष	रागप्रकाश
संस्कृत जातकालङ्कार	अमरकोष तीनों काण्ड-	भक्तमाल
जातकाभरण	भाषा टीका सहित	अवधयात्रा
मुहूर्त्त दीपक	अमरकोष प्रथम काण्ड	कथा गंगाजी
होरा मकरन्द	अनेकार्त्थ कोष	रामायण टेप की
मुहूर्त्तचिन्तामणि	ब्रजविलास	रामायण जिल्दबन्दी
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	दुर्गापाठ सटीक	रामायण तुलसीकृत प-
वैद्यक	दुर्गापाठ मूल	त्थर के छापे की
शार्ङ्गधर सटीक	अपराध भञ्जन स्तोत्र	सतसई रामायण
वैद्यजीवन	महिम्न स्तोत्र	कविता वली रामायण
वैद्यमनोत्सव	श्रीगोपाल सहस्रनाम	गीतावली रामायण
अमृतसार बड़ी	[illegible]	रामायण दोहावली

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् नवम्बर सन् १८७९ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
व्याकरण और ज्योतिष।	अमरविनोद	भगवद्गीता
सिद्धान्त चन्द्रिका	जगद्विनोद	भगवती गीता
लघुकौमुदी	औषधिसङ्ग्रह कल्पवल्ली	श्रीमद्भागवत सटीक
मुहूर्त्तचिन्तामणि सारिणी	निघण्ट भाषा	तथा दशम स्कन्ध
शीघ्रबोध	वैद्यदर्पण	हनुमान बाहुक
पाराशरी सटीक	रामविनोद	सांख्यतत्त्वकौमुदी
मुहूर्त्त गणपति	कोष और इतिहास॥	सुखसागर टेपका
सङ्ग्रह शिरोमणि	शिवसिंह सरोज	ब्रह्मसार
जातक चन्द्रिका	सामुद्रिक	परमार्त्थ सार
लघु जातक भाषाटीका	गणित कामधेनु	प्रेमसागर
सहित	कमीशन बड़ोदा	सूरसागर
भाषा जातकालङ्कार	शब्दार्त्थ कोष	रागप्रकाश
संस्कृत जातकालङ्कार	अमरकोष तीनों काण्ड-	भक्तमाल
जातकाभरण	भाषा टीका सहित	अवधयात्रा
मुहूर्त्त दीपक	अमरकोष प्रथम काण्ड	कथा गंगाजी
होरामकरन्द	अनेकार्त्थ कोष	रामायण टेपकी
मुहूर्त्तचिन्तामणि	ब्रजविलास	रामायण जिल्दबन्दी
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	दुर्गापाठ सटीक	रामायण तुलसीकृत प-
वैद्यक	दुर्गापाठ मूल	त्थर के छापे की
शार्ङ्गधर सटीक	अपराधभञ्जन स्तोत्र	सतसई रामायण
वैद्यजीवन	महिम्न स्तोत्र	कवितावली रामायण
वैद्यमनोत्सव	श्रीगोपाल सहस्रनाम	गीतावली रामायण
अमृतसार बड़ी	शिवार्च्चन [illegible]	रामायण दोहावली

स्त्री दर्पण ॥

जिसमें विद्यानुरागी लड़कियों और स्त्रियों का परमार्थ साधन और गृह कार्य्य की प्रवीणता और निपुणता और उत्तम वार्त्तालाप का वर्णन अति सरलता और सुगमता सहित किया गया है ॥

काश्मीरि पण्डित माधव प्रसाद साहब ऐक्स्ट्रासिस्टेन्ट कमिश्नर ज़िलअ सुल्तांपुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ

दूसरी बार

मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में मुद्रित हुआ ॥

अक्टूबर सन् १८७९ ई०

1879

भूमिका ॥
१

———o———

धन्य है उस परमेश्वर सर्व शक्ति प्रभु को जिसने अपनी इच्छा से इस संसार को प्रकट किया जिसको देख कर बड़े बड़े ज्ञानवान और ज्योतिषी और पण्डितों की बुद्धि इस संसार रूपी सागर की रचना में डूबती और उछलती है और बार बार पार नहीं पाती और यथार्थ में गुणानुवाद और प्रशंसा के योग्य वही परमात्मा है जिसकी माया के चरित्र अद्भुत और चित्र बिचित्र भासते हैं और बड़े २ बुद्धिमान उसके यश कीर्तन में नेति नेति पुकारते हैं यह जगत उसका प्रकाश और वही इसका प्रकाशक है उसने अपनी कृपा से कदाचित् जिसके हृदय में सूर्य्य रूपी ज्ञान उदय कर दिया उसको तो निःसन्देह इस प्रकाशका चमत्कार ऐसे माया रूपीअन्धकार में सुझाई दिया नहीं तो बहुतों ने इसमें खोज किया परन्तु आदि अन्त न पाया उसकी लीला की गति अपरम्पार है वही सब का कर्ता है अब हमको भी उचित है कि अपने परमात्मा परमधाम के चरण कमल में शीस नवावें और मन बच कर्म से ज्ञान रूपी ज्योति के प्रकाश होने का अपने हृदय में उससे कांक्षा करें कि वही सब जगत के मनुष्यों का अज्ञान रूपी सागर से बेड़ा पार करेगा लिखनेको प्रयोजन इस पुस्तक के और कारण इस कहनावत के कहनेका यह है कि इन दिनों में गवर्नमेण्ट इण्डिया की अभिलाषा इस बात पर विशेष करके है कि स्त्रियों को भी लिखना पढ़ना सिखलाना और सुहाग बुद्धिसे शृंगार देना चाहिये और मेरी बुद्धि में भी स्त्रियों के पढ़ाने लिखाने की आवश्यकता इसलिये विशेष है कि वे अपने धर्म कर्म की बातों से जानकारी प्राप्त कर घरका बंदोबस्त अच्छे प्रकार से कर सकें और नन्हे नन्हे बच्चे जब तक कि पाठशाला नहीं जा सकें उनको बातों बातों में लिखने पढ़ने की बातें सिखा सकें कि उस से उन बच्चों को पढ़ने के समयमें बहुत लाभ हो परन्तु बहुत से मनुष्य हमारे देश के स्त्रियों का पढ़ना उत्तम नहीं समझते विद्या ऐसे पदार्थ का स्त्रियों को प्राप्त होने में अच्छा नहीं जानते इस जगह उनके संदेह व शंका का खण्डन करना नहीं चाहता परन्तु मैं उनसे यह कहूंगा कि वे प्राचीन कालका वृत्तान्त पुस्तकों से देख लें कि जब हिन्दुओं का राज्य था स्त्रियों के पढ़ने लिखने की कितनी चर्चा थी कि गान्धारीजी जो राजाधृतराष्ट्र की रानी और कौरवों की माता थी लिखने पढ़ने में बड़ी प्रवीण थीं व्यासजी ऐसे ऋषि उससे सम्मति लेते थे अखीर समय में राजा भोज की रानी लीलावती बड़ी पण्डिता हुई जिसका भोजप्रबन्ध में विस्तार सहित वृत्तान्त

लखा है प्रयोजन यह है कि अगले समय में बहुत पढ़ी लिखी स्त्रियां होंगई कि जिनका वृत्तान्त जो लिखा जाय तो एक जुदी पोथी बनजाय कई वर्ष हुये कि मैंने एक पुस्तक उर्दू भाषा में देखी जो किसी मुसल्मान डिपुटी कलक्टर ने लड़कियों के शिक्षा के हेतु बनाई थी उस पुस्तकके देखनेसे मुझको प्रकट हुआ कि यह पुस्तक इस प्रकार की बनी है कि कदाचित्स्त्री अथवा पुरुष उसको देखें तो अलबत्ता जाने कि स्त्रियों का पढ़ना कितना अवश्य है और पढ़ी लिखी स्त्री किसतरह अच्छे प्रकार से घरका बन्दोबस्त कर सक्ती है परन्तु वह पुस्तक जो कि उर्दू में है और बोल चाल और सब बातें उसकी मुसल्मान औरतों की हैं इसलिये मैंने सोचा कि जो इसी ढंग पर नागरी भाषा में ऐसी पुस्तक लिखी जाय जिसमें हिन्दुओं की लड़कियों का वृत्तान्त हो और सब बात चीत हिन्दुओं के अनुसार हो कि उत्तम घराने में बहुधा लड़कियां नागरी पढ़ी हुई होतीहैं तो ऐसी पुस्तक के पढ़ने से अत्यन्त उनको लाभ और निर्मल बुद्धि प्राप्त होगी जिससे अनेक प्रकार का सुख भोग करेंगी धन्य है उस परमात्माको कि जिसने यह अभिलाषा मेरी पूर्ण की और यह पुस्तक समाप्त हुई नाम इसका मैंने स्त्री दर्पण रक्खा ॥

स्त्री दर्पण ॥

—·※·—

जो मनुष्य जगतकी व्यवस्थापर कभी विचार नहीं करता उससे अधिक कोई बुद्धिहीन नहीं है विचार करने के लिये सृष्टि में अनेक प्रकार की बातें हैं परन्तु सब से उत्तम और अवश्य मनुष्य की दशा है विचार करना चाहिये कि जिस दिनसे मनुष्य उत्पन्न होता है जन्मसे मरण काल तक उसको क्या २ बाधा आगे आती हैं और किस प्रकार उसकी दशा बदला करती है मनुष्य की अवस्था में सब से अच्छा समय लड़कपन का है इस अवस्था में मनुष्य को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती माता पिता अति प्रेम से पालते हैं और यथा शक्ति उसको सुख देते हैं सन्तान के अच्छे भोजन और वस्त्र से माता पिताको आनन्द होताहै बल्कि मा बाप सन्तान के सुख के कारण अपने ऊपर बड़े २ क्लेश उठाते हैं जो पिता होते हैं मजदूरी मेहनत से कमाते हैं कोई उद्यम करते हैं कोई व्योपार कोई नौकरी ग़र्ज़ जिस प्रकार से बन पड़ता है सन्तान के सुख के हेतु धन पैदा करते हैं और जो माता होती है अगर बाप की कमाई घरके खर्चको अट नहीं सक्ती किसी काल में द्रव्य के हेतु आप भी मेहनत किया करती हैं कोई माता सिलाई करती है कोई गोटा बिनती है कोई टोपियां काढ़तीहै यहां तक कोई दुखकी मारी माता चर्खा कातकर चक्की पीसकर अपने बच्चों को पालती है सन्तानकी ममता जो मा बाप को होती है बनावट और दिखावट की नहीं होती बल्कि सच्ची और अंतःकरण का स्नेह है परमेश्वर ने सन्तान की ममता माता पिता को इस कारण लगादी है

कि उनका प्रति पालन होय बाल अवस्था में बच्चे निहायत बेबस होते हैं न बोलते न समझते न चलते न फिरते अगर मा बाप प्रीति से पुत्र को न पालते तो बच्चे भूखों मरजाते कहां से उनको रोटी मिलती कहां से कपड़ा लाते और किस प्रकार बड़े होते मनुष्य पर तो क्या पशु पक्षियों में भी बच्चे की ममता बहुत है मुर्ग़ी बच्चे को किस प्रकार से पालती है दिनभर उनको पंखों में छिपाये बैठी रहती है और एक दाना भी अनाज का जो उसको मिलता है तो आप नहीं खाती बच्चों को बुलाकर चोंच से उनके आगे धर देती है अगर चील्ह या बिल्ली उसके बच्चों को मारना चाहे तो अपने जीव का सोच न करके लड़ने और मरने को तैयार हो जाती है ग़रज़ यह छोह और प्रीति मा बापको इसी-लिये परमेश्वर ने दीहै कि छोटे से नन्हे २ बालकों को जो इच्छा हो अटकी न रहे क्षुधा के समय भोजन और प्यास के समय पानी सर्दी से बचने को ऊनी कपड़ा और अनेक प्रकार की सुख की वस्तु समय पर मिलजावें देखने से यह बात मालूम होती है कि यह निर्मल प्रीति उसी समय तक रहती है जब तक बच्चों को ज़रूरत और एहतियाज होती है जब मुर्ग़ी के बच्चे बड़े होजाते हैं वह उनको परों में छिपाना छोड़ देती है और जब बच्चे चल फिरके अपना पेट आप भर लेने के योग्य होजाते हैं मुर्ग़ी कुछ भी उनकी सहायता नहीं करती बल्कि जब बड़े होजाते हैं इस प्रकार मारने लगती है कि मानो वह उनकी माता नहीं है मनुष्य के माता पिता का भी यही हाल है जब तक बालक बहुत छोटा है माता दूध पिलाती है और उसको गोद में उठाये फिरती है अपनी नींद हराम करके बच्चे को थपक २ कर सुलाती है जब बालक इतना सयाना हुआ कि वह खिचरी दाल चावल खाने लगा मा दूध बिल्कुल छुड़ादेती है और वही दूध जिसको बर्षों दुलार से पिलाती रही कठोरताई और कठिनाई से नहीं पीने देती कड़ई वस्तु थनों पर लगा

लेती है और बालक हठ करता है तो मारती और घुड़कती है कुछ दिनों पीछे बच्चोंका यह हाल होजाता है कि गोदमें लेना तक नागवार होता है क्या हमने अपने छोटे भाई बहिन को इस बात पर मारखाते नहीं देखा कि मा के गोद से नहीं उतरते हैं और माता रिस करती है कि कैसा कपूत लड़का है कि एक चणमात्र को गोद से नहीं उतरता इन बातों से यह मत समझो कि माको प्रीति नहीं रही बल्कि हर एक अवस्था के साथ एक नये प्रकार की प्रीति होती है सन्तान की दशा एकसी नहीं रहती आज दूध पीते हैं फिर खाने लगे फिर पांओं चलना सीखा जितना बड़ा बच्चा होता गया उसी प्रकार प्रीति का रंग बदलता गया लड़के और लड़कियां पढ़ने लिखने के लिये कैसी २ मारें खाते हैं अगर ना समझी से बच्चे न समझें परन्तु मा बाप के हाथों से जो क्लेश कि तुमको पहुंचे वह अवश्य तुम्हारे अर्थ के लिये हैं तुम को संसार में माता पिता से अलग रह कर बहुत दिनों जीना पड़ेगा किसी के मा बाप जन्म भर जीते नहीं रहते अहो भाग्य है उन लड़के और लड़कियों के जिन्होंने मा बापके जीतेजी ऐसा हुनर और अदब सीखा जिस से उनके जन्म भर सुख चैन में गुजरे और बड़े निकृष्ट भाग्य हैं वह लड़के या लड़कियां जिसने माता पिता के जीनेकी क़दर न की और खुद मा बापके कारण मिला उसको अकार्थ किया और ऐसी अच्छे सावकाश और निश्चिन्त के समय को आलस्य और खेल कूद में खो दिया और जन्म भर दुख और क्लेश में काटा आप दुःख में रहे और माता पिता को भी अपने कारण क्लेश में रक्खा मरने पर कुछ अवश्य नहीं शादी ब्याह हुये पीछे औलाद मा बाप से जीते जी छूट जाते हैं जब औलाद जवान होती है मा बाप वृद्ध होजाते हैं और आप पुत्र के आधीन होजाते हैं और इसी से जवान हुये पीछे पुत्र को माता पिता से सहायता नहीं मिल सकी बल्कि पुत्रही को माता पिता की

सेवा करनीपड़ती है पुत्र और पुत्रियों को उस समयपर बड़ा विचार करना चाहिये कि मा बापसे अलग हुये पीछे उनकी अवस्था किस प्रकार बीतेगी संसारमें बहुत भारी बोझा पुरुषों के शिरपर है संसार में खाना कपड़ा और नित्य के खर्च की सब वस्तु द्रव्य से मिलती है और सब खटराग द्रव्यका है स्त्रियों को बड़े आनन्दकी बात है कि बहुधा कमाने और द्रव्यके पैदाकरने के लिये उनको कुछभी परिश्रम नहीं करना पड़ता देखो पुरुष उद्यम के लिये कैसे २ कठिन परिश्रम करते हैं कोई भारी भार शिर पर उठाता है कोई लकड़ी ढोता है सुनार, लुहार, ठठेरा, कसेरा, कंदलागर, जरकोब, तारकश, मुलम्मासाज़, सलमा सितारे वाला, बिदुर साज़, मीना साज़, क़लईगर, आईना साज़, जरदोज़, मनिहार, नालबन्द, नगीना बनाने वाला, कामदानी वाला, सानगर, नियारिया, बढ़ई, खरादी, नारियल वाला, कंघी बनाने वाला, नसफोड़, कागज़ी, जुलाहा, रफ़ूगर, रंगरेज़, छीपी, दस्तारबंद, दर्ज़ी, नैचाबंद, मोची, मुहरकन, संगतराश, ख्यामार, कुम्हार, हलवाई, तेली, तमोली, गन्धी वग़ैरह, जितने उद्यम वाले हैं सबके कामों में बराबर का क्लेश है और यह क्लेश द्रव्य के हेतु पुरुष सहते और उठाते हैं परंतु इस बातसे यह नहीं समझना चाहिये कि स्त्रियों को सिवाय खाने और पीने और सो रहने के कोई कार्य्य संसार का ताल्लुक़ नहीं है बल्कि गृहस्थी के बहुत कार्य स्त्रियां करती हैं पुरुष अपनी कमाई स्त्रियों के आगे लाकर धर देते हैं स्त्रियां अपनी बुद्धि से उस को ऐसे यत्न और सुघरई के साथ उठाती हैं कि सुख के सिवाय इज़्ज़त और नाम पर दाग़ लगने नहीं पाता पस अगर विचार से देखो तो संसार रूपी गाड़ी जब तक एक पहिया पुरुष और दूसरा पहिया स्त्रीका नहो चल नहीं सक्ती पुरुषको द्रव्य की कमाई से इतना समय नहीं बचता कि उसको घरके छोटे छोटे कार्यों में लगावें। ऐ लड़को, यह बात सीखो कि पुरुष

होने पर तुम्हारे काम आवे। और ऐ लड़कियो, वह गुणप्राप्त करो कि स्त्री होने पर तुमको उससे आनन्द और स्वार्थ प्राप्त हो अगर्चे इसमें संदेह नहीं है कि स्त्रीको परमेश्वरने पुरुष से किसी क़दर निर्बल पैदाकियाहै परंतु हाथपांव कान आंख बुद्धि समझ याद सब मनुष्य के बराबर स्त्री को दिये हैं लड़के इन्हीं वस्तुवोंसे काम ले कर मुंशी पण्डित आचार्य बैद्य कारीगर दस्तकार हर इल्म में होशियार और सब हुनरमें चतुर होजाते हैं लड़कियां अपना समय गुड़ियां खेलने और कहानी सुननेमें खोकर बेहुनर रहतीहैं जिन स्त्रियोंने समयकी क़दर पहचानी और उसको कामकी बातोंमें लगाया वह पुरुषोंकी तरह संसारमें मशहूर हुईहैं जैसे मैत्रेयी व गांधारी व लीलावती वग़ैरह या इनदिनोंमें अंगरेजोंकी शाहजादी श्रीमहारानी विक्टोरिया यह वह स्त्रियांहैं जिन्हों ने एक छोटेसे घर और कुनबे का नहीं बल्कि एकदेश और जगत् का बन्दोबस्त किया बाज़ अज्ञान स्त्रियां शोच करती हैं कि बहुत पढ़कर क्या पुरुषोंके समान मुंशी और पण्डित होनाहै फिर क्लेश करने से क्या प्रयोजन परंतु जो कोई स्त्री विशेष पढ़ गई है तो निस्संदेह उसने विशेष स्वार्थ और परमार्थ भी प्राप्त कियाहै हम इसबातसे इन्कार नहीं करते कि विशेष विद्या स्त्रियोंको पढ़ना अवश्य नहीं परंतु जितना अवश्यहै उसको कितनी स्त्रियां हासिल करतीहैं कमसे कम उर्दू या नागरी भाषापढ़ना अवश्य है अगर इतना नहीं है तो विशेषहर्ज होताहै यह अपनेकी बात दूसरे पर प्रकटकरना पड़तीहै या उसको छिपानेसे हानि होती है स्त्रियों की बातें बहुधा लज्जा और पर्देकी होती हैं परंतु अपनी माता और भगिनीसे कभी उनको जाहिरकर ने की जरूरत होतीहै संयोगसे समय पर मा बहिनपास नहीं आतीं ऐसी जगह पर लज्जाको छोड़कर कहनाही पड़ताहै नहीं तो कार्य्य हानि होताहै लिखना पढ़नेसे कठिनहै परंतु अगर कोई मनुष्य किसी पुस्तकसे चारसतर रोज नक़लकिया करे और इसीक़दर अपने दिलसे बनाकर लिखाकरे और इस-

लाह लिया करे ते। जरूर थे।ड़े दिनों में वह लिखना सीख जायगा अच्छे अक्षर लिखनेसे कुछ प्रयोजन नहीं लिखना एक ङ्गनरहै जो जरूरतके समय बङ्गतकाम आताहै अगर अशुद्ध हे। या अक्षर बदसूरत औ। ना दुरुस्त लिखे जांय ते। बेदिल हे।कर मश्क़को छोड़ मतदो के।ई कार्य्य हो। प्रथम अच्छा नहीं ङ्गआ करता अगर कैसे बड़े पण्डितके। एकटोपी कतरने और सीने के। देव जिसने कभी न कतरी और सीं हे। अवश्य वह टोपी के। खराब करेगा चलना फिरना जो तुमको अब ऐसा सहजहै कि बेपरिश्रमकरे दौड़ते फिरतेहै। तुमको कदाचित् याद न रहा हे। कि तुमने किस क्रमसे सीखा परंतु तुम्हारे माता पिता और बड़ोंको अच्छेप्रकारसे याद है पहिले तुमको वेसहारे बैठना नहीं आता था जब तुमको गोदसे उतारकर नीचे बैठाते थे एक आदमी पकड़े रहता था या तकिये का सहारा लगादेते थे फिर तुमने गिर पड़कर घुटनोंचलना सीखा फिर खड़ाहे।ना फिर चारपाई पकड़कर फिर जब तुम्हारे पांव अधिक मजबूत हे।गये ते। धीरे धीरे चलना आगया परंतु सैकड़ों बेर तुम्हारे चे।टलगी और हमने तुमको गिरते सुना अब वही तुमहे। कि परमेश्वरकी कृपासे दौड़ २ फिरते है। इसी प्रकार एक दिन लिखना भी आ जायगा और माना अगर लड़कों की तरह लिखना भी न आया तौ भी बक़द्र जरूरत ते। जरूर आ जायगा और यह बात ते। न रहेगी कि धे।बिनके कपड़ों और पिसनहरी कि पिसाईके। याद रखनेके हेतु दीवार पर लकीरें खींचती फिरे। या कङ्कड़ पत्थर जोड़कर रक्खो घरका हिसाब किताब लेना देना जबानी याद रखना बङ्गत कठिनहै बाज मनुष्योंकी प्रकृति हे।तीहै कि जो रुपया घरमें दिया करतेहैं उसका हिसाब पूछा करतेहैं अगर जबानी याद नहीं है ते। मनुष्यके। शङ्का हे।तीहै कि यह रुपया कहां खर्चङ्गआ और इनमें बे प्रयोजन का विरुद्ध औ लो■ प्रकट हे।ताहै अगर स्त्रियां इतना लिखनाभी सीखलिया करें कि अपने समझके वास्ते अवश्यहे। ते। कैसी उत्तम बात

है लिखने पढ़ने के सिवाय सीना परोना रसोई बनाना ए दो गुण सब लड़कियों को सीखने जरूर हैं किसी मनुष्यको यह मालूम नहींहै कि उसको क्या संयोग आगे आवैगा बड़े अमीर और बड़े धनाढ्य क्षणमात्रमें गरीब व कंगाल होजातेहैं अगर कोई गुण हाथमें पड़ा होताहै तो जरूरतके समय काम में आताहै यह एक प्रकट बातहै कि पिछले जमानेके राजा महाराजा बावजूद सम्पत्ति और राज्यके अवश्यकरके कोईगुण सीखरक्खा करते थे कि आपत्तिकाल में कामआवे चेतकरो कि संसारकी कोईअवस्था भरोसेके योग्यनहींहै अगर तुमको इस समय सुख और सम्पत्ति प्राप्त है तो परमेश्वर की विनती करो कि उसने अपनी कृपासे तुम्हारे घरमें सुख व सम्पति दिया है परन्तु यह उचित नहीं है कि तुम इस सुखका आदर न करो या आगेके लिये भरोसा करलो कि यही सुख तुमको सदा रहेगा सुखके दिनों में स्वभावों का ठीक रखना अवश्यहै अगर्चि परमेश्वर ने तुमको चाकर नौकर भी दिये हों परन्तु तुमको अपनी प्रकृति नहीं बिगाड़नी चाहिये कदाचित् अपने को यह सामर्थ्य न रहै तो यह स्वभाव बहुत क्लेश देगा आप उठकर पानी न पीना या छोटे २ कार्यों में सेवकों या छोटे भाई बहिनोंको क्लेश देना उचित नहींहै स्वभावके बिगाड़ने का यही चिन्ह है तुमको अपना सब काम आप करना चाहिये बल्कि तुम घरके बहुतकाम आप करसक्तीहो और अगर तुम थोड़ासा परिश्रम भी अंगीकार करो तो अपनी माताको बहुत कुछ सहायतादे सक्तीहो खूबविचार करके अपनाकाम कोई ऐसा मतछोड़ो जिसको माता अपने हाथोंकरे या दूसरों को उसके हेतु बुलाती और क्लेश देती फिरे ऐ मेरी दुलारी लड़कियो रातको जब सोने लगो अपना बिछौना अपने हाथ से बिछालिया करो और सबेरे उठकर आप तह करके यत्नसे अच्छी जगह रखदिया करो अपने कपड़ोंकी गठरी इसतरह पर रक्खो कि जब कपड़ेको बदलने की इच्छा हो अपने हाथ से फटा उधरा दुरुस्त करके पहिनलिया और मैले वस्त्रों को

इसप्रकारसे रक्खो कि जबतक धोबिन कपड़े लेनेआवे अलग खूंटी पर लटका रक्खो अगर मैले कपड़े खूंटी पर उठा न रक्खोगी कदाचित् चूहे काटडालें या पड़े पड़े अधिक मैले हों कि धोबिन उसको अच्छे प्रकार निर्मल न कर सके या शायद पृथ्वीकी सर्दी और पसीनेकी तरीसेउसमें दीमकलग-जावे फिर धोबिन को अपने मैले कपड़ा आप देखकर दिया करो और जब धोकरलावे आप देखलियाकरो कदाचित् कोई वस्त्र कम न करलाईहो या कहींसे फाड़ न दियाहो या कहीं दाग़ न रह गयेहों इसी प्रकार जब तुम अपने कपड़ोंकी खबर रक्खोगी तुम्हारे कपड़े खूब साफ़ धुलाकरेंगे और कोई कपड़ा न खोवेगा जो भूषण तुम पहने रहतीहो बड़े दामोंकी चीज़ है चार घड़ी दिन रहे और जब सोकर उठो चेतकर लिया करो कि सबहैं या नहीं बहुधा बेसुध लड़कियां खेल कूदमें गहना गिरा देती हैं गहना गिरने के कई दिन पीछे उनको मालूम होताहै कि बालीगिरगई,छल्ला निकलपड़ा जबघरमें कई बेर झाड़ू दीगई क्या मालूमतनिकसी चीज कहांगई या किसीजगह मिट्टीमें दब गई तब ना समझ लड़कियां गहने के वास्ते रोतीहैं और सारेघरको ढूंढ ढांढमें हैरान कर डा-लतीहैं और जब माता पिता को मालूम होताहै कि यह ल-ड़की गहनेको सम्हालके नहीं रखतीहै और खो २ देतीहै तो देभी गहनाके पहलने में शोच विचार करने लगते हैं तुमको सदा ध्यानरखना चाहिये कि घरकेकामों में कौनकार्य तुम्हारे करने का है निस्संदेह जो छोटे भाई और बहिन रोते और हठकरतेहैं तुम उनको सम्हालसक्तीहो कि वह माको क्लेश न दें मुह धुलाना उनके खाने और पीनेकी खबररखना यहसब काम अगर तुमचाहो तो करसक्ती हो परन्तु अगर तुमअपने भाई बहिनोंसे लड़ो और हठकरो तो तुमआपअपनी इज्ज़त खोतीहो और माको क्लेश देतीहो वह घरका कामदेखेया तुम्हारे मुक़द्दमे का न्याय कियाकरे रसोई जो घरमें बनती है उसको इसहेतुसे नहीं देखना चाहिये कि कब बनचुकेगी

और कबमिलेगी घरमें जो कुत्ता बिल्ली या दूसरे जीव पलेहैं वह अगर उदरभरने की कांक्षा से भोजन के आसरेपर बैठे रहें तो हरनहीं परन्तु तुमको हरबातमें बिचार करना चाहिये तरकारी किसप्रकार भूनीजातीहै नमक किसअंदाजसे डालतेहैं अगर हरएक भोजनको अच्छे बिचारसे देखाकरो तो निश्चयहै कि थोड़े दिनोंमें तुम भोजन बनाना सीखजावोगी जो लड़कियां रसोई बनाना नहीं जानतीतो मा बापको तथा लोगों से बुरा कहलवाती है रोजमर्रे की रसोई के सिवाय अच्छे प्रकार के भोजनों के बनाने की रीति भी तुमको सीख लेनाचाहिये आयेगये की मेहमानीमें सदा भांति भांति की अच्छी रसोई बनानी पड़तीहै पुलाव मीठेचावल, ज़र्दा, तस्मई, कढ़ी, मुरब्बा, चटनी, दहीबड़ा, सब मजेदार खानेहैं हरएक के बनानेकी युक्ति याद रखनी चाहिये ब्योंतना बस्त्रका अलबत्ता बुद्धिकी बातहै मनलगाकर उसको जानलेना वाजिब है हमने बहुतनिर्बुद्धि स्त्रियों को देखाहैं कि अपने वस्त्र दूसरी स्त्रियोंके पास ब्योंताने के हेतु लियेलिये फिरा करती हैं और उनको थोड़ीसी बातकेलिये बहुतसी चिरौरीकरनी पड़ती है अंगरखा ब्योंतना कुछ कठिन नहीं है जो तुम अपने भाइयों के अंगरखे ब्योंताकरो तो अंगरखाकी ब्योंत समझमें आजावैगी लड़कियां लज्जा की मारी मुंहसे नकहें परन्तु मन में अवश्य जानतीहैं कि कुआंरपनके थोड़े दिन और हैं आखिर ब्याही जावेंगी ब्याहेपीछे नयेप्रकारकी जिंदगी करनीपड़ेगी जैसा कि तुम माता और नानी और मौसी और कुटुम्ब की सब स्त्रियोंको देखतीहो क्वारपनेका समय तो बहुतथोड़ाहै और उससमयका बहुतबड़ा भाग अज्ञानतामें व्यतीत होजाताहै वह अवस्था पहाड़की नाईं तो आगे आरहीहै जो भांति २ के झगड़े और अनेकप्रकारके बखेड़े से भरीहुईहै और बिचार करो कि तुमकोई अनोखीलड़की तोहो नहीं ब्याहेपीछे तुम को कुछ और भागलगजावेगी जो संसार की बहू बेटियों को आगेआतीहै वह तुमकोभी आगेआवेगी पसशोचनाचाहिये

कि स्त्रियां किसप्रकार अपनी ज़िंदगी पूरी करती हैं ब्याहे पीछे कैसे उनकी इज़्ज़तहोतीहै पुरुषकैसा आदर किसप्रकार उनका सनमान करतेहैं खास लोगों की दशा परनजर मत करो बाज़ीजगह संयोगसे अधिकसिखापढ़ा स्त्री पुरुषपर बलवानहोगी और जहां ज्यादा लड़ाई झगड़ा हुआ स्त्री का मान घटगया यह तो बातही अलग है जगत के दस्तूर और रवाजको देखोतो दस्तूरकेमाफ़िक हमतो स्त्रियोंकी कुछइज़्ज़त नहीं देखते बुद्धिहीन उनको कहते हैं त्रिया हठ और त्रिया चरित्र पुरुषों के जबानपर है स्त्रियों की छल छिद्रमें बहुतसी पुस्तकें लिखीहुईहैं गृहस्थीके बरतावमें देखो तो घरके टहल के सिवायसंसारका कोईअच्छाकार्य्य भी स्त्रियोंसे लियाजाता है या किसी अच्छे २ कामकी सलाह भी उनसे पूछीजातीहै जिनघरों में स्त्रियोंका आदरभाव है वहां भी जब स्त्रियों से पूछाजाताहै तो यहीकि क्योंबीबी आज क्या तरकारीबनैगी लड़केके वास्तेटाटबाफ़ी जूते मंगाओगी या डेढ़ हाशिये की कालियां मानिकचन्दीलेवगी या जहाजी रजाईको कद्दू गोट लगेगी या सुरमई ऐसीबातोंकेसिवाय कोईस्त्री यहतो बताओ कि कभी पुरुषोंने उनसे बड़ी २ बातोंमें सलाहलियाहै कोई बड़ाकाम उनके अख्तियारमें छोड़दियाहै पस ऐ स्त्रियो क्या तुमने ऐसे बुरेहालोंको जोनकभी नाखुश नहींआता और क्या तुम्हारा जी नहींचाहता कि पुरुषोंके दानिस्तमें तुम्हारीइज़्ज़त हो तुमने अपने हाथों अपना आदर खो रक्खा है और अपने कारण नज़रोंसेगिरीहुईहो तुमको ढंगहोतो पुरुषोंको कहां तक ख्याल न होगा कठिनतोयहहै कि तरकारी रोटी दाल पकालेने औरफटापुराना सीलेनेको ढंग समझतीहो सोफिर जैसाढंगहै वैसाहीतुम्हारा आदरभावहै ऐसी दशापर अगर संसारभर की बदनामी तुम पर लगाई जाय तो उचित और दुनियां भर की बुराइयां तुम पर लगाई जांय तो सच है ऐ स्त्रियो तुम पुरुषों के मनका बहलाव उनके जीवन सुखका कारण और आनन्दको विशेष करनेवाली और उनके क्लेशको

भुलाने वालीहो जो तुमसे पुरुषोंको बड़े कामों में सहायता मिले और तुमको बड़े कामोंके बन्दोबस्त करनेका ढंगहोते। पुरुष तुम्हारे पांव धोधोके पियाकरें और तुमकोअपना सिर-ताज बनाकर रक्खें तुमसे बेहतर उनका दुःख भुलाने वाला तुमसे अच्छा उनकासलाहकार तुमसे ज्यादा उनका भलाई चाहने वाला और कौन है परंतु बड़े कामों का ढंग तुमको प्राप्त क्योंकरहो घरके चार दीवारीमें तो तुम कैदहो किसी से मिलनेकी तुमनहीं किसीसे बातकरनेकी तुमनहीं गुण या ढंग आदमी २ से सीखता है पुरुष लोग पढ़ लिखकर चतुर और गुणीहोजातेहैं और जो लिखेपढ़े नहीं वह भी हजारों प्रकारके लोगों से मिलते दशसे दशप्रकार की बातें सुनते हैं इस परदेसे तो तुमको छुटकारे की आसनहीं हमारे देशके चालचलनने परदेमें रहना स्त्रियोंका अवशकर दियाहै फिर सिवाय पढ़नेलिखनेके और क्यातदबीरहै कि जिससे तुम्हारी बुद्धिको प्रकाशहो बल्कि पुरुषों से स्त्रियोंको पढ़ने लिखने की अधिक आवश्यकता है पुरुष तो बाहर के चलने फिरने वाले ठहरे लोगों से मिलचुल कर बहुत बातें सीखलेंगे तुम घरमें बैठे क्या करोगी क्या सीने की पिटारी से बुद्धि की पुड़ियां निकालोगी या अनाजकी कोठरीसे ढंगकीबातें सीखजावोगी पढ़नासीखो कि परदेमें बैठीहुई तमाम संसारकी सैरकर-लियाकरोविद्या प्राप्तकरो कि अपने घरमें दुनियांभरकीबातें तुमको मालूमहुआकरें और स्त्रियोंको अपने संतानके सिख-लाने के हेतु पढ़ना अति विशेष है लड़कियां तो ब्याह तक और लड़के भी दशवर्ष की अवस्थातक बहुधा घरों में रहते हैं और माओं का स्वभाव उनमें असरकर जाता है पस ए स्त्रियो संतानकी अगली बयस तुम्हारे आधीन है तुमचाहो तो वैसे उनके मनोंमें बहादुरादे और ऊंचे ख्यालभरदो कि वह बड़ेहोकर नाम नामूद पैदाकरें और जन्मभर सुखसेरहें और चाहो तो उनका ऐसास्वभाव बिगाड़देव कि ज्योंज्यों बड़ेहों खराबीके लक्षण सीखलेजायें और अन्ततक उस अर्थ

का पछताव कियाकरैं बालकोंको तो जब बोलना आया तब लिखने पढ़नेका ज्ञान भी होसक्ता है अगर माओं को ढंग हो तो उसी समय से बच्चोंको सिखलाती जावें मकतब या मदर्से भेजने के आसरे में लड़कोंके कई वर्ष अकारथ जाते हैं बहुत छोटी अवस्थामें न तो बच्चों को आप से पाठशाला जाने की इच्छा होती है न माता पिताकी प्रीति यह बात चाहती है कि नन्हे २ बच्चे जो अभी अपनेकाम आपनहीं करसक्ते गुरू के बन्धन में रक्खे जावें परन्तु माता जो चाहे उसी समय में उनको बहुत कुछ सिखा पढ़ासक्ती है लड़के पाठशालामें बैठने के पीछे भी बहुतदिनोंतक बेदिलीसे पढ़ाकरते हैं और बहुत दिनोंमें उनकी इस्तादाद बढ़ती है पर इस सबसमयमें उनको माओंसे बहुतसहायता मिलसक्ती है पहिले तो माता कीसी प्रीति व स्नेहकहां दूसरे रातदिनका बराबररहना जबआगे देखा झट कोई अक्षर पहचनवा दिया कोई गिनतीही याद करादी कहीं पूर्व पश्चिमकी पहचानबतादी मातातो बातों२ में वह सिखा सक्ती है जोगुरूवर्षोंके सिखलानेसे नहींसिखला सक्ता और माताको सिखलानेमें यह एक कितना अच्छापन है कि लड़कोंके चित्तको घबराहट नहीं होनेपाती औ संतान की तह जीव उनके पालनेकी तदबीर उनके प्राण की रक्षा माताके आधीन है अगर माता को इस ढंगमें कमी है तो संतानके जीवका संदेह है ऐसा कौन अभागीहोगा जिसको माताकी प्रीतिसे इन्कारहो परंतु वही प्रीति जो अज्ञानता के साथबरतीजाय तो मुम्किन है कि बजाय लाभ के उलटी हानिहोवे क्याहजारों कुबुद्धि माता ऐसी नहींहैं जोसंतान की हरएकमर्जको नजरगुजर औरपरछावां औरझपेटा और आसेब समुझकर बजायदवाके झाड़फूंक उतारा नहींकरती अयोग्य यत्नका गुणतुम्ही समझलो क्याहोता होगा प्रयोजन यहहै कि सबघरकी दुरुस्ती समझपर और समझकी दुरुस्ती विद्यापर है तुमको एक अच्छी कहानी सुनाते हैं जिससे तुम को मालमहोगा कि बेसमझीसे क्या क्लेश पहुंचताहै कहानी

परमेश्वरकी एककमसमझ लड़कीका व्याह होगया था उसने अपनी अज्ञानतासे वर्ष दोवर्षभी ससुरालमें निबाहन किया व्याहके चौथे पांचवेंमहीने पतिपर तकाज़ाकरना शुरूकिया कि गोहमारागुज़ारा तुम्हारेमांबहिनोंमें नहीं होता हमको अलग मकानलेदो उसनेकहा जितने तुम्हारे झगड़े अपनेमा बहिनोंके साथसुनतारहाहूं उनसबमें तुम्हाराअपराधहै टोले महल्लेमेंजो आदमीछोटीजातकेरहतेहैं तुमकोउन्हींलड़कियों कोबहिनबनारक्खाहैरातदिनभोंदूकुंजड़ेकीबेटीचुनिया और बखुशगंधी वालेकी लड़की जुलफ़न और प्रयाग अगरहरीकी बेटी सुखिया तुम्हारेपास घुसी रहाकरतीहैं और तुमकोइस बातका कुछ ध्याननहीं कि येलोग न तुम्हारी बिरादरीहैं न भाईबन्धु न ऐसी तुम्हारी मुलाक़ात न राहवरस्म प्रीतित-मामहल्लेमें चर्चा होरहीहै कि कैसी बहू आई है जबदेखो ऐसीलड़कियां उसकेपास बैठीरहतीहैं आख़िरमहल्लेमें लाला प्रयागलाल और हीरालाल और पण्डित गनेशदत्त यह लोग भी तो रहतेहैं और इनकीबहू बेटीहमारेघरमें आतीजाती हैं तुमकिसीसे बातभी नहींकरती अगर हमारी माताने तु-मको कमीना और बेइज़्ज़त लड़कियोंसे मिलने को मनाकिया तोक्या बुराकिया उसनासमझ बीबीनेजवाबदिया कि प्रीति सेहदिलके मिलनेपरहै हमारेमैकेके पड़ोसमें एक बाहूमनि-हार रहताथा पन्नो उसकी बेटी हमारी सहेलीथी जब हम छोटीथीं उसके संग खेला करती थीं दो गुड़ियों का ब्याहभी हमनेपन्नोंके साथकियाथा पन्नों बिचारी बहुत ग़रीबथी हम अपनीमातासे चुराकर उसकोबहुत बस्तुदिया करतीथींमाता ने बहुतेरा मनाकिया परन्तु हमने पन्नोंका मिलना न छोड़ा पतिने कहा तुमने झखमारा यह सुनकर वह अज्ञानी बीबी मियांसे बोलीदेखो परमेश्वरकीसौगन्ध मैंने कहदियाहै मुझ से जबानसम्हालकर बोलाकरोनहींतो पीट २ कर अपनाखून कर डालोंगी यहकहकर रोनेलगी और माता पिताको को-सनाशुरूकिया कि अबपरमेश्वर इसमांबापका बराहो कि

कैसी कमबख़ती में मुझको ढकेलदिया है मुझको अकेला पाकर सबने सताना शुरू किया है परमेश्वर मैं मरजाऊं मेरीरघी निकले और क्रोधके मारे पानखानेकी पिटारी जो चारपाई पररक्खी थी लातमारकर गिरादी तमाम कत्था चूना तोशक पर गिरपड़ा जनीदरेशका लिहाफ़पांयते तह कियारक्खा था चूनेके लगतेही उसकातमामरंग कटगया पिटारीकेगिरनेका धमका सुनकर सामनेके दालानसे सास दौड़ीआई माता को आतेदेख बेटातो दूसरे दरवाज़ेसे चलदियापरन्तु अपनेदिलमें कहताथा कि अल्लाह मैंने बर्रोंके छत्तेको छेड़ा सासुनेआकर देखातो चार पैसेका कत्था जोछान पकाकर कुल्हियामें भर दियाथा सबगिरापड़ा है तोशककत्थेमें लतपत है लिहाफ़चूनेमें भरा है बहू ज़ारज़ार रोरहीहै आतेही सासने बहूकोगलेसे लगालिया और अपनेबेटेको बहुतकुछ बुराकहा अपने दिल-जोईकासहारा ऊंघतेकोठेलनेका बहानाहुआ अगर्चिसासने मिन्नतकी और समझायापर उसऔरतपर कुछअसर न हुआ आस पास की औरतें रोने पीटनेकी आवाज़ सुनकर इकट्ठा होगईं यहांतक नौबतपहुंची कि प्रयाग अगरहरी की बेटी सुलिया समधियानेको दौड़ीगई और एक २ की चार २ ल-गाईं परमेश्वरकी क्रपासे उनकी माताभी बड़ी उताहिलथीं सुनतेकेसाथ डोलीपर चढ़ आपहुंची बहुत कुछ लड़ी झगड़ीं आख़िर बेटीकोसाथलेगईं कईमहीनेतक दोनोंओरसे आना जाना बन्दरहा। ताकि कहानी अच्छेप्रकारसे बूझमें आये तुम को नामभी उनलोगों के बतादेने ज़रूरहैं परमेश्वरी इस ना समझ औरत का नाम था परमेश्वरी नासमझ गुणहीन और बदमिज़ाजथी परन्तु इसकी छोटीबहिन सरस्वती बहुत चतुर और बुद्धिमान और नेक मिज़ाजथी छोटीसी अवस्था में इसने हिन्दीभाषामें चन्दकिताबेंपढ़लीथीं घरकाहाल अपनेबापको हर शनिश्चरको लिखभेजा करतीथी और अनेकप्रकारके वस्त्र सींसक्तीथीभांति २ के मज़ेदारभोजनपकाने जानतीथी तमाम महल्लेमें सरस्वतीकी तारीफ़थी मालकिनघरका तमाम बन्दो-

बस्त सरस्वतीके हाथों रहा करताथा जब कभी बाप फ़ुरसत लेकर घरआता गृहस्थीके बन्दोबस्तमें सरस्वती से सलाहपूंछता रुपिया पैसा कोठरी और संदूक़ोंकी कुंजियां और सब कुछ सरस्वतीके अख़्तियारमें रहाकरताथा मातापिता अन्तःकरणसेसरस्वतीको चाहतेथे बल्किमहल्लेके सबलोग सरस्वती को प्यारकियाकरतेथे परमेश्वरी ख़ुदबख़ुद अपनी छोटीबहिन से नाराज़ रहा करतीथी बल्कि अकेला पाकर मारभी लिया करतीथी परन्तु सरस्वतीसदा अपनी बड़ीभगनीका अदबकरती और मासे उसकीचुग़ली न खाती दोनों बहिनोंकी सगनीभीसंयोगसे एकहीघरमेंहुईपरमेश्वरीदत्त और अम्बिकादत्तदोसगे भाईथे परमेश्वरीकाविवाह बड़ेभाई परमेश्वरीदत्त से हुआ और सरस्वतीकीबात अम्बिकादत्तके साथठहरचुकी मगर ब्याहनहीं हुआथा परमेश्वरीके बदमिज़ाजीके कारण नज़दीकथा कि सरस्वतीकी संगनी छूटजाय परन्तु इनलड़कियोंकी मौसी परमेश्वरीदत्त के घरके पास रहतीथी सो वह सदा समझाती बुझातीरहती अगर्चि परमेश्वरी लड़झगड़ के चलीगईथी परन्तु मौसीने बहुतकुछ बुराभलाकहा और ऊंच नीच समझाया कईमहीनेपीछे होलीके त्योहारमें भानजीको ससुराल लिवालाई बहुत दिनतक परमेश्वरीदत्त स्त्रीसे नाख़ुश रहा आख़िर मौसियासामने स्त्रीपुरुषकामिलाप करादिया परन्तु जबमिज़ाजोंमें नामुआफ़िक़त होतीहैतो हरएक बात में बिगाड़कासामान होजाताहै परमेश्वरीदत्तने एकदिन अपनीमासेकहा कि आजमैंने एकमित्रकी मेहमानीकीहै शाम के खानेकाज़्यादाबन्दोबस्त होनाचाहिये माताने उत्तर दिया परमेश्वर जानताहै कि किसक्लेशसे मैंरोटीपकालेतीहूं तीन दिनसे तीसरेपहरको जूड़ी आतीहै मुझको अपनी ख़बरतक नहींरहतीहै परमेश्वर परोसिनका भलाकरै कि वहशामको इतनाभी पका देतीहै तुमने मेहमानी करनेसे पहिले घरमें पूंछतो लिया होता परमेश्वरीदत्तने अचम्भा करके बीबी की ओरदेखा और कहाकि ये इतनेभी कामकीनहींहै बीबीको

इतनी बरदास्त कहांथी कि इतनीबात सुनकर चुपरहे सुन-
तेही बोली इसीमूढ़ी अम्मासे पूछो कि बेटेका ब्याह किया
या लौंडी मोललो परमेश्वरीदत्तने सोचा अब अगरमैं जवाब
देताहूं तौ पहिलेकी तरह दसवाईहोगी अपनासा मुंहले-
कर रहगया सासके खानेके वास्ते कुछ बाजारसे मोल लाया
गर्ज वह बात टलगई अब परमेश्वरीदत्तको दूसरीबात आगे
आईयाने गुड़िया पंचमीके एक हफ़्ता आगेसे बीबीके जोड़े
की तैयारी शुरूकी हररोजभांति २ के कपड़े रंगबरंगकी
चूड़ियांडेढ़ हाथिया व सलमासितारेकी कामदार जूतियां
लाताथापरन्तु बीबीकेखातिरतले कुछ नहींआताथा यहां तक
कि गुड़ियापंचमीको एकदिन रहगया लाचार होकर पर-
मेश्वरीदत्त अपनी मौसियासासके पासगया उन्होंने शब्दसुन-
कर अंदरबुलालिया प्यारसे बैठाया पान लगाकर दिया और
पूछाकहो परमेश्वरीतो अच्छीहै परमेश्वरीदत्तने कहासाहब
आपकी भानजीतो अजीब औरतहै मेरातो दमनाकमें कर
रक्खाहै जोचालहै निरालीहै जोबात है सो टेढ़ीहै मौसिया
सासनेकहा बेटाइसका कुछध्यान मतकरो अभीकम उमरहै
बालबच्चे होंगे घरका बोझा पड़ेगा मिजाज आपसे आपही
दुरुस्तहोजायगा और आखिरअच्छेलोग पड़ोसीकोभीनिबाह
देते हैं बेटा परमेश्वर ने तुमको सब प्रकार लायक किया है
ऐसी बात न हो कि लोगहसैं तुम्हारी इज्जतहै परमेश्वरीदत्तने
कहा कि मैं तो खुद इसी ख़यालसे बहुत दर गुज़र करता
रहताहूं आप देखिये कल गुड़ियापंचमीहै इस वक्ततक न
चुड़ियांपहिनी न कपड़ेबनाये ज़राआप चलकर समझादी-
जिये मैंने बहुत कुछ कहा और मातानेभी बहुत मिन्नतेंकी
परन्तु नहींमानती मौसियासासनेकहा तुम्हारेमौसियाससुर
बाज़ारसे आलें तो उनसे पूछकर मैं चलतीहूं गरज मौसीने
जाकर चुड़ियां पहनाईं कपड़े ब्योंते जल्दी के मारेसबमिल-
करसीनेबैठीं मौसीनेकहाबेटी लहंगेमें गोटतुमलगादो डुपट्टे
मैं गोटामैं टांकतीहूं जब परमेश्वरी गोट लहंगेमेंलगाचुकी

तो उसने इतराकर मौसीसे कहा तुमको अभी आधे दुपट्टे में गोटा लगाना बाकी है और मैं लहंगे में गोट लगा चुकी मौसीने देखा तो गोट उलटी लगाई थी परमेश्वरीकी सासके लिहाजसे मुंहपर कुछ न कहा। परन्तु चुपके२ दो चार चुटकियां ऐसी लीं कि परमेश्वरी के आंखोंमें आंसूभर आये और हलकेसे कहा कि अपना समझ देखतू उलटी गोट लगा बैठी परमेश्वरी अपना किया हुआ सब उधेड़ा फिर गोट लगाना आरंभ किया जब लगा चुकी मौसी ने देखा तो सबमें झोल है तबतो मौसीसे न रहा गया सासकी आंख बचा एक सुई परमेश्वरीके हाथमें चुभोदी और गोट फिर उधेड़कर आप लगाई गरज इसप्रकार परमेश्वरीका जोड़ासीं-कर तैयार हुआ रात ज्यादा गई थी परमेश्वर की मौसी अपने घरको बिदा हुई और लोगभी सोरहे बच्चे गुड़ियांपंचिमीके खुशी में सवेरे से जागे किसीने रातकी मेंहदी खोली किसीने बेसन के लिये गुल मचाया परमेश्वरी दत्त वास्ते नहाने और नित्यनेम के सुबह होते नदीपर चला गया दो चार घड़ी दिन चढ़े लौट आया तो देखा कि बीबी सोरही है परमेश्वरीदत्तने अपनी छोटी बहिन यमुनासे कहा कि यमुना जाओ अपनी भाभी को जगा दो पहिले तो यमुनाने जाने में संकोच किया इसकारण कि यमुना परमेश्वरीके मिजाजसे बहुत डरती थी जबसे ब्याह हुआ परमेश्वरीने एक दिन अपनी छोटी नन्दके साथ प्यार से बात नहीं कीथी और न कभी अपने पास उसको आने और ब-ठने दिया था परंतु भाईके कहने से त्योहारकी खुशीमें यमुना दौड़ी२ चली गई और जाकर कहा भाभी उठो२ भाभीने उठने के साथ यमुनाके एक तमाचा मारा यमुना रोने लगी बाहरसे भाई आवाज सुनकर दौड़ा उसको रोता देखकर गोदमें उठा लिया और पूंछा क्या हुआ यमुनाने रोते२ कहा भाभीने मारा परमेश्वरीने कहा देखो आपतो दौड़नेमें गिरपड़ी और मेरा नाम लगाती है परमेश्वरीदत्तको क्रोध तो आया परंतु चुप रहना उस समय उचित समझा यमुना को प्यार चुपकार कर चुप किया और बीबीसे कहा खैर उठो नहाओ कपड़े बदलो दिन

ज्यादा चढ़गया मैं बाज़ारको जाताहूं परमेश्वरीने नाकभौं सिकोड़कर कहा ऐसे सबेरे मैं नहीं नहाती ठंढका समय है तुम बाज़ारको जाओ मैंने क्या मनाकियाहै परमेश्वरीदत्त ऐसी बात सुनकर बहुत दुखित हुआ और परमेश्वरी ऐसी अभागिनथी कि सदा अपने स्वामीको नाखुश रखती थी इतने में परमेश्वरीदत्त की माताने पुकारा कि बेटा जाओ बाज़ार से मिठाई दूध लाओ परमेश्वरीदत्तने कहा बहुत अच्छा पैसा दीदिये मैं मिठाई ला देताहूं परन्तु जो मेरे लौटने तक इन्होंने कपड़े न बदलेतो सब कपड़े चूल्हे में रखदूंगा परमेश्वरीदत्त तो मिठाई लेने बाज़ारगया माता को मालूम था कि पुत्रका मिज़ाज बिगड़ाहुआ है और स्वभावभी इसका इस प्रकारका है कि पहिलेतो इसको क्रोध नहीं आता और जोकभी आजाताहै तो बुद्धि इसकी ठिकाने नहीं रहती ऐसा न हो कि सचमच नये कपड़े जलादे जल्दीसे बहूके पासगई और कहा बेटी परमेश्वरके लिये बरस २ के दिन तो बदशगुनी मतकरो उठो नहाओ कपड़े बदलो परमेश्वरी ने कहा मैं तो नहीं नहाती परन्तु सासने चिरौरी विनतीकरके बहू को नहलाया धुलाया कंघी चोटीकर कपड़े पहनाय परमेश्वरीदत्त के आने से पहिले दुलहिन बनाकर बैठा दिया परमेश्वरीदत्त लौटकर देखातो प्रसन्नहुआ फिर दूसरी दफ़ा बाजार जाते यमुना से पूंछाकहो तुम्हारे वास्ते बाज़ारसे कौन खिलौनालावैं यमुना ने कहा अच्छी सुघर तख़ती लिखने के हेतु ला देना और क़लम दावात के लिये एक नन्ही सी संदूकची और परमेश्वरी बोली हमारे लिये क्यालाओगे परमेश्वरीदत्तने कहा जो तुम कहो लेता आऊं परमेश्वरीने कहा भुट्टे और सिंघाड़े और झरबेरके बेर और मटरकी फलियां और बहुतसी नारंगियां और एक ढोलक और एक जोड़ी मंजीरा यह सुनकर परमेश्वरीदत्त हंसने लगा और कहाकि ढोलक मंजीरा क्या करोगी बीबीने जवाबदिया कि बजायेंगी और क्या करेंगीपरमेश्वरीदत्त समझाकि अभीतक इस मूर्खमें वे समझ बच्चोंकी

प्रकार खाने और खेलनेके खयालात मौजूद हैं वस्त्र आभूषण पहननेसे जो आनन्द परमेश्वरीदत्तको हुआ था वह सबखाक धूलमें मिलगया और चित्तमें उदासी छागई उसी उदासीके दशामें बाजारको चलागया इसका जानाथा कि परमेश्वरीने एक और नई बातसाससे कहा कि हमको डोली मंगादो हम अपने माके घरजायेंगी सासने कहा भला यह जानेका कौन समयहै परमेश्वरीनेकहा आज मेराजी बहुत घबराताहै दिल उलया चला आताहै मुझको अपने मैकेकी सहेली रामदीन मनिहारकी बेटी प्यारी बहुत याद आती है सासने कहाकि अगर ऐसाही दिलचाहताहैतो उसीकोबुलाभेजो परमेश्वरी ने कहा वाह बड़ीबुलानेवाली ठहरीं ऐसाही बुलाना था तो उसीकोबुलाकर चूड़ियांपहनवाईहोती सासनेकहा भलाबेटी मुझको क्या मालूमथा कि अचानक तुमको आज उसकी याद आजायगी परमेश्वरीनेकहा खैरइसझगड़ेसे क्याप्रयोजनडोली मगवानीहैतो मंगवादो नहीतो मैं मुलियाकेबापसेमगवाभेज-तीहूं सासनेकहा बेटोतेरी बुद्धिमारीगईहै मियांसे पूंछानहीं गया आपहीआपचली और मुझको अखतियारनहींजो लड़के के बेआज्ञा डोली मगवादूं परमेश्वरी बोली कैसे मियां कैसा पूंछना अबकोई अपने मातापितासे त्योहारकेदिनभीन मिला करेइतनाकहकर मौकाकुंजड़ेसे डोलीमगवायह जावह जा अपने मैके पहुंची थोड़ी देर पीछे जब परमेश्वरीदत्त बाजार से लौटा तो घरमें घुसतेही पुकारा लो बीबी अपनी ढोलक और मंजीरा परन्तु जब देखा कि सब चुप हैं माता से पूंछा क्या हुआ यमुनाने कहा भाभी जानचली गई परमेश्वरीदत्त ने पूंछा क्यों कर गई और कहां गई और क्यों जाने दिया मातानेजवाबदिया किबैठे बिठाये अचानककहनेलगी कि मैं तोअपनेनैहरजाऊंगी मैंने बहुतमनाकियाएक न मानीमौला से डोलीमंगवा चलीगई है रोंकते २ रहगई परमेश्वरीदत्त यह सुनकर क्रोधकेमारे कांपउठा और चाहा कि ससुराल जाकर अभी उस अभागिनीको [illegible] मौलाकहारको चला

माता समझगई नाराज़हुए माताने पुकारा उसने कुछ उत्तर न दिया माने कहा बेटा मैं तुम्हें पुकारती हों तुम उत्तर नहीं देते कलियुग में यही माओं का आदर रहगया है यह सुनतेही परमेश्वरीदत्त उलटाफिरा माने कहा बेटा तू यह बता कि इस धूपमें कहां जाता है अभी बाज़ारसे आयाहै और फिर बाहर चला परमेश्वरीदत्तने कहा मैं बाहर कहीं नहीं जाता दरवाज़े पर लाला कन्हैयालाल के बैठके में जाताहूं माताने कहा अरे लड़के होशमें आ मैंने क्या धूपमें अपने बाल सफ़ेद किये हैं जो साहब हमसे बातें बनाने चला है लाला कन्हैयालाल के पास जाताहै तो दुपट्टा अंगरखा उतारकेरखदे और शौक़से बैठके में जा यहसुनकर परमेश्वरीदत्त मुसकरानेलगा माताने हाथ पकड़कर अपनेपास बैठालिया घुटनेपर शिररखकर जुयें देखने लगी यमुना सेकहा बेटी ज़राभाई के पंखा हांको परमेश्वरीदत्त माताके गोदमें शिररखकर सोगया जागा तो दिन ढलगया और वह क्रोध भी धीमा होगयाथा माताने कहा हाथमुंह धोओ जब हाथ मुंह धो चुका तो कहा अब ससुरालजावो तुझे मेरी सौगन्ध है कि जो तू वहां कुछ लड़ा और बोला परमेश्वरीदत्तने कहा तो मुझको मतभेजो माने कहा तुझको शामके भोजन के लिये ससुराल से आदमी बुलाने आया था और ससुराल तो तेरी है तुझको न भेजूं तो किसको भेजूं और बहुत समझा समझाकर गुलियामहरी के साथ परमेश्वरीदत्त को ससुराल रवानाकिया जबपरमेश्वरीदत्त सासकेघरके नज़दीक पहुंचा तो उससमय घर में परमेश्वरी अपनी सहेलियों को साथलिये उधम मचा रहीथी और बाहर गलीमें तमाम गुलकी आवाज़ आतीथी सरस्वतीने जबमहरीको दूरसे आते देखा बड़ीबहिनसे कहा कि चुपकरो तुम्हारे ससुरालसे महरीआई है इतनेमें परमेश्वरीदत्त भी भीतर घरके पहुंचा सास को सलाम किया सासने कहा जीते रहो इतने में सरस्वती भी अपनीउढ़नी सम्हाल सम्हल कोठरीसे निकली और झुककर बहनोईको सलाम किया सरस्वती को बहनोईने ...

बठालिया थोड़ी देर पीछे सरस्वती गोदसे उठी और जाकर एक थालीमें बड़े सफ़ाई से अच्छी २ मिठाई रखकर ले आई और एक गिलास पानी भरलाई और बहनोईके सामने रख-दिया सासने कहा बेटाखाओ परमेश्वरीदत्तने कहाकि अभी थोड़ी देरहुई मैंने घरमें खाना खायाहै सासने कहाक्या डर है थोड़ासातो खालो इसपर परमेश्वरीदत्तने थोड़ा २ हरएक मिठाई से खानेलगा और खाकर हाथ मुंह धोकर बैठगया सरस्वती इलायची डाल एकमजेदार पानलगालाई और बह-नोईको दिया उसके उपरान्त सास और दामादसे इधर उ-धरकी बातें होतीरहीं चिराग़जले परमेश्वरीदत्त ने कहामैं विदाहोताहूं सासनेकहा अबकहां जावोगे यहींसोरहो पर-मेश्वरीदत्तने कहाकि आजत्योहारहै और आयेगयेसे मिल-नाहै दूसरे मैं मातासे रातकेवास्ते कहकर नहीं आया सास ने कहा मिलने मिलानेका तो अब समय नहीं रहा क्योंकि शाम होगई है समधनिका कुछ तुम दूधतो नहीं पीतेकि घर जाये बिन चैन नहीं आख़िर महरी जायगी ख़बर करदेगी परमेश्वरीदत्तने बहुतकुछबहाना कियापर सासनेएक नमाना परमेश्वरीत्त को जबरदस्ती रहनापड़ा चारघड़ी रातगये जब खाने पीनेसे सावकाशहुई सरस्वतीने बरतन भांड़ा गिरीपड़ी चीज सब ठिकाने रक्खी बाहरकेदरवाज़ेकी जंजीर बंदकी कोठरियों में तालालगा कुंजियां माताके हवाले कीं बाहर के दालान और रसोईके मकानका चिराग़ बुझादिया माता और भगनी और बहनोई सबको पान लगाकर दिया और आराम से जाकर सोरही अब सासने परमेश्वरीदत्त से कहा क्यों बेटा तुम मियां बीबी में यह क्या प्रतिदिन लड़ाई रहा करती है परमेश्वरी का ऐसा बुरास्वभाव है कि कभी भूल-कर भी ससुराल की बात मुझसे नहीं कहती दुनियां जहान की बेटियों का दस्तूर होता है कि ससुराल की ज़रा ज़रा सी बात माओंसे कहाकरतीहैं नहीं मालूम इसको क्या पर-मेश्वर की मार है बहुतेरा पक २ अपना मुंह थकाओ परन्तु

क्या जिकिरकि यह कुछ भी बताये परन्तु टोला महल्ला की बात कानों कान पहुंच जाती है ऊपरी लोगों से मैं भी घर बैठे २ सुना करती हैं परमेश्वरीदत्त ने सास से यह बात सुनकर थोड़ी देर सोच किया और लज्जा के मारे उत्तर मुंह से न निकलता था परन्तु इसने सोचा कि बहुत काल के पीछे ऐसा समय मिला है और अब इन्होंने छेड़कर पूंछा है सो ऐसे समय में चुप रहना उचित नहीं है बेहतर है कि जन्मभर का ज़हर उगल डालिये कदाचित् आजकी बात चीत में आगे के वास्ते कोई बात निकल आये यह सोच विचारकर परमेश्वरीदत्तने शर्माते २ कहा आपकी लड़की मौजूद है इन्हीं से पूछिये हमारे यहां इनको क्या क्लेश पहुंचा या खातिरदारी में कौनसी कमी हुई या कोई इनसे लड़ा या किसने इनको बुरा कहा इनको मालूम है घर में हम गिनती के आदमी हैं हमारे मा से तो तमाम महल्ला वाक़िफ है कि ऐसी नेक हैं कि तमाम उमर उनको किसी से लड़ने का संयोग नहीं हुआ अगर उनको कोई दश बात कड़ी भी कह जावे तो चुप हो जाती हैं अम्बिकादत्त दिनभर लिखने पढ़ने में लगा रहता है सुबह का निकला रात को घर आता है खाया और सो रहा मैंने उसको इनसे कभी बात करते नहीं देखा यमुना इनकी सूरत से डरती है रहा मैं सो मौजूद बैठा हूं जो शिकायत मुझसे हो बेधड़क कहें परमेश्वरीदत्त की सास अब बेटी की तरफ़ देखकर बोली हां भाई जो कुछ तेरे दिल में हो तूभी साफ २ कहदे बात का रहना मन में अच्छा नहीं होता मन में रखने से क्लेश बढ़ता है झगड़ा होता है परमेश्वरी अगर्चि झूठ बोलने पर बहुत ढीठ थी परन्तु उस समय परमेश्वरीदत्त के रूबरू कोई बात कहते न बन पड़ी और जी ही जी में डर रही थी कि मैंने बहुत सी झूठी बातें मा से आ के लगाई हैं ऐसा न हो कहीं इस समय खुल जावें यह सोच समझ उसने इस बात ही को टाल दिया और कहा तो यह कहा कि हम तो अलग घर करेंगी परमेश्वरी की माता ने दामाद से कहा क्यों भाई तुमको अलग होकर रहने में क्या उज्र है परमेश्वरदीदया

सेतुम आपनौकर हो आपकमातेहो किसी बातमेंमाता पिता के मुहताज नहीं अपना खाना अपना पहनना फिर दूसरेका मुहताजहोकररहनाक्या प्रयोजन बेटाबहू कैसीही प्यारीहो फिरभी जो आराम अलगरहनेमें है मा बाप के घरकहां जो चाहासो खाया जोचाहासो पकाया और जरा समझने की बातहै मा बापके संगरहकर लाखकमाओ फिरभी नामनहीं लोग क्याजाने तुम अपनाखातेहो या माता पिताके शिरपड़े हो परमेश्वरीदत्तने कहा सुखकीजो पूछतीहोतो जोसुख कि अब हमकोप्राप्त है अलगहुये पीछे उसकी क़दरमालूमहोगी दोनोंवक्त पकी पकाई खाली और बे फ़िक्रि होकर बैठ रहे अलगहोनेपर आटादाल नमक मसालातरकारी कंडालकड़ी सब का सोच करना पड़ेगा आपही सोचिये कि गृहस्थी में कितनेबखेड़े हैं बे प्रयोजन इनसब बखेड़ों को अपने शिरपर लेना मेरे नज़दीक तो बुद्धि की बातनहीं यहबात कि जो चाहा सो खाया और जोचाहा सो पकाया अबभी प्राप्त है इन्हींसेपूंछिये किकभीकोई फ़र्मायश कीहै किजोनहींहुईहो बड़े कुनबोंमें अलबत्ता इसप्रकारका तो भी हुआ करता है एकको दिलमीठे चावलोंकोचाहताहै दूसरेकोमूंगीखिचड़ीचाहिये तीसरेकोपुलावदरकारहै चौथेकोदहीबड़ेखानामंजूरहैपांचवें को परहेजी खाना वैद्यने बताया दूध के वास्ते दूध बटलोई रोज़ के रोज़ कहां से आवें हमारे यहां कुनबा कौन बहुत बड़ाहै कि ये फ़र्मायश किसी चीजकीकरें और वह पूरी न कीजाय इसकोभी जानेदीजिये अगरइनको फ़र्मायश करनेमें ऐसीही लज्जा आतीहै तो आपखाने पकवाने का बन्दोबस्त कियाकरें खुदहमारी माभी कईबार इससे कहचुकीहैं इनसे पूंछियेकहाहै यानहीं और नामको जो आपने फ़र्माया यह भी मेरेनज़दीक बुद्धिकीबात नहीं अपनेसुखसे कामहै लोग जोचाहेंसोअपने दिलोंमेंसमझें और यहभीमानाकिलोगोंने भी समझाकि हममाता पिताके शिरपड़े हैं तो इसमेंहमारी कौन बेइज्ज़ती है माता पिताने हमकोपाला परवरिशकिया

खिलाया पहनाया पढ़ाया लिखाया शादी ब्याह किया इन सब बातोंमें बेइज़्ज़ती नहीं हुई अब कौनसा सुरख़ाबका पर हममें लगगया है कि उनके आधीन होना हमारी बेइज़्ज़ती समझी जावे सासने जवाब दिया कि अगर सब लोग तुम्हारे प्रकार समझा करें तो क्यों अलग हों संसारका यही दस्तूर होता चला आया है और होता चला जायगा कि बेटे माता पितासे अलग होजाते हैं और मैं तो जानती हूं कि जगतमें कोई बहू ऐसी न होगी कि जिसका खामी कमाऊ हो और वह सासनन्दोंमें रहना अंगीकार करे परमेश्वरीदत्तने कहा यह आपका कहना दुरुस्त है अगर बेटे माता पिता से अलग न हुआ करते तो शहर में इतने घर कहांसे आते परन्तु हरएककी दशा जुदी है अलग होकर रहना मेरे नज़दीक उचित नहीं दश रुपयेका तो मैं नौकर इतनी आमदनीमें अलग घर सम्हालना बहुत कठिन है और फिर इस नौकरी का भी भरोसा नहीं अलग हुये पीछे अगर नौकरी जाती रही तो फिर बापके घर आना मुझको अति कठिन गुज़रेगा उस समय अलबत्ता बेइज़्ज़ती होगी लोग कहेंगे कि मियां अलग तो होगये थे फिर झख मारके बापके टुकड़ोंपर आपड़े लोगोंकी रीस इस मामलेमें ठीक नहीं अपनी दशापर आप विचार करना चाहिये वह नक़ल आपने सुनी है एक शख़्सने बाज़ारसे नमक और रुई मोल ली नमक खच्चरपर लादा और रुई गधेपर चलते चलते राहमें एक नदी मिली नदी पैराव थी उस शख़्स ने खच्चर और गधे को लदा लदाया पानी में उतार दिया बीच नदी में पहुंचकर खच्चर ने डुबकी लगाई थोड़ीदेर पीछे सिर उभारा तो गधेने पूछा क्यों यार खच्चर यह तुमने क्या किया खच्चरने जवाब दिया कि भाई तुम्हारे तो बड़े भाग हैं तुमपर रुई लदी है इसका बोझ तो बहुत हलका होता है मुझ अभागेपर तो नमक है बोझके मारे मेरी कमर कटकर लोहूलुहान होगई है यह हमारा मालिक ऐसा बेदर्द है कि इसको हमारे दुःखका ध्यान नहीं अनाप शनाप जितना चाहता है लाद लेता है मैंने समझा कि मंज़िलतक पहुं-

चते २ कमर जाती रहेगी आवो डुबकी लगावो नमकपानी में भीगकर कुछतो गलजायगा जिसक़दर हलके हुये बेहतर होगा मालिक बहुत करेगा चार डंडे मारलेगा सो योंही रास्तेभरमें डंडे खाते आताहूं देखो अब मेरा बोझा आधा रहगयाहै गधे बुद्धिहीननेभी खच्चरकी रीसकरके डुबकी लगाईरुई भीगकर और भारी होगई ख़िरडघारा तो हिला न जाताथा खच्चरहंसा और कहा क्योंभाई गधेक्याहालहै गधे ने कहा यार मैंतो मराजाताहूं खच्चरने कहा अयनासमझ तूने मेरी रीस तो की परन्तु इतना तो समझ लेता कि मेरी पीठपररुईहै नमकतो नहींहै अम्मा जान ऐसा न हो लोगोंकी रीस करने से मेरा हालभी उस गधे कासा हो मासने कहा भाई तुमतो किसी से हारनेवाले नहीं मैंतो सीधीबात यह समझतीहूं कि दशरुपया महीना तुमकमातेहो परमेश्वरकी कृपाहैसस्तासमयहै बालनहीं बच्चानहीं भगवानदयारक्खेतुम दोनोंमियांबीबी अच्छीतरहसे रोटीदालखाओनैनसुखतंजेब पहनो आगेकासोच तुम्हारीतरह लोगकियाकरें तो संसार का कामबन्दहोजाय नौकरीतो नौकरी जीनेका भरोसानहीं जै दिनजीनाहैहंसीखुशीमें टेरकरदेनाचाहियेपरमेश्वरीदत्त नेकहा यहीतो मैंभी सोचताहूं खुशीअलग होकर रहनेमें है या साथमें मासने कहा हुज्जत दलील से क्या प्रयोजन सीधी बातयही क्यों नहींकहते कि मुझको मासे अलग होनामंजूर नहीं एकबात तुमसे बीबीनेकही उसकेमानने में इतना बड़ा सोचहै और फिरकहतेहो कि हमबीबी की ख़ातिरदारी में कमीनहीं करते आराम सुखवहीहै कि जिसमें बीबीखुशहो इसकेपीछेबातोंमें रंजहोनेलगा परमेश्वरीदत्तनेजवाबदेनाबन्द करदिया जोकि रात अधिकगई थी इसलिये परमेश्वरीदत्त ने मासे कहा अबआप सोइये इसबातको मैं फिरसोचूंगा ये लोग तो सोरहे परन्तु परमेश्वरीदत्त रातभर इसीखयाल के उधेड़बुनमें रहा और मनहीमन में बातें करतारहा सुबह जो उठातोदेखा सरस्वतीझाड़ देरहीहै बहुनोईको देखकर

सरस्वतीने सलामकिया और कहाभाईसाहब नहानेकेवास्ते पानी मौजूदहै परमेश्वरीदत्त ने नहाया और नित्यनेम से फ़राग़त की सरस्वती चाह बनाकर दो पियालियोंमें लेआई और दो चिमचा और एकतश्तरी में कन्दलाकर सामने परमेश्वरीदत्तके रखदिया परमेश्वरीदत्तने चाहपीतो अच्छेस्वाद और अच्छी बू बासकीथी जिसको पीकरचित्त बहुत प्रसन्न हुआ परमेश्वरी उस वक्ततक अपने स्वभावके अनुसार पड़ी सोतीथी परमेश्वरीदत्तने साससे कहा आपभी सुबहउठने की ताकीद कीजिये सासनेकहा बेटायह अपनीनानी की बहुत चहेती है उनकेप्यार दुलारने इनका मिज़ाज और इनका स्वभावसब ख़राबकरदिया जबयहछोटीथी औरमैं किसीबात पर घुड़क बैठतीथी तो कई २ दिनतक मुझसे बोलना छोड़देती और यहतो क्या ताक़तथी कि परमेश्वरी को कोई हाथ लगावे परमेश्वरी बात२ परहठकरती चीजोंको तोड़तीफोड़ती परंतु उनकेडरकेमारे कोई कुछकाहन सक्ता था इसी बात पर परमेश्वरीके बापसे रोज बिगाड़ रहताथा जब परमेश्वरीदत्त बिदाहोनेलगा चलते चलते सासने कहा कि बेटा रात की बातयादरखना और उसका जरूर कुछबन्दोबास्तकरना रास्ताभरपरमेश्वरीदत्त उसबातको सोचताआया घरमें पहुंचातो माने देखा कि परमेश्वरीदत्त के चेहरेपर उदासी छाई हुईहै माताने समझा कि यह ज़रूर ससुराल में लड़ा है परमेश्वरीदत्तसे कहाकि आख़िरतूने मेराकहना न कियापरमेश्वरीदत्तने कहा कि अम्मा भगवान की सौगन्द लड़ाईभिड़ाई कुछ नहीं हुई माने कहा फिरसुस्त क्यों है परमेश्वरीदत्त ने जवाबदिया कुछभी नहीं सोता उठकर आयाहूं इसकारण शायद आपको मेरा चेहरा उदास मालूमहोता होगामाने कहा लड़केहोश्रमें आक्या तुझको सोताउठकर कभीथोड़ाही देखाहै सचबता क्या बातहै परमेश्वरीदत्त ने लाचार होकर रातकी तमाम कहानीमाताको सुनाई सुनतेके साथहीमाता को काटो तो लोहू नहीं था परंतु वह बड़ी बुद्धिमान थी

कहनेलगी अगर्चि मेरी इच्छा यहथी कि जबतक मेरे दममें दमहै तुमसबको अपने कलेजे से लगायेरहूं और तुम दोनों भाईमिल चुलकररहो परंतु मैं देखतीहूं तो सामान उलटेर नजर आते हैं लो आजमैं तुझसे कहतीहूं कि व्याहके दूसरे महीनें से तेरीबीबीका इरादा अलग घर करनेका है तू जो दस रुपये महीने के महीने लाकर मुझको देता है उसको बहुतबुरा मालूम होता है रातदिन मैं बहूके सहेलियों से सुनतीरहती हूं कि बहू महल्ला तोपदरवाजे में मकान लेगी यमुना को साथ लेजांयगी जब तक यह सब लड़कियां इकट्ठी बैठीरहतीहैं यही जिकिर यहीबातें आपस में रहा करतीहैं मैंने एक बार तुम्हारी मौसियासासके मुहपरयह बातकहदी थीकिअगरबहूहमारेसाथ रहनानहींचाहती तो अपनाखाना कपड़ा अलगकरले और इसीघरमेंरहे परन्तु तुम्हारी मौसिया सास से मालूम हुआ कि यह बहू को मंजूर नहीं आदमी व्याह खुशी व आराम के लिये करताहै रोजकी लड़ाई प्रति दिनका झगड़ा निहायत बुरीबातहै अगर तुम्हारी बीबीको यहींमंजूरहै और अलगरहनेसे उसकोखुशीहै तोमुझको उ-जरनहीं जहां रहोखुशवआबादरहो परमेश्वरने एक मासता संतानकीहमारेपीछे लगादी है सोकभीतुम इधरको निकले एक नजरदेखलिया खबरआगया घरकेकाम धंधासेकभीछुट-कारामिलातोमैंआप चलीगई तुमकोदेखआई यहकहनाथा कि परमेश्वरीदत्तका जीभरआया और बेअखतियार रोनाशु-रूअकियाऔर यहसमझाकिआजमातासेजुदाईहोतीहैमाता भी रोई थोड़ीदेर पीछे परमेश्वरीदत्तने कहा कि मैंतो अलग नहीं रहूंगा बीबीरहेयाजाय माने कहाअरेबेटा यहभी कहा होतीहै अशराफ़ों में कहीं बीबीमियांभी छूटे हैं तुमको अपनी उमर इन्हींके साथ काटनीहै हमारा क्याहै हममरनेके नज-दीक पहुंच चुकीहैं आज मरे कलदूसरा दिनहै मेरी सलाह मानो तो जोयह कहेसो करो हमने जिसदिन तुम्हाराव्याह किया उसीदिनसे तुमको अलगसमझा तुम अनोखे बेटे न मैं

अनोखीमा कौनबटा अपनीमाके साथ रहाहै परमेश्वरीदत्त ने अपने मित्रोंसेभी सलाह पूंछी सबने यहीकहा झगड़ारफ़ा करनाबेहतरहै और सा घरहनेपरक्या माता पितासे अलगरहो परन्तु उनकी खिदमत् और तावेदारी करो जबसब लोगोंने यही सलाह दी तो परमेश्वरीदत्त ने मनमें सोचा कि अलग रहकरभी देखलो अगर यह स्त्री सम्हलजाय और घरको घर समझे बदमिजाजी बदजबानी छोड़दे तो अलग रहना ऐब व गुनाह नहीं यही न कि गृहस्थी की फ़िकर करनी पड़गी और तंगी से गुजरेगी सो संसार में रहकर फ़िक्रसे किसी सूरत छुटकारा नहींहै अबभी कुछचिन्ता नहींहै यहरोजका झगड़ा तो कितना बड़ा क्लेश है और रोजी का अंदेशा सो बेजा है जितनीहोती तकदीरमेंहै बहरहाल पहुंचेगीआदमी का उपाय औ तदवीर को इसमें क्या दखल है यह सोचकर परमेश्वरीदत्तने अलग होजानेका इरादा पक्काकर लिया संयोगसे इसीके मा बापके मकान के पास एक घरभी खाली था एक रुपया माहवारी कियायापर उसको ठहरा लिया बल्कि दरवाजे में कुफ़ल देकर सरखत भी लिखदिया और ससुरालमें कहलाभेजा कि मकान लेलियाहै अबआओ तोनये घरमें चलें और माता पिता सेभी कह दिया कि यही गंधी वाला मकान लेलियाहै माता ने जितना असबाब बहूकाथा कपड़ोंकी संदूक़ बरतन बिछोना मसहरीपलंग सबएक अलहदा कोठरीमें रखवादिया शाम को बहूभी आपहुंची सबेरे उठ माताने कोठरी खोल परमेश्वरी दत्तसे कहा कि लोभाई अपनी चीजें तुम दोनों मियां बीबी खूब देखभाल लो परमेश्वरीदत्तने कहा अम्मा तुम यह क्या कहती हो क्या ये चीजें कोई ग़ैरजगहथीं माताने कहा बेटा यहबात नहीं है ऐसा नहो उठाने बैठाने में कोईवस्तु इधरकी उधर होजाय और कहारीसेकहाकि तुमसब येअसबाब गन्धीवाले घर मेंपहुंचा दो इतनेमें परमेश्वरी की सब सहेलियां भी आ पहुंची बात की बात में सब असबाब नये घरमें पहुंच गया परमेश्वरी

बहुत आनन्दसे नयेघरमें आकर बसीतीनदिन तक दोनोंवक्त परमेश्वरी दत्तकी माताने पूरी तरकारी खानेको भेजी चौथे दिन परमेश्वरी दत्तने बीबी से कहाक्यों साहब अब कुछ खाने का बन्दोबस्त शुरूअहो बीबीने जवाबदिया सबअसबाब अभी बेठिकानेपडाहै यह रखजायेतो फराग़त से हंडियां चूल्हेको देखूं अभी तो मुझको सावकाश नहीं गरज़ सात दिन तक बाज़ारसे पूरी मिठाई मंगवाते और दोनोंमियां बीबी खालेते परमेश्वरी दत्तने आख़िर रोज़ २ तक़ाज़ा करके बीबीसे खाना पकवाया बीबीने कभी खाना पकाया न था रोटी पकाई तो अजब सूरत की न गोल न चौखुटी एक कान इधर निकला हुआ और चारकान उधरकिनारे मोटे बीचमें टिकियाकहीं जलीकहीं धुयेंमें काली और दाल जो पकाई तो पानीअलग दाल अलग गरज़ बीबी ने ऐसा अच्छा खाना पकाती थी कि जिसको देखकर भूख भाग जाय दो एक दिन तो परमेश्वरी दत्तने सबरकिया आख़िरको उसने अपनी माके घरका खाना शुरूअ करदिया बीबी ने भी अपने आराम का टिकाना कर लिया दोनोंवक्त बाज़ारसे कचौरियां पूरी बरफ़ी मलाईमंगा-कर खालियाकरती थी खाना जो पकता भोंदूकुंजड़ेकी बेटी चुनियां और बख़्शूगन्धीकी लड़की जुल्फ़न वगैरह खालेतीं परंतु दसरुपये महीने में यह चखोतियां क्योंकर होसकी हैं चुपके चुपके असबाब बिकने लगा परमेश्वरी दत्त को इसकी ख़बर भी न हुई एक दिन परमेश्वरीदत्त नौकरी पर गया था बीबी दो पहरको सोगई थी चुनियां कुंजड़िन जोआई उसने देखा बहू बेख़बर सोरही है उसने अपने भाई पीरूको ख़बर करदी वह बड़ाचोर और बदमाशथा बहूतो सोतेकी सोती रही पीरू आकर दिन धारे तमाम बरतन चुरा कर लेगया बहू उठी तो देखा घरमें भाड़ूदी हुई है कोठरी में तालालगा हुआ था उसका असबाब तो बचा बाक़ी जो चीज़ ऊपर थी एक २ करके चोर लेगया था अब पानी पीनेतक को गिलास न रहाथा परमेश्वरीदत्त नौकरीपरसे आया तो सुनकर बहुत

उदास हुआ परंतु अब पछताये क्याहोताहै चिड़या चुनगईं खेत बीबीसे खूबलड़ा और खूबसिरपीटा आखिर तो धोकर बैठरहा कर्ज दाम करके हलकी हलकी दो डेगचियां मोल लाया छोटे बरतन मासे मांगलिये परात तशा ताली मास ने भेज दी गरज इसी प्रकार काम चल निकला संयोग से एक कुटनी भी उनदिनों इस शहरमें आई थी और तमाम शहर में उसका गुल था परमेश्वरीदत्त ने भी बीबीसे कह दिया था कि अजनबी स्त्रीको घरमें मत आनेदेना इनदिनों एक कुटनी आईहुईहै कईघरोंको लूटचुकीहै परंतु बीबी निहायत मूर्ख और ना समझ थी उसकी प्रकृतिथी हरएकमें जल्दमिलजाना एकदिन वही कुटनी भगतिनका भेषबनाये उसगलीमें आई यह भगतिन मूर्ख स्त्रियोंके बहलाने के हेतु अनेकप्रकार की वस्तें और बहुतसी दवायें अपने पासरखती थी गलीमें आकर जो इसने अपनी दूकान खोली तो बहुतसी लड़कियां इकट्ठा होगईं परमेश्वरीने भी सुना चुनियां कुंजड़िनसे कहा जबभग-तिन गली से उठने लगे तो यहां लिवालाना हम भी उसकी चीजोंको देखेंगी चुनियां जाखड़ीहुई और भगतिनको लिवा लाई परमेश्वरीने बहुत आवभगत से भगतिन को पास बिठ-लाया और सब वस्तेंदेखीं सुरमा व संगयशबकीतखती पर-मेश्वरीने पसंदकी भगतिनने परमेश्वरी को बातोंमें टालिया कि यह स्त्री ढब पर जल्द चढ़ जायगी एक पैसा का बहुत सुरमा तौलदिया और दोआने का संगयशब की तखती दी और फीरोजेकी अंगूठी मुफ़्तदी परमेश्वरी रीझगई भगतिन ने समुद्र का हाल द्वारिकापुरी और रामेश्वर और जगन्नाथ की कैफ़ियत और दिल से जोड़कर दो चार बातें ऐसी की कि परमेश्वरी ने बहुत प्रीतिसे सुनी भगतिनने पूछा कि क्यों बी तुम्हारे कोई बालबच्चा नहीं परमेश्वरी ने आह खींचकर कहा कि हमारे ऐसे भाग कहां थे भगतिनने पूछा ब्याहको कितने दिन हुये परमेश्वरी ने कहा कि अभी वर्ष दिन भी नहीं हुआ परमेश्वरी के यहानना ... अब तो भगतिन को

निश्चयहुआ और दिलमें कहने लगी इसने संतान का नाम सुनकर ऐसी आह खींची जैसे कोई बर्षों का उम्मैदवार हो भगतिनने कहा ना उम्मेदीकी बात नहीं है तुम्हारे तो इतने बच्चे होंगे कि तुम सम्हाल न सकोगी अलबत्ता इससमय अकेले घरमें जी घबड़ाताहोगा फिर भगतिन ने पूछा मियांका क्या हालहै परमेश्वरी ने कहा सदा मुझसे नाराज़ रहा करते हैं ग़रज़ पहिलेही मुलाक़ातमें परमेश्वरी नेभगतिनसे ऐसी बेतकल्लुफ़ी की कि हाल बिलकुल उससे कह दिया भगतिन ने बातों २ में तमाम भेद मालूम कर लिया एक पहर भगतिन बैठी रही इसके पीछे बिदा होनेलगी परमेश्वरी ने बिनती की और कहा भगतिन अब कब आओगी भगतिन ने कहा कि मेरी भानजी चौकमें एक घरमें ब्याहीहै इनदिनों बहुत रोगितहै उसको बीमारी की ख़बर सुनकर मथुरासे इलाज करनेके हेतु आईहूं उसके दवा दरमनसे मुझको फ़ुरसतकम होतीहै तिसपर भी अगर परमेश्वर ने चाहा तो दूसरेतीसरे आन तुमको देखजायाकरूंगी अगले दिन भगतिन फिर आ मौजूदहुई और एक रेशमी इजारबन्द लेतीआई परमेश्वरी दूरसे भगतिन को आतेदेख आनन्द होगई और पूछा इजारबंद कैसा है भगतिन ने कहा बिकाऊ है परमेश्वरी ने पूछा कितनेकाहै भगतिनने कहा चारआनेका चौकमें एक महाजनकी स्त्री रहती है उसका पुरुष मरगया है अकेलीहै और अब ग़रीबहोगईहै असबाब बेंच२ कर गुज़र करतीहै बहुत चीजें मैं उनकी बेचलादिया करतीहूं परमेश्वरी इतना सस्ता देखकर लोटहोगई तुरंत पैसे निकाल भगतिनके हाथ दिये और बहुत गिड़गिड़ा कर कहा कि जो अच्छी बस्तु बिकाऊ हुआ करे पहिले मुझको दिखालिया करो भगतिन ने कहा बहुतअच्छा पहिले तुम पीछे और उसके पीछे इधरकी बातें हुआ कीं चलते हुये भगतिन ने एक बटुआ निकाल उसमें एक डबियाथी डबिया के अन्दर काग़ज़ की पुड़िया में थोड़ी लौंगें थीं उनमें से दो लौंगे परमेश्वरी को दीं और कहा कि

संसार में प्रीति इसी हेतु हुआ करती है कि एकको दूसरे से लाभ होवे लौंगै मैं तुमको देतीहूं एक तो तुम अपनी चोटी में बांधलो दूसरी बेहतर था कि तुम्हारे स्वामीके पगड़ीमें रहती तुम्हारे स्वामी कदाचित् संदेहकरें खैरतकियेमें सींदो और उनका प्रभाव आजही से देख लेना परंतु इतनी एहतियाज करना कि पाक साफ़ जगह में रहे और अपने डौलके मुवा-फ़िक एक तागा मुझको नापदो मैं तुमको एक गंडा बनवा लादूंगी जबमैं द्वारिकापुरीकोगईथी तो उसजहाज पर जिस पर मैंचढ़ी थी जैपुर नगरीकी रानीभी सवारथी शायद तुमने उनका नाम भी सुनाहो गंगारानी उनका नाम था सब कुछ उनको परमेश्वरनेदे रक्खा था धनकी कुछगिनती न थी नौकर चाकर लौंडी गुलाम पालकी नालकी सभी कुछ था एक तो संतान न होनेसे उदास रहा करती थीं दूसरे राजा जी को उनकी कुछप्रीति नथी शायद पुत्र न होनेके कारण कुछप्रीति न करतेहों लेकिन रानी रूपस्वरूपमें चांद सूर्य्य के समान थी और इससुन्दरताई और धनपर मिज़ाज ऐसा सादा कि हम ऐसे नाचीजोंको बराबर बैठाना और बात पूछना रानीको फ़-कीरोंसे बहुतप्रीति थी एकदफ़ा सुना कि तीन कोसपर उनके घरसे कोई फ़कीर आयाहै अपने घरसे उठकर नंगेपांव उसके पास रातको गईं और पहरभर तक हाथजोड़े खड़ीरहीं एक मर्तबा जोशाहजीने आंखउठाकरदेखा कहा जामाई रातको हुक्मबिलेगा रातको रानीने सपने में देखा कि कोई कहता है कि द्वारिकापुरी में जाओ वहांसे मुराद मिलेगी सबेरे से उठकर रानी ने द्वारिका जाने की तैयारी शुरूअ की यहां से गरीबों को अपने पाससे खाना और किरायो सवारी का देकर अपने साथ लेगई उनमेंसे एक मैंभीथी हरघड़ीकेपास रहने से रानी मुझपर बहुतदयाकरनेलगी और सहेली कहा करती थी किनारे समुद्रके जब पहुंची जहाज किराये किया और सब सवारहोकर द्वारकापुरीमें पहुंचे द्वारकापुरीमें सब मन्दिरों को रानीने सबसमेत दर्शनकिया और बड़ाभण्डारा

किया थोड़े दिन पीछे सुना कि द्वारिकापुरी से दश कोश पर एक ऊंचे टीलेपर एक योगी रहता है जो गयासुराद लेकर आया सो रानीभी पांच सहेलियों सहित कि जिसमें से एक मैंभी थी उसटीलेके ओर रवाना हुई जबउस टीलेके नजदीक पहुंची तो देखा कि चारों ओर झाड़ी झंखार है और बहुत अच्छी सुगन्ध उसमेंसे आरही है जब चलते २ टीलेपर पहुंची तो देखा कि योगी अकेले एकगड़हेमें रहतेहैं बहुत अच्छा स्वरूपहै योगीने हमसबको देखकर आशीर्वाद दिया और रानीको बारह लौंगे फूंक कर दीं और मुझसे कहा चलीजा मथुरा आगरेमें लोगोंका काम बनायाकर बेटीउन बारह लौंगोंमेंसे ये दो लौंगेहैं द्वारिकापुरी का तीर्थयात्रा करके रानी रामेश्वरके दर्शनको गई और वहांसेजगन्नाथजी के दर्शनकरके घरकी ओर लौटीं तो राजा या तो रानीकी बात न पूछतेथे या यहनौबत हुई कि एक महीने आगे से आकर प्रयागमें पड़ेथे ज्योंही रानीप्रयाग में पहुंची राजा ने रानीके कदमोंपर शिर रखदिया और रानीसे रो २ कर अपराध क्षमाकराया और घरकोलेगये छ:वर्षतक मैंरानीकेपास रही इसबीचमें योगीकेआशीर्वादसे लगातार ऊपर तलेचार बेटे मेरे रहनेतक रानीके होचुकेथे फिर मुझको अपना देश याद आया रानीसे छुट्टी मांगी रानी ने बहुतसा रोका मैंने कहा योगी ने मथुरा आगराके लोगोंकी टहल वो सेवा मेरे सिपुर्द की है इसलिये मुझे वहांजाना अवश्यहै यह सुनकर रानीने लाचार मुझको बिदा किया और चार लौंग दीं यह कहानी सुनकर परमेश्वरी तन मन से भगतिन की मुअतक़द होगई भगतिन तो लौंगे देकर बिदा हुई परमेश्वरी ने नहाकर कपड़े बदलकर सुगन्धलगा एकलौंग तो परमेश्वर का नामलेकर अपनी चोटीमें बांधी और मियांके पलंग की चादर और तकियोंका ग़िलाफ़बदल एकलौंग किसीतकिये में सींदी परमेश्वरीदत्त जोघरमेंआया तो बीबीकोदेखा साफ़ सुथरेपलंगकी चादर [illegible] और प्यारसे

बात करनेलगा बीबीने कहा देखो आजहमने एक चीजमो-
ललीहै यह कहकर इजारबन्द दिखाया परमेश्वरीदत्तने कहा
कितनेको लिया है बीबीने कहा तुम आंको कितनेका है वह
इजारबन्द खासलाहौरका बनाहुआथा निहायत अच्छा था
कलाबतून के गुच्छे दोनों किनारे लगेहुये थे परमेश्वरीदत्त ने
कहा दोरुपये से किसीप्रकार कम नहींहै बीबीनेकहा चार
आने को लियाहै परमेश्वरीदने कहा सचकहो बीबी ने कहा
तुम्हारे शिरकी सौगन्ध चारही आनेकोलियाहै परमेश्वरी ने
कहा एकभगतिन बड़ी नेकहै बहुतदिनोंसे इसगलीमें आया
करती थी किसी महाजनकी स्त्रीकाहै वह बेचने को लाई थी
यह कहकर सुरमा व संगयशव की तखुती फीरोजा की अं-
गूठी परमेश्वरी ने दिखाई लालच ऐसी बुरी बला है कि बड़ा
सयाना आदमी भी इससे धोखा खाजाता है जंगली जानव
मैंना तोता लाल बुलबुल आदमीकी शकलसे भागतेहैं तुरंत
दाने केलालच से जालमें फंसजाते हैं और जन्मभर पिंजड़े में
कैद रहतेहैं इसीतरह परमेश्वरीदत्तभी अपना लाभ देखकर
आनन्दहुआ फिरपरमेश्वरीनेकहाकिवह भगतिन महाजनकी
स्त्रीकीसंपूर्णवस्तु जोबिकने निकलेगी मेरे पास लानेका वादा
करगईहै परमेश्वरीदत्त ने कहा अवश्य देखना चाहिये परंतु
ऐसानहो कि चोरीकामाल हो पीछे खराबी होय और भग-
तिन कोई ठगनीनहो परमेश्वरी ने कहा कि भगवान २ करो
भगतिन ऐसी नहीं है परमेश्वरीदत्त से जो आज ऐसी बातें
हुईं उसको बीबी को लोगोंपर विश्वास होगया दूसरे दिन
चुनिया कुंजड़िनको भेज भगतिन को बुलवाया आज परमे-
श्वरी बेटीबेनी और भगतिन को माता बनाया रातके समय
परमेश्वरीदत्तसे फिर भगतिन का चर्चा हुआ तब परमेश्वरी
दत्तनेकहा कि देखो होशियाररहना इसभेषमें दूतियां और
ठगनियां बहुतहुआकरतीहैं परंतु लालचने परमेश्वरीदत्तकी
बुद्धिपर ऐसापर्दा डालदियाथा कि इतनी मोटीबात उसनेन
समझी कि दोरुपयेका माल चारआने को कोई बेप्रयोजन

देताहै परमेश्वरीदत्तको उचितथा कि उसभगतिनके आनेको मनाकरदेता और सबवस्तु उसकी फिरवादेता परमेश्वरीको तो इतनाज्ञानही नहीं था कि इसबातको समझती कई दिन पीछे परमेश्वरी ने भगतिन से पूंछा क्यों भगतिन आन कल्ह के ई वस्तु नहींलाती भगतिन ने जानलिया कि इसको अच्छी चाटलगगई है कहा तुम्ह देढवकी कोई वस्तु मिलेतो लाऊं कईदिन पीछे झूठेमोतियोंकी एकजोड़ीलाई और कहालो बीबी ये महाजन की स्त्रीके नथके मोतीहैं ननानों हजार की जाड़ीहै या पांचसौकी रामदयाल जौहरीको मैंने दिखाई थी दोसौमेरेरुपये पल्ले बांधे देताथा मैं महाजनकी स्त्रीसे पचास रुपयेपर लाईहूं तुमलेलो फिर ऐसासच्चामाल नमिलेगा पर॰ श्वरीने कहा पचासरुपये तो मेरेपास नहींहैं भगतिननेकहा क्याहुआ बेटी पहुंचियां बेचकर लेलोनहींतो आजये मोती बिकजांयगे भगतिनने इसढबसेकहा कि परमेश्वरी तुरंतगहने का संदूक उठालाई और पहुंचियां निकाल भगतिन कोदीं भगतिन ने परमेश्वरी का गहना देखकर कहा कि अयहय कैसी बुरी तरह गहना सुलीग:जर के समान डाल रक्खा है बेटी धुकधुकी में डोरा डलवाओ बाली पत्ते मगर मुरकियां बाजूबन्द मैले चीकट होगये हैं मैल सोनेको खाये जाता है इनको उजलवाओ परमेश्वरीने कहाकौनडोरा डलवावै कौन उजला करालाये उनसेकहतीहूं तो कहतेहैं मुझे मावकाश नहीं भगतिनने कहा जईबेटी कौनवड़ा कामहै मोतीरहने दो अभी मैं डोरा डलवालाऊं और जो गहना मैला है मुझे निकालदो मैं अभी उजलवादूं परमेश्वरीने सब गहना सौंपि दिया भगतिनने कहा सुंगियामहरीको भी मेरेसाथ करदो वह सुनारके पास बैठी रहैगी मैं पटुवासे डोरी डलवाऊंगा परमेश्वरीने का अच्छा यह कहकर सुंगिया को आवाजदी वह आईतो भगतिनने कहा मेरे साथचल सुनार की दूकान परबैठी रहियो भगतिनने गहनालिया सुंगिया साथहुईगली से बाहर निकल भगतिनने हमालखोला और सुंगियासेकहा

लाओ उजलवाने का अलग करके और डोरा डलवाने का अलग गहनेको अलगकरते २ भगतिन बोली अयेनाककी लौंग कहांहै मुंगियाबोली इसीमें होगी जराभरकी तेचीजहै इस पोटलीमें देखो फिर आपहीआप बोली अय हय पानदान के ढकनेपर रहगईहै अरी मुंगिया दौड़ियो जल्दीसे लेआ मुंगिया भागी २ आई और दरवाजे में से चिल्लाई बीबी नाक की लौंग पानदान के ढकनेपर रहगई है भगतिन ने मांगी है जल्दीदो भगतिन गलीके नुक्कड़पर मोहनबनिये की दूकानके आगे बैठीहै यहकहना था कि परमेश्वरी का माथा ठनका मुंगियासे कहा बाउलीहुईहै कैसी लौंग मेरेपास कभी तूने देखी है अरी जल्दीदौड़ कहीं भगतिन चली न जाय मुंगिया उलटेपाओं दौड़ीगई भगतिनको इधरदेखा उधर देखाकहीं पता नथा परमेश्वरीसेआकरकहा बी भगतिन कातोकहींपता नहींबाजार तक देखआई इतनी देरमें नहीं मालूम कहां गुम होगई यहसुनकर परमेश्वरीकहनेलगीहाय मैंलुटगई हायमैं लुटगईअरेलोगो परमेश्वरकेलिये दौड़ियो चौकतक लोगदौड़े वहांजाकर प्रकटहुआ किकहींसेबहतीबहाती महीनेभरसे कि रायेपर आकर रही चारदिनसे मकानछोड़ चलीगई अब क्या होसक्ताथा परमेश्वरीदत्त ने आकरसुना शिरपीटा और जोरू से कहा अरी तू घरको मटिया मेल करके छोड़ैगी मैं तुझको पहिलेसे जानताहूं जोरूने कहा चल दूरहो अबबातें बनाने खड़ा हुआ इजारबंद देखकर तूने आय मुझसे नहीं कहा कि हां महाजन की स्त्रीका सबअसबाब अवश्यदेखना इस विधिसे अच्छे प्रकार की लड़ाई दोनों स्त्री पुरुष में हुई तमाम मुहल्ला इकट्ठाहोगया बात २ पर चली तो प्रकटहुआ कि इसीभगतिन ने कंधारीबाजार से लाला गुलजारीमल की जोरूका तमाम गहना इसबहानेसे ठगलिया कि एक फकीर से टूना करालाढूंगी रानी कटरामें जवाहरमल महाजनकी बेटीसे ऐसीप्रीतिबढ़ाई कि उसका गहना मंगनीके बहाने से उड़ालेगई गहनातो इस प्रकार पर गया बरतन पहले चोरी

जाचुकेथे हजाररुपये की मोतियोंकी जोड़ीजो लोगोंने देखी सो तीनपैसेकीथी थानामें इत्तिला हुई लोगोंने बहुत ढूंढा मगतिलका पतानमिला परमेश्वरीके दहेजमें जो कपड़े मिले थे अब उनका हाल सुनिये जब तक परमेश्वरी सास के साथ रही सास हफ्ते पंद्रहवें दिन निकालकर धूपदेदिया करती थी मुकद्दम बरसात में परमेश्वरी अलग हो कर रही कपड़ों का संदूक जिस कोठरी में जिस प्रकार रक्खा गया था तमाम बरसात गुजरगई उसी विधि रक्खा रहा जाड़े के मुकद्दम में दुलाईकी जरूरत हुई और संदूक खोला गया बहुतसे कपड़ों को दीमक चाटगईथी चूहोंने काट २ बगारें डालदिये थे कोई कपड़ा साबित नहीं बचनेपाया जोलड़कियां छुटपनमेंलाड़दुला- रसे रहाकरतीहैं और गुनढंग नहीं सीखतीं परमेश्वरीकीतर- हयोंजन्मभरक्लेश और दुखभोगतीहैं परमेश्वरीकाहालजितना तुमनेपढ़ाउससे तुमकोप्रगटहुआ होगा कि परमेश्वरीकोमाता औरनानी के लाड़ने उसको जन्मभर कैसे क्लेशमें रक्खा लड़क पनमें परमेश्वरीने न तो कोई गुण सीखा नकुछ उसके मिजाज की दुरस्तीहुई जब परमेश्वरीने साससे अलगहोकर घरकिया बरतनभांडा वस्त्र,भूषण सबकुछ उसकेपासथा परंतुगृहस्थी करनेका ढंग नहीं जानती थी थोड़े दिनमें तमाम असबाब माल मिट्टीमें मिलादिया और एकहीबर्षमें हाथकान सेनंगी रहगई अगर परमेश्वरीदत्त भी उसकी तरह बुद्धि हीन और बदमिजाज होतातो याबदएकदूसरेसे जुदाईहोजाती परंतु परमेश्वरीदत्त ने नीतिबुद्धि और भलमंसी को बरता॥

सरस्वती का वृत्तान्त ॥

अबसरस्वतीका वृत्तान्तसुनो वहपुत्रीउसघरमें ऐसीथीजैसे बागमें गुलाबका फूल यामनुष्यके शरीरमें जैसे हर एकप्रका- रका गुण और ढंग उसकोप्राप्त था बुद्धिगुण धीर्यलाज सब बात परमेश्वरने सरस्वती कोदीथी लड़कपन से उसकोखेलकूद औरहंसी औरछेड़से नफ़रत थीपढ़ना याघरकाकार्य करना कभीउसको किसी ने ... किसीसे लड़ते नहीं

इ खा महल्ले की जितनी स्त्रियां थीं सब इसको पुत्री के समान जानती थीं क्या अच्छे भाग्य उस माता पिता के थे जिसकी बेटी सरस्वती थी और क्या अच्छे नसीब उस घर के जिस में सरस्वती बहू बन कर जाने वाली थी अब परमेश्वर की कृपा से सरस्वती की अवस्था तेरह वर्ष की हुई बात तो इसकी अम्बिकादत्त से ठहरी ठहराई थी अब चर्चा होने लगा कि सहौना और दिन ठहर जावे उधर अम्बिकादत्त की माता परमेश्वरी के ढंग देख इतना डर गई थी मसल है कि दूध का जला मट्ठा फूं कर पीता है परमेश्वरी की सूरत से बदन पर रोंगटे खड़े होते थे इसलिये अम्बिकादत्त की माता का इरादा था कि छोटे लड़के की मंगनी दूसरे घर में करूं परमेश्वरी दत्त को किसी प्रकार यह बात मालूम हुई इसने माता से कहा अम्मा मैंने सुना है कि तुम अम्बिका दत्त की मंगनी छुड़ाया चाहती हो माता ने कहा क्या बताऊं बेटा बड़े सोच में हूं क्या करूं क्या न करूं तुमसे मेरी आंख सामने नहीं होती मुझको परमेश्वर ने तुम्हारा अपराधी बना दिया देखिये अम्बिका दत्त के भाग्य कैसे हैं परमेश्वरीदत्त ने कहा अम्मा परमेश्वर की सौगन्ध सरस्वती हजार लड़कियों में से एक है जन्म भर दीवा लेकर ढूंढ़ोगी तो सरस्वती की सी बहू न पाओगी गुण रूप दोनों परमेश्वर ने उसको दिये हैं कुछ डर न करके ब्याह कर डालो और उसकी बड़ी बहिन पर ध्यान मत करो हरएक का स्वभाव और एक की प्रकृति अलग २ होती है ब्याह के बाद तुमको मेरी बात का विश्वास हो जायगा परमेश्वरीदत्त ने जो बहुतसी स्तुति सरस्वती की की तो उसकी माता राजी हो गई और जो मंगनी पहिले ठहरी थी वह पक्की होगई गरज दोनों समधियानों के सलाह से यह बात ठहरी कि फा॰ गुणसुदी दशमी को ब्याह होजावे सरस्वती का बाप देवीदत्त कांगड़े के जिलअ में तहसीलदार था उसको चिट्ठी भेजी गई चिट्ठी के पहुंचने से वह बहुत आनन्द हुआ क्योंकि सरस्वती को सब बच्चों में बहुत जानता था परंतु छुट्टी की अर्जी भेजी तो छुट्टी नहीं मिली छुट्टी न मिलने से बहुत [illegible] क्या करता चुपहोकर

बैठरहा और अपने बड़े बेटे ईश्वरीदत्तको पांचसौरुपये देकर घर बिदा किया घरपर गहना बस्त्र बरतन सबपहलेसे मौजूद था घरपर पहुंचकर चावलघी गेहूं मसाला नमक और वस्तु ईश्वरीदत्तने मोलली ब्याहकीतैयारी होनेलगी माताका इरादाथा कि सरस्वती की बड़ीबहिनसे वह चढ़कर दहेज मिले जोड़े भी इसकेभारी हों गहनेके अदद भी अधिक हों बरतन भी दहेजके गढ्ये २ दियेजांय सरस्वती तो उसीघर में रहती थी जो बातहोती उसको अवश्य मालूमहोजाती जबसरस्वती ने सुनाकि मुझको दीदीसे अधिकदहेज मिलनेवालाहै अज्ञानी लड़कीहोती तो प्रसन्नहोती पर सरस्वतीको दुःख हुआ और इसचिन्तामें हुई कि किस प्रकारसे माताको मना करूं अन्त को जयजयवन्ती अपनी मौसेरी बहिनसे खिसियाते २ कहा कि मैंने ऐसा २ सुना है मुझको इसकाबड़ासोच लगाहै कई दिनसे बड़ी चिन्तामें थी कि परमेश्वर क्या करूं अच्छा हुआ तुमआगई हमजोलीके कारण तुमसे कहतीहूं संकोच नहीं कोई अम्माको इतनीबात समझादे कि मुझको दीदीसेअधिक दहेजनदे जयजयवन्तीने सुनकर कहातुमतो कोईतमाशे की स्त्रीहो वही कहावत है गधेको लोनदिया उसने कहा मेरी आंखें दुखती हैं भगवान दिलवाता है तुम क्यों इनकार करो सरस्वतीने कहा तुमदीवानी हो इसमें कईबुराइयांहैं दीदीके रंजहोगा नाहकमातासे खभावसे तुमवाक़िफहो उनको ज़रूर रंजहोगा नाहकमातासे बदमज़गी होगी मुझसे भी उनको बदगुमानी होगी जयजयवन्तीनेकहा बुवाइसमें रंजकी क्या बातहै अपना २ भाग्य है और समझनेको तरह२की बातेंहैं बादशाहीके उनको क्या २ नहीं दियागया उसकी कसरइधर समझलो सरस्वती ने कहा सचहै परंतु नामतो दहेजकाहै कि छोटेको अधिक मिलेगा तो बड़ेको रंजहोगा एक महल्लेका रहना रोजका मिलना मिलाना जिसबातसे दिलोंमें फ़र्कपड़े क्यों कोजाय जयजयवन्ती ने कहा बहिननाहक तुमअपनी हानि करतीहो अभी महीने दो महीनेमें सबभूल बिसरजायगी सरस्वतीने कहा अरीबहिन

भगवान२ करो हानि लाभ कैसा कहीं माता पिताके देनेसे पूरी पड़तीहै या दहेजसे जन्मकटताहै परमेश्वर अपनी कृपासे दे तुम इसबातमें हठमत करो नहीं मैं कुछ दूसरा यत्न करूं मुझको किसी प्रकार मंजूर नहीं है गरज कि थोड़े अरसे में सरस्वतीकी माताके कानतक यहबात पहुंचगई और वह भी कुछसोच समझ अपनेइरादे से बाज रही और मनमें कहने लगी देनेके सौठवहैं दूसरीजगह समझलूं गी गरजकि फागुन सुदी दशमीको व्याहहोगया ईश्वरीदत्त अकेलेने अच्छे विधि बहिनका ब्याहकिया और बराती सबराजी और प्रसन्नरहे जबसरस्वतीके विदाका समयपहुंचा सबपर सदमाथा माता तो सरस्वतीके वियोगसे बेसुधि होगई थी बिरादरी की बहू बेटियोंकी यहदशाथी कि सरस्वतीको गले लगा२ कररोती थीं और सबकेमनसे आशीर्वाद निकलताथा सरस्वतीइनसब आशीर्वादोंका बड़ाभारी दहेजलेकर ससुरालमें पहुंची स-सुरालकी जो रीति वरताथी वहससुरालमें हुई आगेचलकर तुमकोमालूम होगा कि सरस्वतीने गृहस्थीको किसविधि से सम्हारकिया क्या मुश्किलें उसकेआगेआईं और उसनेअपनी बुद्धिसे क्योंकर उसको दफा किया जरा सरस्वती के बरताव को परमेश्वरीके बरतावसेमिलाना चाहियेकि सरस्वती माता की दूसरी बेटी और सासकी दूसरी बहू थी दोनों ओर की अर्थात परमेश्वरीके व्याह में निकलचुके थे परमेश्वरी सोलह वर्षकी व्याहीगई थी और सरस्वती व्याहके समय पूरे तेरह वर्षकी न थी जब परमेश्वरीका व्याहहुआ उसकादूलह पर-मेश्वरीदत्त दशरुपये का नौकर था और सरस्वती का दूलह अम्बिकादत्त अभीपढ़ताथा अम्बिकादत्त परमेश्वरीदत्त के ब-निस्बत कमदूलह कासमझाथा परमेश्वरीको दो वर्षतक बाल बच्चोंके बखेड़े से छुट्टीरही और सरस्वतीको परमेश्वरने व्याह के दूसरेवर्ष छोटीसी अवस्थामें माताबनादिया पस सरस्वती की दशा परमेश्वरीके सामने अच्छी न थी परन्तु सरस्वती को छुटपन से तालीमहुई थी रोज रोज घर में बरकत विशेष

होतीजाती थी यहांतक कि परमेश्वरीका नामभी कोईनहीं जानता और कांधारी बाजारमें सरस्वती का वहमहलखड़ा है कि आकाश से बातें करता है सांधीटोले में वह ऊंचा मन्दिर जिसमें हौज व कुआं है सरस्वती का बनवाया हुआ है प्रयागमें एकधर्मशाला इसीसरस्वतीका बनवायाहुआ है जिसमें दोसौ अभ्यागत संन्यासीको भोजन मिलताहै काशी में एक पाठशाला संस्कृत की बनवाई है जिसमें विद्यार्थियों को भोजन वस्त्र पुस्तक पाटी मिलतीहैं जबईश्वरीदत्त ने अपने बापको इत्तिलाकी कि परमेश्वरकी कृपासे विधिपूर्वकसरस्वतीका बिवाहहोगया तो बापने परमेश्वर का धन्यवादकिया परन्तु बेटी की जुदाईका रंज बहुतदिन तक रहा सरस्वती के ब्याह होने पीछे उसके पिता देवीदत्तने जो चिट्ठी उसको लिखी वह चिट्ठी भी देखने योग्य है ॥

चिट्ठी देवीदत्त की ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीविनी बेटीसरस्वतीको देवीदत्तका आशीर्वाद तुम्हारेभाई ईश्वरीदत्तकी चिट्ठीसे समाचार तुम्हारेबिदा होनेका मालूमहुआ वर्षों से यह अभिलाषा मेरेहृदयमेंथी कि यह काम मैं अपनेहाथ से करूं परन्तु हाकिम ने छुट्टी नदी इस वजहसे लाचारहुआ यहबात तुमको मालूमहोगी कि सबबच्चों से अधिक मुझको तुमसेप्रीतिहै यह प्रीति इस कारणसे थी कि तुमने अपनीसेवा और टहलसे आपमेरेऔर सबकेजीमें जगह करलीथी आठवर्षके सिनमें तुमने मेरेघरका कुलबोझा अपनेशिरपर उठारक्खा था मुझको सदा यहबात प्रगटहोती रही कि तुम्हारेसबबसे तुम्हारी माताको बड़ीनिश्चिन्ती और सुखप्राप्त था जबकभी इसअर्सेमें मुझको घरजाने का संयोगहुआ तुम्हारा बन्दोबस्त देखकर सदामेराजी प्रसन्नहुआ अब तुम्हारेबिदा होजानेसे ऐसीहानिहुई किउस का बदला शायद इसजन्म में नहींमिलसक्ता परमेश्वर तुमको इसका अच्छा फल देवे और उस सेवा करने के बदले में तुम पर मेरे आशीर्वादों का [illegible] ईश्वरीदत्त की

चिट्ठी से मुझको यह भी मालूम हुआ कि तुमने परमेश्वरी से अधिक दहेज नहीं लेनाचाहा इस्से तुम्हारी बड़ी आली हिम्मती साबित होती है मैं उसका बदला भेजता हूं वह यह चिट्ठी है इसको तुम दस्तूरुलअमल के समान अपने पास रक्खो इन शिक्षों पर साधना करो कि जो इस चिट्ठी में लिखी हैं तो हरएक क्लेश तुम पर सहज होगा और सदासुख से टेर करोगी समझना चाहिये कि ब्याह क्या चीजहै ब्याह सिर्फ यही बात नहीं है कि रंगीन कपड़े पहने और मेह-मान जमाहुये और वस्त्र और भूषण दान दहेज पाया बल्कि ब्याहसे नई सृष्टि होतीहै नये लोगों से मामिला करना नये घरमें रहना पड़ताहै जिसप्रकार पहले पहल बछड़ों पर जुआ रक्खा जाताहै आदमी के बछड़ों का जुआ ब्याह है ब्याहके पीछे लड़की जोडू बनती लड़का खसम बना इसके यही अर्थ हैं कि दोनोंको पकड़कर संसाररूपी गाड़ीमें जोतदिया अब यह गाड़ी मरने तक इनको खींचनी पड़ेगी पस बेहतर है कि मनको दृढ़करके भारी बोझको उठावै और जन्मके दिन जितनेहों इज्जत आबरू बनाव मेलसे काट दियेजांय वरना लड़ाई भिड़ाई झगड़े बखेड़े गुलगपाड़ा से संसारकी मुसीबत और भी अधिक क्लेश देने वाली होती है अब तुमको अय मेरी दुलारी बेटी सोचना चाहिये कि स्त्री पुरुषमें परमेश्वर ने कितना अन्तर रक्खा है स्त्री को परमेश्वर ने अवश्य पुरुषके आनन्द के हेतु उत्पन्न कियाहै स्त्री को चाहिये कि पुरुष को प्रसन्न रखना अफ़सोस है कि संसारमें कमी कम स्त्रियां इस फर्जको पूरा करती हैं मर्दों का दर्जा परमेश्वर ने स्त्रियों पर ज्यादा किया न सिर्फ जबानी हुक्म देनेसे बल्कि मर्दों के शरीर में अधिक बल और उनकी बुद्धि में अधिक प्रकाश है संसारका बंदोबस्त पुरुषों के ज्ञानसे होता है पुरुष कमाने वाले और स्त्रियां उनकी कमाईको अच्छेप्रकारसे बर्तनेवाली और उसकी निगहबान है कुनबा समान नौकाके है और पुरुष उसके मल्लाह हैं अगर मल्लाह न होवै नौका पानीकी

लहरोंमें डूबजायगी या किसी किनारेपर टक्कर खाकर फट पड़े कुनबा में अगर पुरुष बंदोबस्त करनेवाला नहीं तो उसमें अनेक प्रकारकी खराबियां पड़सक्ती हैं कभी नहीं खयाल करना चाहिये कि संसार में सुख और धन सम्पत्ति से प्राप्त होता है यद्यपि इसमें भी संदेह नहीं है कि दौलत अकसर सुखका कारणहोती है परंतु बहुत बड़े ऊंचे घरोंमें भी लड़ाई और झगड़े हम अधिक पातेहैं पस गृहस्थी में सुख केवल हेलमेल से होता है ग़रीब आदमियों को हम देखते हैं जिनकी आमदनी बहुत थोड़ी है दिनको मेहनत मज़दूरीसे जीविका पैदा करते हैं रात को सब मिलकर दाल रोटी से अपना २ पेट भरलेते और एक दूसरे के साथ खुश रहते हैं निःसंदेह ये लोग आपस के मेल जोल के कारण दाल रोटी और गाढ़े धोतर में अधिक सुखसे रहते हैं बनिस्बत उन राजों और रानियोंसे जो रात दिनकी लड़ाई झगड़े में क्लेश से रहतेहैं अयमेरीप्यारी बेटी मेलमिलाप को गनीमत जानो अबदेखना चाहिये कि हेलमेल किन बातोंसे पैदा होता है सो न सिर्फ़ इसबात से कि स्त्री अपने पति से प्रेमकरे वल्कि प्रेमकेसिवाय उसको पतिकाअदब भी करना अवश्य है बड़ी नासमझी है जो स्त्रीपतिको अपने समान समझें इस समय में स्त्रियोंने ऐसाबुरा दस्तूर अंगीकारकिया है कि जिसवक्तचन्द सहेलीआपसमें बैठकरबातें करतीहैं तोबहुधा यहबात होती है कि फ़लानीकापति उसकेसाथ इसप्रकारका बरतावरखता है एक कहतीहै किमैंने यहांतक उनको दबायाहै कि क्या ताक़तजो मेरी बातको काटैं और उलट कर उत्तर दें दूसरी बड़ाई मारती है जब तक घड़ियों चिरौरी न करें मैं खाना नहीं खाती तीसरी यह कहती है दशबार पूछते हैं तब मैं एक उत्तर मुशकिल से देतीहूं चौथी डींगको लेती है वह आप पहरों नीचे बैठे रहें परन्तु बन्दी को पलंग से उतरना सौगन्ध है पांचवीं कहती है की जो मेरी ज़बान से निकलता है उसको पत्थरकीलकीर रहती है शादी ब्याह में टोने

टाटके भी इसी हेतु से निकाले हैं कि मियां ताबेदार रहें कहीं ते। जूतीपरका काजलपारकर मियांके लगाया जाता है इसका प्रयोजन यह है कि जन्मभर जूतियां खाता रहै और चूं न करे कहीं नहा। लेवक्त अंगूठे के तले बीड़ा रक्खाजाता है और मियांको खिलाया जाता है कि पैरोंपड़तारहे इनबातों से साफ़ प्रगट है कि स्त्रियां पुरुषों का दबा और अख्तियार कम करनेपर रहती हैं लेकिन यह तालीम बहुत बुरी है इसका नतीजा बहुधा अच्छा नहीं होता पुरुषों को परमेश्वर ने सिंह बनादिया है अगर दबाव और जबरदस्तीसे कोई स्त्री इनको बस किया चाहे तो मुमकिन नहीं बहुत सहज उपाय इनको बसमें करने का खुशामद व ताबेदारी है जो ना समझ स्त्री अपना दबाव डालकर पुरुष को बस करना चाहती हैं वह धोखाखाती है और आदि से बीज विरोधका बोती है और फल उसका अवश्य क्लेश और दुःख होगा गोकि वह इसबात को अभी नहीं समझती सरस्वती मेरीसलाह यह है कि तुम बातचीत उठने बैठनेमें भी अपने पतिका अदब और लिहाज रखना क्या सबब है कि शादी ब्याह इन्हीं चाहों से होता है और चार दिन पीछे बहू से सास नन्दों का बिगाड़ शुरू हो जाता है यह बातभी सोचनेके योग्य है ब्याहके पहले लड़का मा बापमें रहा और सिर्फ़ उन्हीं के साथ उसको वास्ता था मा बापने उसको पाला और यह अभिलाष करते रहे कि बुढ़ापे में हमारे काम आवेगा ब्याहके पीछे बहू डोलीसे उतरतेही सोच करने लगती है कि मियां आजही मा बापको छोड़ दें इसलिये लड़ाई सदा बहुओं की तर्फ़से शुरू होती है अगर बहू कुनबे में मिलकर रहे और कभी सासको यह न मालूम हो कि यह बेटेको हमसे छुड़ाना चाहती है तो कदाचित् झगड़ा न पैदा हो यह तो सबकोई जानते हैं कि ब्याहके पीछे मा बापसे वास्ता थोड़े दिनका है आखिर घर अलग होगा स्त्री पुरुष जुदा होकर रहेंगे संसार में यही होता आया है परन्तु नहीं मालूम क्या ... की ... जल्दी

होती है कि जो कुछ होना हो इसी समय हो जाय बहुओं में एक टेव चुगली का होता है जिससे ज़्यादा झगड़ा होता है वो यह है कि ससुराल की तनिक २ बात आकर मा से कहा करती हैं और मायें आप खोद २ कर पूंछा करती हैं परन्तु इस कहने और पूंछने से सिवाय इसके कि लड़ाइयां पड़ें और झगड़े खड़े हों कुछ प्राप्त नहीं होता बाज बहू इस प्रकार की होती हैं कि ससुराल का कैसा ही अच्छा खाना और कैसा ही अच्छा कपड़ा न उनको मिले पर उनकी आंख तले नहीं आता ऐसी बातों से पति के चित्त को दुःख होता है सरस्वती इस से तुमको बहुत बचाव चाहिये और ससुराल की हरएक वस्तु का आदर करना चाहिये और तुमको सदा भोजन करके वस्त्र पहिनकर खुशी ज़ाहिर करना चाहिये जिससे मालूम हो कि तुमने पसन्द किया ससुराल में नई दुलहिन को इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि बेदिली से वहां न रहे अगर्चि जान पहचान न होने के सबब से अलबत्ता दूसरे लोगों में जी नहीं लगता है परंतु जी को समझाना चाहिये न यह कि रोती गईं वहां रही तो रोती रहीं जाने में देर नहीं हुई कि मैके जाने का तक़ाज़ा शुरू हुआ बातचीत में दर्जा औसत का ख़याल रखना चाहिये यानी न इतना कि खुद आप ही आप बकती रहे न इतना कि बिलकुल चुपचाप हो जावे बहुत बकने का अंजाम दुःख होता है जब रातदिन हज़ारों प्रकार की चर्चा होगी नहीं मालूम किस ज़िकिर में क्या बात मुंह से निकल जाय व इतनी कमगोई भी न चाहिये कि बोलने के वास्ते लोग खुशामद करें ज़िद व हठ किसी बात पर नहीं चाहिये जो बात तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ भी हो उसे उठा रक्खो कि वह दूसरे समय बतौर मुनासिब तै हो सक्ती है फ़र्मा-यश किसी चीज़ की नहीं करना चाहिये फ़र्मायश करने से आदमी नज़रों से उतर जाता है और उसकी बात हेठी हो-जाती है जो काम सास ननदें करती हैं तुमको अपने हाथों से करने में आर न करना चाहिये छोटे पर कृपा बड़ों का अदब

हर एक के मनको प्यारे लगने का बड़ा सुघर यत्न है अपना कोई काम दूसरों के शिर नहीं रखना चाहिये और अपनी कोई वस्तु बेखबरी से न पड़ी रखनी चाहिये कि दूसरे उसको उठालेंगे जब दो मनुष्य चुपके २ बातें करें उन से अलग होजाना चाहिये पर इसकी चिन्ताभी मतकरो कि यह आपस में क्या कहते थे और अदबदाय यह भी मतसमझो कि कुछ हमाराही चर्चा था अपना मुंहमिला आदमी से अदबलिहाजके साथ रक्खो जिनलोगों में बहुत ज्यादा मिलाप और व्यौहार होजाता है उसी प्रकार उसमें रंज भी जल्द होने लगताहै मैं जानताहूं कि तुम दिनरात में बे प्रयोजनभी इस चिट्ठीको कमसेकमएकबेर पढ़लियाकरो कि उसका मतलब याद रहे बाप की चिट्ठी पाकर सरस्वती के जीमें एक ऐसी उमग प्रीतिकी उठी कि बे अख्तियार रोनेको जीचाहा परन्तु नईब्याहीहुईथी ससुरालमें रो नसकी और बापकी चिट्ठी नेत्रोंसे लगाकर यत्नसे पुस्तक में धरली और नित्य उसचिट्ठी को पढ़ा करती और अर्थ पर चिन्तवन किया करती जबतक सरस्वती बे व्याही हुई रही तो उसकाजी बहुत घबराताथा इसलिये कि अचानक माताका भवन छोड़नये आश्रम और नये मनुष्यों में रहनापड़ा यह तोकाम काज करने में अति चतुर और बुद्धिमानथी और बे काम काजके इसको एकघड़ी चैन न थी या महीनों कोठरी में चुप चाप बैठना पड़ा माता पिता के घर में जो इत्यादि प्राप्त थे वह बाकी नहीं रहे यहां ससुराल में आतेही इसकी सब बातों को लोग देखने और ताड़ने लगे कोई मुंह देखताहै कोई चोटी की लम्बान नापता है कोई डील के उठान को ताड़ताहै कोई गहना टटोलताहै कोई वस्त्र देखताहै खाती है तो कौर पर नजर है कि कौर कितना बड़ालिया मुंह कितनाखोला क्योंकर चबाया किसप्रकार निगला उठती है तो देखते हैं कि दुपट्टा किस बिधि ओढ़ा चलती किस प्रकारसे है सोती तो समयपर नजर है किसवक्त सोई और कब उठी [illegible] है कौन इसकी न-

उसके सामने थीं ऐसे हालमें सरस्वतीको बहुतक्लेश होताथा परन्तु यह बहुत बुद्धिमान और चतुर थी ऐसी कड़ी परीक्षा मेंभी पूरी निकली और सब बातें इसकी ससुराल वालों को भाईं बातकी तो न इतनी विशेष कि लोगकहैं कैसी लड़की है चारदिन की ब्याहीने किस बलाकी बकर लगा रक्खी है न बचन इतने कम कहे कि लोग कहैं अहंकार है भोजन किया तो न इतना अधिक किटोलेमहल्ले में चर्चाहोन ऐसा कम कि सास ननदको शिर थकाकर बैठरहे सोई तो न इतना सबेरे कि दीपक में बत्ती पड़ी पलंगपर चढ़ी और न इतनी देरतक कि लोग कहैं कि पुरुषों कोभी इसने मात कियाहै सदाकी यह रीति है कि नई दुलहिनको महल्ले की लड़कियां घेरे रहाकरती हैं सरस्वतीके पासभी जब देखो दशपांच मौ-जूदहैं परन्तु सरस्वतीने किससे खुसलियत पैदा न की अगर कोई लड़की दिनभर बैठी रहगई तो यह न कहना कि अपने घरजाओ अगर कोई न आई तो उससे यह न पूंछा कि तुम कहां थी क्योंनहीं आई सरस्वती के इस प्रकार की भेट मि-लापसे धीरे२ लड़कियोंका जमघटा होना कमहोगया बहुधा महल्ले की कमीनों की लड़कियां तो चाट की आशनाहुई थीं जब उन्होंने देखा कि न तो पान मिलता है न कुछ सौदे सुलफ़ का ज़िक्र है तो छः सातदिन पीछे उन्हों ने आना जाना छोड़ दिया सरस्वती ने पहिले यमुना अपनी नन्द से प्रीति बढ़ाई यमुना लड़कनी थी थोड़ेही स्नेहमें चेरी होगई दिनभर सरस्वती के ढिग घुसी रहा करती थी बल्कि माता किसी समय कह भी उठती कि इस भावज पर इतनी दयाल क्योंहो बड़ी भावजके तोतुम सायासे भागतीफिरतीथी यमुना इसका उत्तर देती वहतो हमको मारती थी हमारी छोटी भावजहमको प्यारकरती हैं यमुनाके मेलसे सरस्वतीने अपना अच्छे प्रकारसे कार्यनिकाला पहले तो सबघरका हालबल्कि तमामकुनबे और महल्ले का हालयमुनासे पूंछ२ करमालूम किया और जोबात आदिमें लाज और संकोचसे आप नहीं

चार आनेका है सरस्वती बोली कि हमारे घर प्रतिदिन दही के बड़े पकते रहा करते थे पावभर पीठी के बड़ों में एक आने का दही पड़ता था इस लेखेसे तो मैंने एक आने का अधिक मंगाया लक्ष्मी मिश्रायनने कहा तुम अपने महल्ले का हिसाब किताब अलग रहने दो भला कहां कंधारी बाजार कहां रानी कटरा जो वस्तु रानी कटरे में एक पैसे को मिलती है वह यहां एक आने को भी नहीं मिलती यह खाक धूल मिला मुहल्ला तो ऊजड़ नगरी सूना देश है सदा सब वस्तु का तोड़ा हर चीज का काल रहता है जो कि खाने में देर होती थी सरस्वती यह सुनकर चुप हो रही और मिश्रायनसे कहा अच्छा जितने को मिलता है ले आवो परंतु सरस्वती ऐसी भोली न थी कि मिश्रायन की बात को सत्य समझती अपने मनमें कहने लगी अवश्य दाल में कुछ काला है दमड़ी छदाम का फर्क हो तो हो परंतु यह गजब है कि एक नगर के दो महल्ले में दुगुने चौगुने का फर्क हो उस समय से सरस्वती भी ताक में रही दूसरे दिन लक्ष्मी पान लाई तो सरस्वती ने देखकर कहा कि मिश्रायन तुम तो बिलकुल हरे पत्ते उठा लाई हो इसमें न कुछ स्वाद मिलता है न लज्जत मिलती है अबजाड़े की अवाई है करारे पक्के २ पान ढूंढ़कर लाया करो मिश्रायन बोली पक्के पान तो पैसे के दो आते हैं और यहां परमेश्वर रक्खे आधी ढोली रोज का खर्च है इस वास्ते मैं नये पान लाती हूं इतने में सरस्वती के घरसे रामकली मिश्रायन सरस्वती की खबर लेने को आई सरस्वती ने अपने मैके की मिश्रायन से पूंछा क्यों मिश्रायन आज कल तुमको कैसे पान मिलते हैं रामकली ने कहा पैसे के सोलह सरस्वती ने संदूकचा खोल दो पैसे उसके हाथ दिये और कहा कि इसी महल्ले के पनवाड़ी से दो पैसे के पान लेआयो रामकली मिश्रायन बड़े २ पक्के चालीस पान लेआई सरस्वती ने कहा यहां रानी कटरे के बनिस्बत भी पैसे पीछे चार पान अधिक मिले रामकली मिश्रायन ने कहा बेटी यह महल्ला शहर का फाटक है अनाज, पान, घी, दही, यह सब वस्तें इस महल्ले में सस्ती मिलती हैं

कहसक्तीथी यमुनाके वसीले कहाकरती थी सरस्वती ने घरके कामर्मे सहज२ इसप्रकार दखलदेना आरम्भकिया कि सांझ समय यमुनासे रुई मंगाकर दीपककी वत्तियां बटदिया करती तरकारी बनालेती यमुना का फटा उधड़ा कपड़ा सीं देतीसाम और स्वामीके लिये पान बना देती धीरे २ रसोई तक जाती और लक्ष्मी मिश्रायनको छौंक बघारमें सलाह देने लगी यहां तककि सरस्वतीके रायपर रसोई बननेलगी जब से सरस्वती ने रसोईं में दखल देना आरम्भ किया घर वालों ने जानाकि रसोईभी कोई पदार्थहैफिरतो यहहाल होगयाकि जिसदिन सरस्वती किसीकारण सेलक्ष्मी मिश्रायन कोसलाह कार न होती तोभोजन मेंस्वाद किसीको मालूमनहींहोता सास बहुओंकी लड़ाईकुछ मामूली बातहै सरस्वती यों लड़ने के योग्य न थी तोउसका गुणविरुद्ध काकारण हुआलक्ष्मीमिश्रायनइस घरमें अगुआकारथी किसब कार्योंकाभार उसपर थासौदासुलफ़कपड़ा अनाजजोकुछबाजार सेआतासबलक्ष्मी मिश्रायन के हाथोंआता गहना तकबनवाकर लाती रुणकी जोजरूरत होतीतो लक्ष्मी मिश्रायनके आढ़तसे आता गरज कि लक्ष्मी मिश्रायन पुरुषों के प्रकार इस घर का बन्दोबस्त करतीथी जब सरस्वती ने रसोईंमें दखलदिया लक्ष्मी मिश्रायनका यतसे द्रव्यदेना जाहिरहोने लगा एकदिन उरद की पिट्ठीके बड़े बनरहेथे और सरस्वती रसोईमें बैठीहुई लक्ष्मी मिश्रायनको बताती जाती थी जब बड़े बनचुके और दहीमें उसको डालनाचाहा पर जोदही हंडियामें रक्खाथा उसको सरस्वती ने देखातो वह बिगड़गया था इस कारण कि कई दिनका बासीथा नीलापानी अलग और दही की फुटकियां अलग होगईथी सरस्वतीनेकहा अयहयह कैसाबुरा दही हैयह दही बड़ों में डालनेके योग्यनहीं मिश्रायन वेगजाओ दोआने का दही बाजारसे लेआओ लक्ष्मीमिश्रायनने कहा हद्दहुलहिन पावभर पीठीके बड़ोंमें दोआनेका दहीवहीमसल है कि ऊंटकेमुंहमें जीरा यहदही जो तुमने नापसन्द किया

चारआनेका है सरस्वती बोली कि हमारेघर प्रतिदिन दही केवड़े पकते रहाकरतेथे पावभर पीठीके बड़ोंमें एकआने का दहीपड़ताथा इस लेखेसेतौ मैंने एकआनेका अधिकमंगाया लक्ष्मी मिश्रायनने कहा तुम अपनेमहल्ले का हिसाब किताब अलग रहनेदो भलाकहां कंधारीबाजार कहां रानी कटरा जो वस्तु रानी कटरेमें एकपैसेको मिलती है वह यहां एक आनेकोभी नहीं मिलती यहखाक धूलमिला मुहल्लातोऊजड़ नगरी सूनादेशहै सदा सब वस्तुका तोड़ाहरचीजका काल रहता है जोकि खानेमें देर होती थी सरस्वती यह सुनकर चुपहोरही और मिश्रायनसे कहा अच्छा जितनेको मिलता है जल्दलावो परंतु सरस्वतीऐसीभोली नथी कि मिश्रायनकी बातको सत्य समझती अपने मनमें कहनेलगी अवश्यदालमें कुछ कालाहै दमड़ीछदामका फर्कहो तोहो परंतु यहगजब है कि एकनगरके दोमहल्ले में दुगुने चौगुनेका फर्कहो उस समयसे सरस्वती भी ताकमेंरुई दूसरेदिन लक्ष्मी पानलाईतो सरस्वतीने देखकर कहा कि मिश्रायन तुमतो बिलकुल हरे पत्ते उठालाईहो इसमेंनकुछ स्वादमिलताहै न लज्जतमिलती है अवजाड़ेकी अवाई है करारे पक्के २ पान ढूंढ़कर लाया करो मिश्रायन बोली पक्केपान तो पैसे के दो आते हैं और यहां परमेश्वर रक्खे आधी ढोली रोज़ का खर्च है इस वास्ते मैं नये पानलातीहूं इतनेमें सरस्वतीके घरसे रामकली मिश्रायन सरस्वतीकी खबरलेनेको आई सरस्वतीने अपने मैके की मिश्रायन से पूंछा क्यों मिश्रायन आज कल तुमको कैसे पानमिलतेहैं रामकलीने कहा पैसेके सोलह सरस्वतीने संदू-कचा खोलदो पैसे उसकेहाथ दिये और कहा कि इसीमहल्ले के पनवाड़ीसे दो पैसेके पान लेआयो रामकलीमिश्रायनबड़े२ पक्के चालीसपान लेआई सरस्वतीने कहा यहां रानीकटरे के बनिस्बत भी पैसेपीछे चारपान अधिक मिले रामकली मि-श्रायन ने कहा बेटी यह महल्ला शहरका फाटक है अनाज, पान, घी, दही, यहसब वस्तें इस महल्ले में सस्ती मिलती हैं

पुराने पान चालीस मिले अगर नये लेती तो अस्सी मिलते सरस्वतीने कहा। यह लच्छी मियायन तो सब वस्तु में योंही आगलगातीहै रामकली तुम दो चारदिन यहां रहो।मैं अम्मा से कहला भेजूंगी वहां का काम दो चारदिन के लिये और कोई देख भाल लेगा रामकली ने कहा बेटी मैं हाजिर हूं परमेश्वर न करे क्या यहां वहां दो२ घरहैं अर्थात् चारदिन रामकली के हाथों सब प्रकारका सौदा बाजारसे आया हर चीजमें लच्छी मियायन की चोरी साबितहुई परन्तु यहसब बातें इसप्रकारसे हुई कि सरस्वती की सासको खबरतक न हुई सरस्वतीने जाना या रामकली वा लच्छी ने इसहेत की सरस्वती बहुत सुशील स्वभाव और संकोच की स्त्री थी उसने समझा कि इसबुढ़िया मियायनको बदनाम औररुसवा करनेसे क्या प्रयोजन रातकेसमय भोजनसे सावकाश पा कोठे पर सरस्वती पान खारही थी रामकली मियायन भी पास बैठीहुई थी इतने में लच्छी मियायन आई रामकलीने कहा क्यों लच्छी यह क्या माजराहै चोरीकौन नौकरनहीं करता देखो यह घरवाली मौजूद हैं सातवर्ष तक बराबर इनकी सेवाकी घरकाकारोबार यहसब उठायेहुयेथीं परमेश्वररक्खे अमीरके घर अमीरी खर्च हजारों रुपयेकासौदा इन्हो हाथों सेआयाहज़रत् इस्तू री यह क्योंकर कहूं कि नहींलियाइतनालेन तो हम नौकरों का धर्महै चाहेभगवानबख्शे चाहेमारेपरंतु इससेअधिक पचनहीं सक्ता इससे बढ़कर लेना तो नमकहरामीहै लच्छीनेकहा।मेराहाल कौननहींजानताअबमेरीबला छिपावे हां मैं तो चुराती और लूटती हूं परन्तु न आजसे बल्कि सदामेरा यही कामहै तनिक मेरे हालपरभी तो निगाहकरो कि इसघरमें किस बलाका काम है भीतर बाहर मैं अकेली आदमी चार नौकरों का काममेरे अकेले दमपर पड़ता है फिर बीबी कोई अपनी हड्डियां यों नहीं तोड़ता थिगड़ताइन कईबेर मुझको मौकूफ़भी करचुकीहैं फिर अन्त मुझीको बुलाया समझका फेरहै किसीने यों समझा किसी

ने यों समझा चारके बदले में अकेली हूं चार की तनख़्वाह की मुझ अकेली को मिलना चाहिये और वृत्तान्त इस लक्ष्मी मिश्रायन का इसप्रकारपर है कि यह औरत पचीस वर्ष से इसघरमेंहै और सदालूटनेपर उतारूथी एकदिनकी बातहो छिपछिपाजाय नित्य इसका कुछछिद्र प्रगटहुआ करताथा कई बार निकालीगई जब मौकूफ़ हुई बनिये बज़ाज सुनार कुंजड़े जिन २ से इसके मारफ़त उचापत उठतीथी तक़ाज़ा को आ मौजूदहोते थे इसडरके मारे फिर बुलाईजाती थी यों चोरी और सरज़ोरी लक्ष्मी मिश्रायन के कर्ममें लिखी थी चिताकर लेती और बताकर चुराती और लिखाकर मुकरजाती घरमें आमदनी कमस्वभाव बिगड़ाहुआ खानेमें इसृतियाज़ कपड़े में तकल्लुफ़ सब कारखाना उधार परथा और आढ़तलक्ष्मी मिश्रायनके डौलसेथी खुले ख़ज़ाना कहती थी कि मेरा निकलना कुछ सहज नहीं है घरको नीलाम कराकर निकलोंगी ईंटसे ईंट बजवाकर जाऊंगी सरस्वती ने जो हिसाबकिताबमें रोकटोक शुरूअकी तौ लक्ष्मी मिश्रायन सरस्वती की बैरिन होगई और इस यत्न में हुई कि सरस्वती को अम्बिकादत्त और उसकी माता से बुराबनाये परंतु सरस्वती इस भेद से बेख़बर थी बल्कि सरस्वती ने जब देखा कि मिश्रायन इस घरकी मुख़तार है यह अपने स्वभाव को न छोड़ेगी तो जीमें कहा फिर नाहक की झक२ से क्या प्रयोजन इसलिये रसोईमें जाना और खानेमें दख़ल देनासरस्वतीने छोड़दिया घर वालोंको तो सरस्वतीके हाथकी चाट लगगईथीपहलेही दिनसे मुंह बनानेलगे कोई कहता अयहय तरकारी मुंह में कचर२होतीहै कोईकहता दालमें नमकज़हर होगया ज़बान पर नहीं रक्खी जाती परन्तु सरस्वती से कौन कह सक्ताथा कि तुम रसोईं बनाओ लाचार जैसा बुराभला मिश्रायन भोजन बनाकर रखदेती वहीखाना पड़ताथा एकदिन बरसात के मौसममें बादल घिराहुआ था नन्हीं२ फुहार पड़रहीथी ठंढीहवाचल रहीथी अम्बिकादत्तने कहा आज तो कढ़ीको

जी चाहता है परंतु इस शर्त से कि वे पकाने का बंदोबस्त करें सरस्वती ऊपर कोठे के रहा करती थी उसको खबर नहीं की पतिने कढ़ी की फ़रमायश की है घी बेसन दही आदि सामान मियायन ले आई और अम्बिकादत्त से कहा सब सौदा तो मैं ले आई जाऊं बहूजी को बुलालाऊं कोठे पर गई सरस्वती से कढ़ी का कुछ जिक्र नहीं किया और उसी तरह उलटे पाओं उतर आई और कहा बहू कहती हैं कि मेरे शिर में दर्द है लच्छी मियायन से मामूली भोजन तो पका नहीं सक्ता था कढ़ी क्या खाक पकाती सब चीजों को सत्या नाश मिलाकर रख दिया किस ख़ाहिश से अम्बिका दत्तने फ़रमायश की थी परन्तु बदमज़ा कढ़ी खाकर बहुत उदास हुआ अटारी पर गया तो घरवाली को देखा कि अपना दुपट्टा सी रही है जी में नाखुश हुआ कि ऐं सीने को शिर में दर्द नहीं और कढ़ी को कहा तो दर्द शिर का बहाना करदिया पहली नाखुशी अम्बिकादत्त को सरस्वती से यही हुई और दस्तूर है कि मियां बीबियों में बिगाड़ इसी प्रकार की छोटी छोटी बातों में हुआ करता है जो कि छोटी उमरों में ब्याह हो जाता है इस से ज्ञान व बुद्धि न पुरुष में होती है न स्त्री में अगर ज़रासी बात भी खिलाफ़ मिज़ाज देखी तो मियां अलग अकड़े बैठे हैं और बीबी अलग मुंह औंधाये लेटी है जब एक जगह का रहना सहना हुआ तो खिलाफ़ मिज़ाज के छोटी २ बातों का ज्यादा होना क्या आश्चर्य है यही छोटी बातें खिलाफ़ मिज़ाज धीरे २ आपस के मेल मिलाप में क्लेश डालती हैं और दोनों तर्फ़ से लिहाज और पर्दा उठता जाता है और तमाम उमर जूतियों दाल बटती रहती है सब से अच्छा यत्न यह है कि जोरू खसम आदि ही से अपना सुआमिला एक दूसरे के साथ साफ़ रक्खें और थोड़े विरुद्ध को भी प्रगट न होने दें क्योंकि यही छोटे २ विरुद्ध जमा होकर बड़े कारण झगड़ा और बिगाड़ के हो जाते हैं विरुद्ध के प्रगट न होने देने का यह यत्न है कि जब कोई थोड़ी सी विरुद्ध [illegible] जी में न रक्खा

मुंहदरमुंह कहकर साफ़ कर लिया अगर अम्बिकादत्त में बुद्धि होती और वह इस यत्नको जानता होता तो उस बीबी से बतौर शिकायत पूछता कि क्योंजी ज़रासा काम तुमसे न होसका और दर्द शिरका झूंठ बहाना कर दिया उसी समय दोचार बातोंमें मुआमिला साफ़होजाता और लक्ष्मी मिश्रायनकी चालाकी खुलजाती परंतु अम्बिकादत्त ने मुंह परतो मुहरलगाई और दिलमें शिकायतका दफ़तरलिखचला सरस्वतीको अम्बिकादत्तके गुम सुमरहनेसे खटकाहुआ और समझी कि परमेश्वर खैरकरै लड़ाईकी नींवपड़ती नज़रआती है सासकोदेखा तो उनको भी नाराज़ पाया आश्चर्यमें थीकि परमेश्वर यह क्याबातहै अभी यहबातले नहींहुई कि लक्ष्मी मिश्रायनने एक और वार चलाया याने दिवाली का महीना निकट आया अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायन से कहा कि मकानमें बर्सरोज़ हुआ सफ़ेदी नहींहुई लालाछदामीलालसे से कहोकि जिसप्रकार होसके कहींसे पचास रुपयेदे दिवाली का खर्चाशिरपर चला आताहै मिश्रायन बोली कि छोटीबहू अपने मैके जायंगी मैंने सुना है कि तहसीलदार भी आनेवाले हैं दोनों बेटियोंको बुलावेंगे और मैंने एकजगह यहभी सुना है कि छोटी बहूका इरादाहै कि अपनेबापके साथ पहाड़पर चलीजांय बहू जांयगी तो छोटी साहबज़ादी भी जांयगीफिर बीबी तुम्हारा अकेला दम है मकान में सफ़ेदी होकर क्या करेगी छदामीलाल कमबख़्त तो ऐसा बेशील होगया है कि नित्य उसका ब्राह्मण तक़ाज़े को खड़ा रहता है वह उधार क्योंकर देगा अम्बिकादत्तकी माता यह सुनकर सर्द होगई और सर्द होनेकी बात थी मियांतो जिसदिनसे आगरे गये फिरकरघरकी शकल न देखीछठे महीने बरसवें दिनजीमेंआ-गयातो कुछ भेजदिया वरना कुछ प्रयोजन नहीं परमेश्वरीदत्त मातासेअलगही होचुकाथा सिर्फ़ अम्बिकादत्तकादमघरमेंथा इसकेपीछे घरसूना था अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायनसेपूछा अरी सच बताइयो ज़रूर जायगी मिश्रायनबोली जाने नजाने

को तो परमेश्वर जाने जो सुनाथा सो कहदिया अम्बिकादत्त की माताने पूछा अरीकमबख़्त किससेसुना किसबिधि मालूम हुआ लक्ष्मी बोली सुननेकी जो पूछोतो रामकली से मैंने दो रुपये उधार मांगे थे उसने कहा मैं देती तो जरूर परंतु पहाड़ पर जाने वाली हूं तब मैंने उससे सब हाल पूछा मालूम हुआ कि सब बात ठीक ठाकहो चुकी है बस इतनीदेर है कि जब तहसीलदार आवें उनके आयेपर चौथे पांचवेंदिन यह सबलोग रवाना होजांय और सुननेपर क्या है परमेश्वर को देखानहीं तो बुद्धिसे पहचाना है बीबी क्या तुमको बहूके रंगोंसे समझनहीं पड़ता देखोपहलेतो बहूघरका कामकाज भी देखती भालती थी अब तो अटारी परसे नीचे उतरना सौगन्धहै चिट्ठी पर चिट्ठी बापके नाम चली जातीहैं सिवाय जाने के ऐसी और कौन सी बात है अम्बिकादत्त की माता यह हाल सुनकर सन्नाटेमें रहगई इसी सोचमें बैठीथी कि अम्बिकादत्त बाहरसे आया उसको पास बुलाकर पूछा कि अम्बिकादत्त मैं एक बात तुझसे पूछती हूं सच २ बतायेगा अम्बिकादत्त ने कहा अम्मा भला ऐसी कौन बात है जो तुमसे छिपाऊंगा अम्बिकादत्त की माताने जो कुछ मिश्रायन से सुनाथा उससे कहा अम्बिकादत्त ने कहा अम्मा परमेश्वर की सौगन्ध मुझको इसकी कुछखबर नहीं न मुझसे इसबात का चर्चा हुआ अम्बिकादत्तकी माता बोली चल झूठे मुझी से बातें बनाता है इतनी बड़ी बात और तुझको खबर नहीं अम्बिकादत्त ने कहा तुमको बिश्वास नहीं होता तुम्हारे सिर की सौगन्ध मुझे खबरनहीं इतनेमें मिश्रायनभी आ निकली अम्बिकादत्त की माताने कहा क्योंरी लक्ष्मी अम्बिकादत्ततो कहता है मुझको मालूम नहीं मिश्रायन ने कहा लड़के तुम बुरा मानो या भला मानो तुम्हारी बीबी जाने की तैयारियां तो कर रही हैं तुमसे शायद छिपाती हों ये बड़ी बहू न हों कि उसके पेटमें बात नहींसमातीथी यह ऐसीहैं किकिसीको अपना भेद न दें अम्बिकादत्तको माताने पूछा भला अम्बि-

कादत्त जो यह बात सच हो तो तुम्हारा क्या इरादा है
अम्बिकादत्त ने कहा भला यह क्योंकर हो सक्ता है कि तुम
को अकेला छोड़कर चला जाऊंगा और उनकोभी क्याऐसी
जबरदस्तीहै कि बेपूंछे गाछेचली जायंगी और मैं आजउनसे
पूछोंगा क्योंजी यह कैसी बात अम्बिकादत्तकी मातानेकहा
कि अभी इस लक्ष्मीके बातका क्याप्रमाण है बहूसे कुछ चर्चा
मतकरो जब बात खुल जायगी तब देखाजायगा इसप्रकार
की बातोंसे मिश्रायन सरस्वतीको सास और खसम से बुरा
बनाने की फ़िकिर में थी और सरस्वती से अगर्चे किसी ने
मुंहदरमुंह कुछ कहा सुना नहीं परंतु वह भी इनसबकी सूरतसे
समझगईथी कि कुछ नाराज़गी है सरस्वती के पासयमुनाबड़ी
गोयन्दाथी ज़रा२सी बात सरस्वतीसेकहती और मिश्रायनकी
बदज़ातीसबसरस्वतीपर खुलगईथी परंतु सरस्वती ऐसी बुद्धि-
हीनन थी कि तुरन्त बिगड़ बैठती वह इसशोचमेंहुई कि इस
मुआमिले में कुछ अपनीतरफ़ से कहना सुनना उचित नहीं
आख़िर कभीं न कभी यहबात खुलेगी उससमय देखा जा-
यगा लक्ष्मी मिश्रायनके शिरपर शामत तो सवार थी तीसरी
बार सरस्वती पर उसने और सही किया छदामीलाल की
तो आदत थी कि जब कहीं मिश्रायनको अपनेदूकानके सा-
मने आतेजाते देखा तो अदबदाकर छेड़ता कि क्यों मिश्रा-
यन हमारे हिसाबकिताब कीभी कुछफ़िकिरहै और आठवें
सातवेंदिन घरपर तक़ाज़ा कहला भेजता एकदिन मुवाफ़िक
मामूलके मिश्रायनसौदेसुलुफ़को बाज़ारजातीथीछदामीलाल
ने टोका मिश्रायन बोली ऐ लाला यह क्यातुमने मुझसेआये
दिनकी छेड़खानीलगाई है जबमुझकोदेखतेहोतक़ाज़ा करते
हो जिनको देतेहो उनसेमांगो उनपर तक़ाज़ाकरो मैंबेचा-
री ग़रीब आदमी टकेकी औक़ात मुझसे और महाजनों के
लेनेदेनेसे क्या वास्ता छदामीलालने कहा यहबात तुमनेक्या
कही कि मुझसे वास्ता नहीं दूकान से तो तुम लेजाती हो
हाथको हाथ पहचानता है हमतो तुमको जानतेहैं और उ-

म्हारी साखपर देतेहैं हम घरवालोंको क्याजाने मिश्रायन ने कहा ऐलाला होशमें आओ ए सेठके भोले मेरीऐसी क्या हैसियत तुमनेदेखली मेरेपासनधन नदौलत और तुमनेसैकड़ों रुपया आंखबन्दकरके मुझको देदिया और अगर मुझको दिया तो जाओ मुझीसे लेभीलेना मेरे जो महल खड़े होंगे बिकवालेना मिश्रायन की ऐसी उखड़ी२ बातें सुनकरलाला छदामीलाल बहुत सिटपिटाया और मिश्रायनसे मिलावटकी बातें करनेलगा और कहा कि आज तो तुमकिसीसे लड़कर आई मालूम होतीहो बताओतो क्याबात है बीबीसाहब ने कुछ कहा या साहबजादी कुछखफाहुई यहांआओ इधरतो मिश्रायनसे यहकहा उधर दूकानपर जो लड़काबैठाथा एक पैसा उसकेहाथ दिया कि दौड़कर दो गिलौड़िया मसाला डलवाकर बनवाला जब मिश्रायन बैठगईतो छदामीलाल ने हंसकरपूछा तुम आज अवश्य किसी से लड़ीहो मिश्रायन ने कहा परमेश्वरनकरे क्योंलड़नेलगी बातपर बातमैंनेभी कहदी लालासच बातपर क्यों बुरामानतेहो छदामीलालनेकहा यहतो ठीकहै ब्योहारतो मालिकके साथहै पर तुम्हारेहाथों से होताहै यानहीं नतुम्हारे नामरुक्का नचिट्ठी तुमने मालिक के नामसे जोमांगा सो दिया मिश्रायन ने कहा हायों रहो इससे कब मुकरती हूं जो लेगई हूं हजारों में कहदूं और लाखोंमें कहदूं और हमारी बीबीके भी रोयें २ से दुआ निकलतीहै बेचारीकभी तकरार नहींकरती छदामीलालबोला वाह हक़ीक़तमें वहबड़ी अमीरहैं और उनकी क्या बात है फिर छदामीलालने धीरेसे पूंछा छोटीबहू का क्या हाल है और कैसीहैं अपनीबड़ीबहिनके अंदाज़पर है याकिसप्रकार का मिजाजहै मिश्रायननेकहालालाकुछ न पूंछो बेटी तो अमीरघरकीहै पर दिलकीबड़ी तंगहैदमड़ीकासौदाभीजबतक चारबेर फेरनलें पसंदनहीं आता हांपरमेश्वररक्खे गुनवन्ती तो संसारकी बहुबेटियोंसेबढ़चढ़केहैं भोजनअच्छेपकाती हैं सोनेमें दर्ज़ियोंको मातकिया है परंतु लालाअमीरीकी बात

नहीं पहिलेपहिल मुझपरभी टोकटोककी थी लालातुम तो जानतेहो मेराकाम कैसा बेलागहोता है अन्तको थक कर बैठरही और बड़ीबीबीतो बड़ी नेकहैं उन्हींके दम क़दमकी बरकतसे घर चलताहै हम ग़रीबभी उन्हींका दामन पकड़े हुयेहैं बहुतेरा हमारीबीबीको लोगों ने भड़काया परंतु परमेश्वर उनको सलामतरक्खे उनके दिलपर मैल न आया और किसी प्रकार बात उन्होंने मुंहपर नकहीछदामीलालनेकहा सुनाहै छोटी बहूको बड़ाभारी दहेजमिला मिश्रायन ने छूटतेहीकहा खाकपत्थर बड़ीसे भी उतरताहुआ मिलाछदामी लालने कहा बड़ाआश्चर्य है कि इनकेब्याहके समयतो पण्डित देबीदत्त तहसीलदार थे बड़ीबेटी से अधिक देना उचित था मिश्रायननेकहा अयहय तहसीलदार काकुछ दोषनहींउस बेचारेनेतो बड़ीतैयारियांकी थीं यहीछोटी खोंटी सुखबोली थी मातापिता के सुघरभलाई के मारे कहकर सबबस्तें कम कराईं छदामीलालने कहा अगर यहीहालहैतो बड़ी बहिन केप्रकारये भी अलग घर करेंगी मिश्रायन ने कहा अलगघर करनाकैसा यहतो बड़ेगुल खिलायेगी बड़ीबहू बदमिजाज थी परंतु मनकीसाफ़ और ये मुंहकी मीठीमनकी खोंटी कोई कैसाहीजान मारकरकामकरे इनकेख़ातिर तले नहींआता बातभीकहेंगीतोतहकीमुंहपरकुछजीमेंकुछनबाबानबाबायह स्त्री एकदिनभी निबाह करनेवाली नहींअबतो पहाड़परबाप के पास जाने की तैयारियां कर रही हैं छदामीलाल ने पूछा आगरेसे इनदिनों कोई चिट्ठीआई है मिश्रायनने कहा नित्य उसतरफ़ ध्यानलगा रहता है नजाने क्या बियोग कोई चिट्ठी नहींआई बीबीखर्चकी राहदेख रहींहैं दीवाली सिरपर आ रहीहै बल्कि परसोंअतरसों कहतीथीं कि लालाछदामीलाल से पचास रुपये उधार लाना छदामी लाल उधार का नाम सुनकर चौंकपड़ा और कहा पहले रुपये की राहलगावैं तो आगे देनेको क्याइनकारहै अबमेरे साझीनहीं मानते अपनी बीबीसे समझाकर कहदेना कि जहां से बनपड़े रुपया अदा

करें वर्नासुझपर कुछदोषनहीं मिआयनने कहा तुम्हारारुपया परमेश्वरही निकलवायेगा तो निकलेगा हमारी बीबी कहां सेदेंगी बाज़२ तो कर्जदार होरहो हैं सोदीअलग जानखाता है बज़ाजजुदा गुलमचाताहै लाला छदामीलालने कहामुझ को औरोंसे क्या वास्ता हमारे दूकानका हिसाबतो बेबाक करनाही पड़ेगा मुझकोतो तुम्हारे सरकार का बड़ालिहाज़ है परंतुमेरा साझी गुरदयाल नहींमानता वहजोयहवृत्तान्त सुनपाये तो आज नालिश करदे मिआयन ने कहा यह सब हालबीबीसे कहधरमें दूंगी परंतु घरकाजूरा जूराहाल मुझ को मालूमहै नालिशकरो या फ़र्यादकरो न रुपयाहै नदेने की गुंजायश रुपयाहोतातो उधार क्यों लियाजाता इतनी बातोंके पीछे मिआयन छदामीलालसे बिदाहो सौदासुलफ़ लेकर घरमें आईतो अम्बिकादत्तकी माताने पूछा मिआयन तू बाजारजाती हैतो ऐसी बेफ़िकिर होजाती है कि रसोंई बनानेकी कुछ सुधनहीं रहती देखतो कितना दिन चढ़ा है अब रसोंई किसवक्त बनेगी और कब भोजन मिलेगा मिआ-यनने कहा बीबी सुये छदामीलालके झगड़ेमें इतनीदेर हो गई वह जान हार नित्य मुझको आतेजाते टोका करता है आजमैं जवगई और मैंनेकहा क्यालालातूने मुझसे नित्यकी यह क्या छेड़खानी लगाईहै क्योंमरा जाता है तनिक ढाढ़स रख आगरे से खर्च आनेदे तो तेरा अगला पिछला हिसाब किताब बेबाकहोजायगा वहसुआतो मेरेपिरहोगया और भरे बाजार में मुझको रुसवा करने लगा अम्बिकादत्त की माताने कहा छदामीलालको क्याहोगयाहै वहतो ऐसा नथा आखिर बर्षोंसे हमारा उसका लेनदेन है सबेरेभी दिया है देरकोभी दियाहै कभी उसने तकरार नहींकी मिआयन ने कहाबीबी कोई और महाजन दूकानमें साझी हुआ है उस सुयेने जल्दीमचारक्खी है जिसजिस पर लेनाथा सबसे खड़े२ वसूलकरलिया जिसने नहींदिया नालिशकरदी छदामीलाल ने कहा है कि मेरे तर्फ़ से बहुत २ हाथ जोड़कर कह देना

मेरा इसमें कुछ वश नहीं जिस विधि होसके दोचार दिनमें रुपये की राह लगादें वर्ना गुरदयाल अ़क़रनालिश करदेगा इस खबरके सुननेसे अम्बिकादत्तकी माताको बहुतही अचम्भा हुआ फुलझारी इनकी छोटीबहिन चौकमें रहतीथी और वहकुछ धनवानथी अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायनसेकहाकिआगरे सेतो जवाब चिट्ठीतक का नहींआता खर्चका कौन भरोसा है अगरसचमच छदामीलालने नालिश करदीतो क्याहोगा मेरेपासतो इतना असबाबभी नहीं किबेंचकर अदाकरदूंगी और नालिशहोने पर देना भी बेइज्ज़तीहै सगरेनगरमें रुसवाई होगी डोली लेआ मैं फुलझारी के पास जाऊं देखूं जा वहांकोई सूरत निकलआवे मिश्रायनबोलीबीबी नालिशतो हुईरक्खीहै जिसने मुंहसे कहा उसे करते क्यादेर लगती है और फुलझारीके पास कहांसे रुपयाआया वहतो इन दिनों खुदहैरान है अम्बिकादत्तकी माताने कहा आखिर फिरकुछ करना तो पड़ेगा मिश्रायन ने पासजाकर चुपके से कहा कि महीनेभरके लिये बहू अपनेसोने के कड़े देदेंतो बातरहजाय इस समय तो इनकड़ोंको गिरवी रखकर आधी तिहाई छदामीलाल की भुगत जाय महीने भरमें यातो आगरेसे खर्च आजाता या मैं और किसी महाजन से लेआती अम्बिकादत्त की मानेकहा अरीदीवानी हुईहै खबरदार यह मुंहसे मत निकालना अगर रहनेका मकानतकभी बिकजायतोमुझको मंजूरहै परंतुबहूसे कहनेका तो मुंहनहीं मिश्रायनने कहा बीबी मैंतो इसखयालसे कहा कि बहूहुई बेटीहुई कुछगैर नहींहोते और क्या परमेश्वर नकरे बेचडालने की नियत हो महीनेभरका वास्ता है चीज़ संदूकमें नपड़ी रही महाजन के पास रक्खीरही जिसमें उसकीखातिर जमारहे अम्बिकादत्त की मानेकहा फिरभी बहूबेटीमें बड़ाअन्तरहोता है और नई ब्याहीहुई से कोई ऐसीबात कहसक्ता है देख खबरदार फिर ज़बानसे ऐसीबात मत निकालियो ऐसा नहो कि यमुना के कान पड़जाय और बहूसे जाय लगाये मिश्रायनने कहा सा-

हवजादीतो अभीखड़ी हुई सुन रही थी परंतु वह बच्चा है अभी उनको इनबातोंकी समझनहीं अम्बिकादत्तकी माताने कहा डोली लेआओ मैं बहिनके घरतक जाऊंतो सही फिर जैसी सलाह ठहरेगी देखा जायगा अम्बिकादत्त की माता तो सवार हो चौक की भिखारी और यमुना ने सबवृत्तान्त अपनी भावज से जा कहसुनाये सरस्वती को और कुछतो न सूझी तुरंत अपने बड़े भाई ईश्वरीदत्तको यहचिट्ठी लिखी॥

सिद्धिश्रीसर्वोपमा योग्य भाईजी बहुत दिनोंसे मैंने अपना हाल इसलिये नहींलिखा कि जो चिट्ठी अव्वा के नाम भेजती हूं वह आपके देखनेमें भी आती होगी अबएक निजकीबात ऐसी आगेआई है कि उसको आपही को लिखना उचितसमझतीहूं वहयह है कि जबसे मैं ससुराल आई किसी प्रकार का मुझको क्लेश नहीं पहुंचा और बड़ी बहिनको जिन बातों की शिकायत रहा करती थी आपके आशीर्वाद से वह बात मेरेसाथनहीं सबलोग मुझे प्यारकरते हैं औरमैं आनन्दसेरहती हूं परन्तु एकलच्छी मिश्रायन के हाथोंसे बड़ादुःखहै जो किसी बदमिज़ाज सास और बदज़बान नन्दसे भीन होतायह स्त्री इसघर में बहुत कालसे है भीतर बाहरका सबकार्यइसी के हाथोंमेंहै इसस्त्री ने घरकोलूटकर मटिया मेलकरदियाअब इतना उधार होगयाहै कि उसके अदाहोने कासामानदृष्टि में नहीं आता इसप्रकार का बन्दोबस्त घरमें नहींहै मैंनेथोड़े दिन मामूली कामकाज गृहस्थी में दखलदिया थातोसब वस्तु में काटकपट हरबातमें धोखा पायागया मेरेरोंक टोंक सेमिश्रायन मेरीबैरिन होगई और उस दिन से नित्य नये २ उपद्रव खड़े किये रहतीहै अगर्चि अब तक कोई बुराई की बात नहीं हुईपरन्तु इसमिश्रायन कारहनामुझको बड़ानागवार है और निकलनाभीइसका बहुतकठिन है सारीबाजार का ऋण इसके आढ़तसे है छुड़ाने कानामभी सुन पावे तो कर्जखाहोंसे लाभड़कावे फिरऋणकान हिसाब है नकिताब हैज़बानी तुकोंपरसब लेनादेनाहोरहाहैमैंजानतीहूंकि सब

लोगोंका लेखा होकर लिखा पढ़ी होजाय और एकढंग से हरएक की क़िस्त मुक़र्रर करदीजाय और उधार लेने का दस्तूर आगे के लिये मौक़ूफ़ हो और मिश्रायन निकाल दी-जावे यक़ीनहै कि अब्बाकेसाथ आपभी बाद दीवालीके आवैं मैं चाहतीहूं कि आप अनुग्रहकरके आगरा होकर आइये और अब्बाजान को जिसप्रकार बनपड़े कमसेकम पन्द्रहसो-लह दिनके लिये अपनेसाथ लिवालाइये आपसबलोगोंके सा-मने यहसब मुआमिला अच्छीविधि से तै होजायगा मैं इस चिट्ठीको अति घबराहट के समयमें लिखरहीहूं कोईमहाजन नालिश करनेपर उतारू है मिश्रायन ने यह सलाह दीहै कि मेरे कड़े गिरवीरक्खे जावें अम्माजान रुपयेके बिलावन्दके हेतु चौकमें अपनेबहिन के घर गई हैं उधर तो सरस्वती ने भाई को चिट्ठीलिखी इधर अपनी मौसीसे कहला भेजा कि मैं अ-केली हूं जयजयवन्ती मेरी मौसेरी बहिन को दोदिन के लिये भेजदीजिये मैंने सुनाहै कि वह ससुरालसे आईहै ग़र्जशामो शाम जयजयवन्ती भी आपहुंची डोली से उतरते ही कहा वाह बहिन सरस्वती ऐसाकोई बेशीलनहींहोता मैंनेमौसा जी की चिट्ठी तुमसे मंगवाभेजी थी तुमने न भेजी सरस्वतीने कहा वह कौनमांगने आयाथा जयजयवन्ती बोलीदेखोयही मिश्रायन मौजूद हैं क्यों बी मुनिश्वरको तुम हमारेघरगईथी मैंने तुमसे कहदियाथाया नहीं लक्ष्मीमिश्रायनबोली हां बी मैंने तुमसे कहा था पर मुझ अभागिन को बात याद नहींरहती यहां आनेतक घरके धन्धेमें भूलगई सरस्वतीने हंसकेकहा तुमको लूटनाऔर घर फोड़ना याद रहताहै जयजयवन्ती से कहा चिट्ठी मौजूदहै और एकनईकिताबभी आईहै बड़े मजे की बातें उसमें लिखी हैं वह भी तुम लेते जाना बाद उसके सरस्वती ने मिश्रायनका सारा वृत्तान्त जयजयवन्ती से कहा जयजयवन्ती बड़ी उतावल थी उसीवक्त जूतीलेकरउठी और मिश्रायन को मारनेचली सरस्वतीने हाथपकड़कर बैठालिया और कहा परमेश्वरके लिये ऐसा कोप मतकरो अभी जल्दी

नहीं सब बात बिगड़जायगी जयजयवन्ती ने कहा तुमयोंही शोच साच करके अपनी गरुआई खोतीहो अगर मैं तुम्हारी जगह पर होती तो भगवान की सौगन्ध इस मिश्रायन को मारे जूतियोंके ऐसा सीधा बनाती कि जन्मभर सुर्त्त रखती सरस्वती ने कहा देखो भगवान ने चाहा तो इस नमकहराम पर परमेश्वरकी मार पड़ेगी कोई दिन की देरहै इसके पीछे जयजयवन्ती ने पूछा तुम्हारी सास अपनी वहिनकेयहां किसहेतु से गईहै सरस्वतीने कहा वह बेचारी भी इसी मिश्रायन के हाथोंसे दर बदर मारीफिरती हैं कोई महाजन है उसका कुछ देना है मिश्रायन ने आज आकर कहा था कि वह नालिश करनेवाला है उसीके रुपयेके मिलाबन्द के लिये गईहैं जयजयवन्ती ने पूछा कि कौनसा महाजन नालिश करने वाला है सरस्वती ने कहा नाम तो मैं नहींजानती जयजयवन्ती ने मिश्रायन से पूछा कि मिश्रायन कौन महाजनहै मिश्रायन ने कहा छदामीलाल जयजयवन्तीने कहा किवही छदामीलाल जो गन्धीटोलेमें रहताहै मिश्रायन ने कहा हां वी वही छदामीलाल जयजयवन्ती ने कहा कि उससे हमारी ससुरारमें भी तो लेनदेन है भला क्या सुयेकी ताक़त है जो नालिश करे मैं यहां से जाकर तुम्हारे भाई जान से कहूंगी देखो तो कैसा ठीकबनाते हैं दोदिन जयजयवन्ती सरस्वती के पास रही तीसरे दिन बिदाहुई और बिदा होते कहगई कि वहिन तुमको मेरेशिरकी सौगन्ध जब तुम्हारेससुरे आवें और यह सब मुआमिला मुक़द्दमा पेश हो मुझको जरूर बुलवाना और मिश्रायनको मुझे सौंपदेना वहां अम्बिकादत्त की मा को उनकी वहिन नेठहरालिया और कहा कि दीदी बहुत दिन बाद तुमआईहो भला सातआठदिन तो रहो परंतु हररोज़ आदमी सरस्वती के कुशलक्षेम को पूछने आता था मिश्रायनने बैठे बैठाये एक और शरारतकीकि इनदिनोंगवर्नर जनरलकी अवाईथी नगरकी सफ़ाईके हेतु हाकिमके तर्फ़ से बहुत ताकीदहुई सबमहल्ला और गलीमें इश्तिहार लगाये

गयेकि सबलोग अपने२कूंचे और गलियां साफ़करें दरवाज़ों पर सफ़ेदीकरालें नाबदानसाफ़रक्खें अगर किसीगलकूड़ा कर्कटमिलेगा तो मकान नीलामहो जावेगा इसी समाचार का एक इश्तिहार इसमहल्ले के फाटक पर लगाया गया था लक्ष्मी मिश्रायन रातको जाकर महल्ले के फाटकसे वह इश्तिहार उखाड़लाई और चुपके से अपने दरवाजे पर लगादिया और फिर अन्धेरे मुंह चौक में अम्बिकादत्त की माता से खबरकरने दौड़ीगई कि अभीमकानके किवाड़ भी नहीं खुले थे कि इसनेआवजदी अम्बिकादत्तकी माताने बोलीपहचानी और कहा अरी दौड़ियो किवाड़ खोलियो मिश्रायन ऐसी समय क्यों भागतेआईहै मिश्रायन सामनेआई तो पूछामिश्रायनकुशलक्षेमहै मिश्रायन बोली बीबी मकान पर इश्तिहार छ-याधिताश क्या होताहै लगाहुआ है मालूमहोताहै कि छदामीलालने नालिशकरदी अम्बिकादत्तकी मानेअपनीबहिन से कहाकि बीबी मैंतो जातीहूं जाकर छदामीलालको बुलवाऊंगी और समझाऊंगी परमेश्वर उसके जी में दयादेवे बहिनबोली दीदीमैंबहुतलज्जितहूं किमुझसेरुपयेकाबन्दोबस्त न होसका परन्तु गलेकी तुलसी मेरीमौजूदहै इसकोले जाओ गिरवींरखनेसेकामनिकलेतो खैरनहींतो बेचडालनाअम्बिकादत्तकी मानेकहाकि खैर तुलसीमैं लिये जातीहूं परन्तु उसका ऋण बहुतबढ़गयाहै एकतुलसीसे क्या होगा बहिनबोली कि आखिर उन्होंनेभी कहाहै कि मैं किसी दूसरे महाजन से उधारलादूंगा तुम भगवानका नामलेकर के सवारहोवह आतेहैं तो मैं भी उनको पीछेसे भेजतीहूं ग़र्ज़ अम्बिकादत्त की माता मकानपर पहुंची दरवाजेपर उतरीतो इश्तिहार लगा देखाउदासीको प्राप्तहोय आकरबैठगई सासका आना सुनकर सरस्वतीभी कोठेपरसे उतरी और प्रणामकिया सास को उदासदेखकर पूंछा आज अम्माजान तुम्हारा चेहरा बहुत उदासहै सासनेकहा हांमहाजनने नालिशकरदीहै रुपये की सूरतकहीं से बन नहीं पड़ती फुलझारी बहिन ने जवाब

दिया अब मकानपर इश्तिहार लगचुका देखियेक्या होताहै सरस्वती ने कहा आप कुछ सोच न करें अगर छदामीलाल ने नालिशकरदीहै तो कुछ हर्जनहीं जयजयवन्तीके ससुराल में उसकालेनदेनहै उसने मुझसे वादाकियाहैकि मैं छदामी लालको समझादूंगी और जो नहीं मानेगातो उसकेरुपये का और यत्नहोजावेगा इनकरनेसे क्या प्रयोजन सासनेकहा अम्बिकाहोता तो मैं उसको छदामीलाल तक भेजती सरस्वती बोली यों आपको अख़्तियारहै परंतु मेरे नज़दीक महाजन से डरना उचितनहीं नहीं तो वह आगे को ढीठहो जायगा और आये दिननालिशका डरावा दिखातारहेगा सबसेबेह तर यह है कि इधरका इशारा न हो और किसी ढबसे कोई दबाव उसपर पड़जायकि वह दावाको ख़ारिजकरादे अम्बिकादत्त की माताने कहा जयजयवन्ती अभी लड़कीहैं कचहरी दरबारकी बातेंवह क्या जानेऐसा न होकि उनकेभरोसे में काम बिगड़जावे काबूहाथसे निकलजाय सरस्वतीने कहा जयजयवन्ती लड़की हैं परंतु मैंने बात पक्कीकरली है और मुझको भरोसाहैयह बातेंहोरही थीं कि दुर्गादत्तने दरवाज़े पर आवाज़दी सरस्वतीनेकहाकि दुर्गादत्तआयाहै अवश्यइस मुआमिलेमेंवह कुछ ख़बरलाया होगा दुर्गादत्तको सरस्वती ने भीतर बुलाया और पूछा क्या ख़बरलाये दुर्गादत्त ने कहा बहिननेआपकोनमस्कारकहाहै औरमिज़ाजका हाल पूछाहै और कहाहै छदामीलालको बुलायाथा बहुतकुछडराधमका दिया है और उसने वादा कर लियाहै कि नालिश न होगी यह बात सुनकर अम्बिकादत्त की माता को कुछ धीर्य हुआ परंतु सरस्वती आश्चर्य में थी कि जयजयवन्तीने यह कहला-भेजाहै और छदामीलाल नालिश कर बैठा यह क्या बातहै और इश्तिहारका मुआमिलाभी आश्चर्यका है मैं घरमें बैठी की बैठी रही मुझ को ख़बर नहीं हाकिम का इश्तिहार होता तो कोई चपरासी पियादा पुकारता दुर्गादत्त बिदा हुआ तो यमुनासे सरस्वती ने कहा दरवाज़े पर जो कागज़

लगा है उसको चुपके से उखड़ लाओ यमुना कागज़ उखाड़ लाई सरस्वतीने पढ़ा तो सफ़ाई शहर का हुक्म था नालिश का उसमें कुछ चर्चा नथा समुझगई कि यह भी मिश्रायनकी चालाकी है सास परतो यह हाल ज़ाहिर नहीं किया परंतु उनका इतमीनान अच्छे प्रकार करदिया कि आप निश्चिन्त बैठीरहिये नालिश का कुछ डर नहीं सासने कहा तुम्हारे कहने से नालिशके तर्फ़ से दिलजमई हुई परंतु दिवालीका तो त्योहार शिरपर चला आता है इसमें भी खर्च चाहिये आगरेसे चिट्ठी आनाभी बन्द है इसका शोच तो मेरा लोहू सुखाये डालता है सरस्वती ने कहा दीवाली को तो अभी एक महीना पड़ा है और दीवाली में क्या ऐसा बहुत खर्च होगा सासने कहा मेरे घर हरसाल दीवाली में पचीस तीस रुपये उठते हैं पूछोयहो मिश्रायन खर्च करनेवाली मौजूद है सरस्वतीने कहा कि खर्च करनेका क्या आश्चर्य है परंतु एक ज़रूरतकेलिये और एक बेज़रूरत से। दीवालीमें इतने रुपये खर्च करनेकी कुछ ज़रूरत नहीं सासनेकहा सालभर का त्योहार है परजों को खीलें बताशे देना फिर लोगोंके घर भेजना भिजवाना ज़रूर है कहनको तो तनिकसी बात है दशरुपये तक तो अम्बिका और यमुनाके वास्ते खिलौना वग़ैरह चाहिये अम्बिकाका व्याहहोगया तो क्या है भगवान रक्खे अभीतक उसके मिज़ाज में बचपन की बातें चली जाती हैं जबतक दो रुपये खिलौनेकेहेतु और चाररुपये रोशनीकेवास्ते नलेगामेरी जान खाजायगा और यमुना भी रोरोकर अपना बुरा हाल करेगी सरस्वतीने कहा परजोंकेलियेएकरुपयेकी खीलें और चारआनेके बताशे मिठाई और चारआनेके खिलौने और आठ आने रोशनी के लिये बहुत हैं भेजना भिजवाना तो इधर से आया उधरगया यमुनाभी अब खिलौने और रोशनी के लिये अधिक हठनहीं करेंगी मैं उनको समझालूंगी दीवाली का बन्दोबस्त मैं करलूंगी मेरा जिम्मा है इसके लिये आप उधार न कीजिये सासमे ऐसे बातें हुईं परंतु सरस्वती शोचमें थी

कि मियांको किसप्रकार समझाइये आखिर सरस्वती ने इस यत्नसे मियांको समझाया कि बात कहदी और मियांको भी नागवार मालूम न हुआ सरस्वती ने अम्बिकादत्त के सामने यमुना से छेड़ करके पूछा कि क्यों जी तुमने दीवाली के वास्ते क्या फ़िकिर कीहै यमुनाबोली जब भाई अपने वास्ते खिलौने और दिवाली लावेंगे तो तुम्हारे वास्ते लावेंगे अम्बिकादत्त अभीतक जवाब देने नहीं पाया था कि सरस्वतीने कहा कि भाई तोऐसी वाहियात बेजरूरत चीज़ क्यों लानेलगे यमुना खिलौने में क्या मज़ाहोताहै यमुनाने कहाभाई जान खिलौने से खेलेंगे और ताक़चेपर रखकरके तमाशा देखेंगे और दियालियोंसे साराघर रोशनकरेंगे सरस्वतीने कहा जो दोएक खिलौने पूजाके लिये आवेंगे उनको ताक़चेपर रख देना और चैतन्य लड़की खिलौने से नहीं खेलतीं और न अपने हाथ से रोशनी करतीहैं यमुनाने कहा कि रोशनीहम अपने हाथसे नहींकरेंगी मिश्रायन करेगी जब रोशनी होजायगी तबहम देखेंगी सरस्वतीने कहा जब तुमने रोशनी अपने हाथसेनहीं की तो जो रोशनी महल्ले में होगी उसको देखलेना जोदश बीस चिराग़ घर में बलेंगे उसको तुम अपने हाथ से बालना और सुनो खिलौनों से खेलना बहुत बुराहोताहै हमारेमैके के महल्लेके लड़कोंमें से एक लड़का एक बड़े खिलौने से खेल रहाथा एकबेर खिलौना हाथसे छूटकर पैरपर गिरपड़ा एक महीनेतक वह लड़का उठनसका और एक लड़की सारीरेशमी पहने हुये दीलीबार रहीथी लौ चिराग़की सारीमें लगगईऐसी आगफैली कि लोगबुझा नसके वह लड़की जलकर मरगई पस ऐसे खेल अच्छे नहीं और तुम अम्माजानका हाल देखतीहो कि उदासहैं यानहीं यमुनाने कहा उदास तोहैं सरस्वती बोली कि फिर तुमने यहभी सोचकिया कि क्यों उदासहैं यमुनाने कहा कि नहीं मालूम सरस्वती बोली वाह इसीपर तुम कहतीहो कि अम्माको मैं बहुत चाहतीहूं यमुनाने पूछा अच्छा भाभीजान अम्मा क्यों उदास हैं सरस्वती ने

कहा खर्चकी तंगीहै महाजन उधार नहीं देता इस सोचमें हैं कि यमुना खिलौनों के लिये हठकरेगी तो कहां से मांग करदूंगी यमुनाने कहा कि अच्छा हमनहीं लेंगी सरस्वतीने कहा तुम बहुत प्यारी बहिनहो और यमुनाको गले से लगा-कर प्यारकिया अम्बिकादत्त चुप बैठा हुआ यह बातें सुनता रहा जो किताब माकूल थी उसके मनने भी मानलिया और उसी समय नीचे उतर कर माता के पासगया और कहा कि मैंने सुना है कि तुमदीवाली के सोचमें बैठी हो सो मेरेलिये तुम कुछ सोच मतकरो मुझको खिलौने और रोशनीके लिये कुछ न चाहिये और यमुना भी कहती है कि मैं भी नहीं मगाऊंगी खर्चकी एक रकमतो यों कमहुई और दो रुपयेमें सबसामान सरस्वतीने करलिया और भेजने भिजवाने के हेतु सरस्वतीने आप बन्दोबस्तकिया जब बाहरसे बैना आया घर में ठहरने न दिया आदमी देकर बाहर निकला और इसने महरीसे कहाकि इसको फ़लानीजगह पहुंचादो जिस २ को भेजना था सब नाम बनाम पहुंचगया और दो रुपयेमें अच्छे प्रकार दीवालीहोगई लक्ष्मी मिश्रायन यह बन्दोबस्त देखकर जलगई इस वास्ते कि उसकी बड़ी रक़म मारी गई जितना बाहरसे आता वह सब लेती और जो घरमें होता उसमें से आधी तिहाई निकाललेती और सब हंडियामें भरके महीने तक फांकाकरती दीवालीके बाद सरस्वती के बापकी अवाई हुई दशदिन पीछे दीवालीको देवीदत्त कांगड़े से घर आया सरस्वतीने पहले से अपने बाप की अवाई सुन रक्खी थी और सासु और पतिसे ठहरगया था कि जब तहसीलदार आवेंगे उसीदिन मैं उनसे मिलने जाऊंगी जब सरस्वती ने बाप का आनासुना तुरन्त डोली मंगा जापहुंची बापने गलेसे लगाया और देरतक हालपूछते पाछतेरहे और कहा तुम्हारे लिखने केमुआफ़िक ईश्वरीदत्त आगरेको गयेहैं कलया परसोंसमधी साहब को लेकर यहां पहुंचेंगे उनकी एक चिट्ठीभी मुझ को राह में मिली थी [illegible] मिलगई है ग़र्ज

रातभर और अगले दिनभर सरस्वती अपने मैकेमें रही और सांझ समय पितासे कहा अगर आज्ञा दीजिये तो आज मैं चलीजाऊं बापने कहा अभी आठ सातदिन और रहो हम समधिन को कहला भेजेंगे सरस्वतीने कहा जैसा आप कहें वैसा मैं करूं परंतु अब्बाजानके आनेसे पहले घरमेंमेरा होना उचित जानपड़ताहै पिताने सोचकर कहा हां यह बात तो ठीक है अर्थात् सरस्वती बापसे विदाहोकर घर आ पहुंची अगलेदिन ऐनभोजन के समयपर पण्डित शंकरदत्त अम्बिका दत्तके बापअचानक आपहुंचे थे राजाजयसिंह रईस आगरे के सरकार में मुखतार थे पचास रुपये महीना उनकी तनख़ाह मकान और सवारी रईस के जिम्मे था ईश्वरीदत्त सरस्वतीके लिखने से आगरे गया और सरस्वतीकी चिट्ठी शंकरदत्त को दिखलाई शंकरदत्त बहू की चिट्ठी देख कर बहुत आनन्द हुआ और यों था यदछुट्टीभी नलेतापरंतु बहूकेदेखने के शौक़मेंरईससे बहुतकह सुनकर छुट्टीली और ईश्वरीदत्तके साथहुये जो कि सरस्वतीने पहिले कभी ससुरेको नहीं देखाथा लाजके मारे कोठेपर जाबैठी अम्बिकादत्त की मातको यह आश्चर्य था कि ये क्योंकर आगये ग़र्ज भोजन के पीछे बातें होनेलगी पण्डित शंकरदत्तने बीबीसे कहा कि सुनों मुझको तो तुम्हारी छोटी बहूने खींचकर बुलायाहै और सब वृत्तान्त चिट्ठी का और ईश्वरीदत्त के जाने का जोरू से बयान करके कहा कि बहूको बुलाओ सास कोठेपर गई बहूको साथ ले आई सरस्वतीने ससुरेको भुककर प्रणामकिया और बैठगई शंकरदत्तने कहा सुनो बेटो हमतो निजतुम्हारे बुलाये आये हैं तुम्हारी चिट्ठी देखतेही हमाराजी बहुतप्रसन्न हुआ परमेश्वर तुम्हारी आयुर्दाय बड़ी करे और सचकरके अबहमारे घरके अच्छे दिन आये जो तुम हमारेघर आई और मुझको भरोसाहुआ कि अब इसघरके कुछदिन फिरे कल जो परमेश्वरने चाहा तो तुम्हारी इच्छा के मुआफिक बन्दोबस्त होगा ग़र्ज दोचारदिन ... दिन पीछे आये थे

मिलने मिलाने में रहे फिरदो चारदिन सफ़रके कारण से घर के काम काजके तर्फ़ कुछ ध्याननकिया एकदिन बहूकोबुलाकर पास बैठाला और लक्ष्मी मिश्रायन को बुलाकरकहाकि मिश्रायन हमारे रहते सबहिसाब किताबकरलो जिस २का लेनादेना है सबलिखादो किसोच समझकर जिसकाजितना उचित होवेदियाजावे औरजोबाक़ीरहेउसकीबाद।पातीकरदी जाय मिश्रायनने कहाएककाहिसाब होतोमैंजबानी भीयाद रक्खूं बनिया बजाज कुंजड़ा हलवाई तमोली सब का देनाहै छदामीलालकाहिसाबअलगहैजिसको जितनादेनाहो मुझको दीजिये देआऊं आपके नामजसहो जायगा पण्डित यांकर हत्त सीधेसाधे थे देनेको तैयार होगये सरस्वतीने कहायोंबे हिसाबदेनेसेक्या प्रयोजनपहलेहरएककाकर्जादर्याफ़्तहोतब उसकोसोच समझकर देनाचाहिये मिश्रायन ने कहा भोजन बनाने से छुट्टी पाऊं तो हरएक से पूंछआऊं सरस्वती ने कहा पूंछआनेसे क्या होगा जिसका लेनाहो यहां आकर हिसाब करजाय मिश्रायन नेकहाकि बीबी आपनेतो एकबात कहदी अबमैं कहां २ बुलातीफिरों और वे लोगअपने काम धन्धे से कबछुट्टी पाते हैं जो मेरे साथ चले आवेंगे सरस्वती बोली मिश्रायन कोई रोज २ का आना जानानहीं है एकदिन कीबातहै जाकर बुलालावो शामको रसोईका बंदोबस्त हो जायगा तुमआजयही कामकरोऔरलेनेवालेतो देनेकानाम सुनकर दौड़े आयेंगे छदामीलालतोदो कोस नालिश करने कचहरी को गयाथा वहां आते क्या उसके पाउं की मेहदी घिस जायगीऔरदूर कौनहैं बनियां हलवाई तमोली सबइसी गलीमें रहतेहैं सिर्फ़ बजाज और छदामीलाल दूर है उनको कलपर रक्खो फुटकर हिसाब आज हो जाय मिश्रायन की किसी तरह मर्ज़ीनथी किहिसाबहो परन्तु सरस्वती नेबातों में ऐसा दबाया कि कुछ जवाब देते नबन पड़ा सबसे पहिले हलवाई आया पूछागया कि तुम्हारा क्या पानाचाहिये हलवाईबोला तीसरुपये [illegible]

के हलवाई ने कहा तीस रुपया क्या बहुत हैं पन्द्रह रुपये की मिठाई इसी दिवाली में आई अम्बिकादत्त की माता बोली अरी कैसी मिठाई अब की बेर दिवाली में जो मिठाई हमारे घर आई वह नक़द दाम देकर आई यह सुनकर मिस्रायन का रंग उड़ गया और बोली वह मिठाई तूने इनके हिसाब में क्यों लिखदी वह तो मैं दूसरे घर के वास्ते लेगई थी और तुझ को बत भी दिया था हलवाई ने कहा मुझसे तुमने किसी घरका नाम नहीं लिया इसी घरके नामसे तुम लाई थी और मुझे क्या फ़ायदा था कि दूसरे की चीज़ इनके नाम लिखता और मुझसे और किसी सरकार से उचापत भी नहीं है ग़र्ज़ शंकरदत्त ने कहा मिठाई की रक़म रहने दो और चीजें बताओ गरज़ इसी प्रकार और चीजें उसने बताईं जो जन्मभर नहीं आई थीं सिर्फ़ दो रुपये सच निकले बाक़ी सब झूठ शंकरदत्त का जी जलगया और बहुत सा उनको क्रोध आया और कहा क्योंरी मिस्रायन ऐसा ही तुमने दुनियांभर का ऋण इस घर पर कर रक्खा है हलवाई हो चुका तो कुंजड़ा आया उसने कहा पण्डितजी मेरा तो सीधा हिसाब है दो आने रोज़ की तरकारी अम्बिकादत्त की माता बोली अरे सेर भर तरकारी मेरे घर आती है दो आने की हुई कुंजड़ा बोला कि मेरी दूकान से मिस्रायन तीनसेर लाती है मिस्रायन बोली हां तीनसेर लाती हूं सेरभर तुम्हारे नामसे सेरभर अपनी बेटी के वास्ते सेरभर दूसरे घर के वास्ते मैं क्या मुफ़्त लेती हूं यह सुना सब तुम्हारे नाम बताता है कुंजड़े ने कहा अब बुढ़िया बेईमान सदा तू इसी घर के नामसे लाती रही और जो रुपया मिला इसी वास्ते मिला तेली तमोली का हिसाब हुआ तो उसमें भी बहुत ग़लत निकला ज़ाहिर हुआ कि मिस्रायन इसी घर के सौदे में अपनी बेटी और दो तीन पड़ोसियों के घर पूरे करती है इसी घर के नामसे सौदा लाती है और दूसरे घर बेच डालती गरज़ मामला फटकर हिसाब भगतगया अब अकेले बज़ाज़ और छदामीलाल का हिसाब रहा अम्बिकादत्त ने

नेचुपकेसे सरस्वतीसे कहा ऐसा नहो कि मिथायन भागजाय सरस्वतीने कहा घरबार लड़के बच्चे छोड़कर कहां भाग जायगी हां यावद् शैरतदार होती कुछ खाके परंतु ऐसी शैरतदार होती तो क्यों ऐसा काम करती लेकिन तौभी इतनी चौकसी इसकी अवश्य है कि बाहर आते जाते कोई आदमी देखता रहे यो ं कारदत्तने अपने एकनौकरको जोसाथ आयाथा चुपके से कह दिया कि मिथायनको आतेजाते देखतेरहो अवखाने से छुट्टीमिली और मिथायन चुपके से उठकर बाहर निकली तो भोला नौकर यो ंकारदत्त का पीछे २ हुआ मिथायन पहलेतो अपने घरगई और वहां से कुछ बगल में दबा सीधा बजाजके मकानपर जा उसको आवाज दी बजाज घबरा कर बाहर निकला और कहा मिथायन तुम इस समय कहां आई मिथायन ने कहा कि पण्डितजी आये हुये हैं जिन २ का देनाहै सबका हिसाबहोताहै कलतुम भी बुलाये जावोगे ऐसी बात मत करना कि मेरी रुसवाई हो बजाज ने कहा हिसाब में तुम्हारी रुसवाई की क्या बात है मिथायन बोली अथलाला तुम जानतेहो लालच बहुत बुरीहोती है सरकार के हिसाब मेंमें अपनेलिये भी तुम्हारे दूकानसे कभी २ लहुआ लेनसुख देतखेगई बजाजनेकहा क्यामालूम तुमअपने वास्ते क्या लैगई हो मिथायनने कहा मुझको तो इस समय हिसाब करने की सुधनहीं परंतु दोचारथान देखलहुआ लेनसुखनेदे हिसाब में निकलेंग मेरी हाथकी चार चूड़िया सोलह रुपये कीहैं बिसबिसाकर एकरुपया कम होगयाहोगा पन्द्रहरुपये मेरे नामसे कामकर देना और दोचाररुपया जो मेरेनामका निकलेगा देने को मौजूदहूं बजाजने कहा चूड़ियां तुमदेती हो मैं लेताहूं परंतुरातका समयहै बहीखाता दूकान परहै बदेखे क्या मालूमहो क्यागयाहै और क्या पानाहै मिथायनने कहा इस समय मेरी इज्जत तुम्हारे हाथहै जिसप्रकारहोसके बचाओ फिर बजाज से बिदा हो सीधी रूदासनाम के घर पहुंचीवह भी आश्चर्य में होकर कहने लगा कि इस समय

मियायन तुम कहां आई मियायन उसके पांवपर गिर पड़ी और कहनेलगी किमुझसे एकअपराध हुआहै छदामीलालने कहा वह क्या हुआ मियायन बोली कि तुम बचन दो किमैं चमाकरदूंगा तो मैं कहूं छदामीलालने कहा बाततो कहो मियायनने कहा चारमहीने हुये पण्डितजीनेआगरेसेसौरुपये तुमकोभेजेथे वहमेरेपाससे खर्चहोगये सरकारके डरकेमारे मैंने जाहिर नहींकिया अब पण्डित जी आये हुये हैं तुमको हिसाब के वास्ते बुलावेंगे मैं इसरुपयेका ठिकाना लगादूंगी तुमयह मतकहना कि मैंने यह रुपया नहीं पाया छदामी लाल ने कहा दोचार रुपये की बात होती तो मैं छिपा भी देता इकट्ठे सौरुपये तो मेरेकिये छिपनहींसक्ते मियायन ने कहा क्यालाला सौरुपये का भी मेरा भरोसा नहीं छदामी लाल ने कहा साफ़ बात तो यहहै कि तुम्हारा एक कौड़ी का भी भरोसानहीं जिसघरमें तुमने जन्म भर परवरिश पाई और उन्हीं के साथ यह सलूक किया तो दूसरे के साथ तुम चूकनेवालीहो मियायननेकहा हांलालाजब बुरासमय आता है तो अपनेघर के बैरी बनजाते हैं खैर जो तुमको मुझपर भरोसा नहीं तो लो यह मेरीबेटीकी पहुंची और जोशन रखलो छदामीलाल ने कहा यह मुआमिलाकी बातहै दिन हो तो मालपरखाजाय और मालूमहोकि कितनेकाहैपरंतु अटकल से यह माल पचासका होगा मियायन ने कहा अरे लाला ऐसा अन्धेर मत करो अभी चारमहीने हुये दोनों चीजें नई बनवाईथीं सौ सवासैके लागत कीहैं छदामीलाल ने कहा इसमें बुरा मानने की क्या बातहै तुम्हारीचीज सौ की है या दोसौकी है कोई लिये घोड़ाहीलेताहै तौलानेसे जितनेकी ठहरेगी मालूम होजायगी यहसबबन्दोबस्त कर-के मियायन लौटआई और पण्डितजी के नौकर ने पांव दा-बने में यहसब हाल पण्डितजी से बयान किया अम्बिकादत्त की माताके मुखसे सरस्वतीको भी मालूमहुआ भोरहुआतो अज्ञान और छदामीलालबुलवायेगये हिसाबमें कुछ तकरार

होनेलगी मिश्रायन बढ़ चढ़कर बोलती थी बजाज ने कहा तू बुढ़िया क्या बड़ २ करतीहै उठाओ अपनी चूड़ियां तू तो पन्द्रह रुपये की बताती थी बाज़ार में नौ रुपये की आंकते हैं फिर छदामीलाल ने पहुंचियां और जोशन निकाल सामने रखदिये और मिश्रायन से कहा यहमाल पचासका आंकता है और हमारे काम का नहीं शंकरदत्त ने बजाज और छदामीलाल से पूछा क्यों भाई यह कैसी चीजें हैं तब दोनों ने रातकी कहानी बयान की उस समय मिश्रायन के मुंह पर मानों लाखोंजूतियां पड़रहीथीं जब हिसाबहोगया तो शंकरदत्त ने देनेको रुपया निकाला तो जितना वाजिबी था आधा २ रुपया सब का देदिया और कहा कि मैंने आगरे से रुपया मंगाया है दश पांच दिनमें आ जायगा तो बाक़ी भी दियाजायगा सबलोगों ने पूछा कि जो मिश्रायन के तर्फ़ निकला वह किससे लें शंकरदत्त ने कहा कि मिश्रायनसे हिसाब की खबर सुनकर जयजयवन्ती डोली पर चढ़कर आ पहुंची और सरस्वतीसे गिल्लाकिया कि क्योंजी तुमनेमुझको खबर न की सरस्वती ने कहा अभी तो हिसाबहोताथा जब यह हिसाब होचुकता तो मैं तुमको खबरकरती गर्ज़हिसाब होजानेके पीछे शंकरदत्त ने मिश्रायन से कहा अजीइनका रुपया अदाकीजिये मिश्रायन ने नीचे आंखें कर कहा मेरे पास बेटीका गहनाहै उसमें यह अपना २ समझबूझलें बेटी का तमाम गहना तो कुंजड़े हलवाई बनिये बजाज तमोली के हिसाब में आधेदामोंपर बिकगया छदामीलाल के सौ रुपयेके वास्ते रहनेका झोपड़ा गिरवी करनापड़ा लिखापढ़ी पक्के कागजपर होकर चार भले आदमियों की गवाही होगई शंकरदत्त ने मिश्रायन से कहा बस अब आप यहांसे पधारिये तुमऐसी निमकहरामबेईमान काहमारे घरमें कुछकाम नहीं सरस्वती ने कहा इनमें नमकहरामी के सिवाय एक गुण और भीथा वह यह कि घरमें विरुद्ध डलवानेकी यत्न में रहती थी क्यों मिश्रायन वह काढ़ी कीबात यादहै कितुमने

कहा कि बहू कहतीहैं कि मेरे सिरमें दर्द है बोल तो सही
कब तूने मुझसे कहाथा और कब मैंने दर्द सिरका बहाना
कियाथा मित्रायन ने कहा दुलहिन तुम अटारी पर पाठ
कर रहीथी मैं कोठेपर गई तुमको पढ़ते देख उलटी फिर
आई सरस्वती ने कहा दर्द सिरकी बात अपने मन से बनाई
मित्रायनने कहा मैंने सोचाकि सबेरे से अबतक तुमपढ़रही
हो अब कहा चूल्हे में सिर खपाओगी सरस्वती नेकहा भला
पहाड़जानेकी बात तूने किसप्रयोजनसे कहीथी मैंने तुझसे
सलाहकीथी या तूने मुझको कहते सुनाथा इसका कुछ उ-
त्तर मित्रायनको न आया फिर सरस्वतीने इश्तिहार निकाल
पण्डितशंकरदत्त के सामने डालदिया और कहा देखिये यह
मित्रायन आपतो महल्ले के फाटक से इश्तिहार उखाड़कर
लाई और मकानपरलगाया और आपही अम्माजानसेदौड़ी
कहनेगईकि महाजनने नालिशकी सरस्वती ये बातें कहती
जातीथी और शंकरदत्तका चेहराक्रोधसे लालहोहोजाताथा
उधर जयजयवन्ती दांतपीसरही थी शंकरदत्तनेकहा मित्रा-
यन तुझको निकालदेना काफीनहीं है तू बड़ी बदजात स्त्री
है यह कहकर अपने नौकरको आवाजदी और कहाकि ग-
नेश इसपापिनको थानेमें लेजाओ और पर्चेमेंहम इसकासब
हालखिदेतेहैं सरस्वतीने शंकरदत्तसे कहा बस अब जाने
दीजिये और मित्रायन से कहाकि चलदे अर्थात् इस विधि
अपने कौतुकोंकेकारण मित्रायन निकालीगई जबमित्रायनघर
पहुंचीतो बेटी बोली क्यों मैं न कहतीथी कि अम्माऐसी लूट
तू मतमचा सौ दिन चोरकेतो एकदिन साहका ऐसा न हो
किसी दिन पकड़ीजावे तुम किसकी मानतीथी अच्छाहुआ
जैसाकिया वैसापाया अब ससुराल में मुझको बदनाम मत
करो जहां तुमको तुम्हारा परमेश्वर लेजाय चली जाओ मेरे
घरमें तुम्हारा कामनहीं है गहनेका मैंने संतोषकिया प्रारब्ध
में होगा तो फिर मिलरहेगा इसप्रकार से परमेश्वर २ करके
अपने बैरिनको सरस्वतीने निकालपाया जबमित्रायन इस घर

से निकलगई तो सरस्वतीने बापके पास जानेको फिर आज्ञा चाही और आनन्द पूर्वक बिदा हो माताके घर आई और सात दिनतक बराबर माताके घर रही जिस२ बातमें बापसे सलाहलेनी थी सबली बापने पूछा मिश्रायन निकल गई सरस्वतीनेकहा आपकी कृपासे यह सबकाम सिद्धिहुआ न बड़े भाई आगरे जाते न अब्बाजान आते न यह वर्षोंकालेखा तै होता न मिश्रायन निकलती बापनेपूछा अबबन्दोबस्त घरका किस तौरहोगा सरस्वतीने कहाकि मिश्रायनके निकलते मैं दूधरचली आई परंतु अब बन्दोबस्तक्या कठिनहै दूसीमिश्रायनकी खुराबीथी अबमैं सब देखभाललूंगी देवीदत्त ने पूछा और कहाक्या २ बातेंवरमें तुमनेनई जारीकीं सरस्वतीनेकहा अभी मैंने कुछ देखा भालानहीं आरम्भहीसे मिश्रायनका झगड़ाहोगया अब दूरादा है कि हर एक बातको सोचों और बन्दोबस्तकरूं और आपको चिट्ठीकेद्वारा खुबरकरतीरहूंगी देवीदत्तने ब्याह पीछे से सरस्वती का दस रुपया महीना मुकर्ररकर दियाथा सरस्वतीसे पूछा अगरतुमको खर्चकीतकलीफ़रहतीहो तो मैं कुछ रुपया तुमको देताजाऊं सरस्वती ने कहा वही दसरुपये मेरी जरूरतसे अधिकहैं बल्कि आज तकके सबरुपयामेरे पासजमाहैं अधिकलेकर मैं क्याकरूंगी और जबप्रयोजनलगेगा तबआपसे मांगलूंगी गर्जबापसेबिदा हो सरस्वतीने ससुरालमें आकरदेखाकि सासचूल्हा झोंक रहीहै सरस्वतीने आश्चर्यसे पूंछाकि अयअबतककोई मिश्रायननहीं रक्खीगई सास बोली अनेकोतो कईआईं पर तनखाहसुनकर हिआउनहीं पड़ताकि किसी को नौकर रखिये लक्ष्मीबुरीथीमगरआठआनेमहीनेपरउसनेपचीसवर्षनौकरी की अब जो मिश्रायन आतीहै खानाऔर दो रुपयेसेकमका नामनहीं लेतीमैंने तुम्हारेआनेपर रक्खाथासरस्वतीने कहा मिश्रायन तो एकमेरे नजरमें बैठीहै परंतु दर माहावह भी अधिकमांगतीहै रामकलीकी छोटीबहिनगुलबासा पकाना सीनासब जानतीहै एक बाररामकलीने मुझसे कहाथा कि

कोई अच्छा ठिकाना होतो। गुलबासा नौकरीकरनेको मौजूद है अम्बिकादत्तकी माताने पूछा वह क्या दरमाहालेगी सरस्वती ने कहा वह तो अपने मुंहसे तीनरुपया रोटी मांगती है परंतु समझायेसे दोरुपये महीनेपर शायदराजी होजाय अम्बिका दत्तकी माताने कहा कि दोरुपया खानादेना होतोहरभानदत्त मिश्रकी जोरू अनन्दीचिरौंगी करतीहै उसीकोनरक्खें सरस्वती ने कहा उसको तो मैं चार आने महीने परभी न रक्खों अम्बिकादत्त की माताने कहा कि बेटी क्यों सरस्वती ने कहा पड़ोसका रहनेवाला आदमी बुरा आंखनची और जो चीजचाही घरमें जाकर रख आई जब घरसे घर मिला है तो हरघड़ी हरभानदत्तकी घरवाली अपने घर जायगी और क्या आश्चर्य है कि रातकोभी अपनेघररहे अम्बिकादत्तकी माताने कहा शालिकराम मिश्र की स्त्रीने अपनी बेटी रामकुअंरि के लिये मुझसेकई बार कहा और रामकुअंरि तो गोलदरवाजे में रहतीहै सरस्वतीनेपूछा वही रामकुअंरि जो अच्छे भांति बनीठनी रहतीहै अम्बिकादत्त की माताने कहाबनीठनीक्या रहती है नई ब्याही हुईहै कपड़े पहिनने का जरा शौक है सरस्वती कहा ऐसा आदमी नहीं रखना चाहिये अम्बिका दत्तकी माताने कहा शालिकरामकी जोरू नौकरी करनेको राजीहै सरस्वतीने कहा उसके साथ एक दुमछल्ला छोटी बेटी का लगाहै वहएकदम माको नहीं छोड़ती यशनाम तोएक का होगा और भोजन करने को दो २ होंगे अम्बिकादत्त की माने कहाफिर और कोईतो मेरे चित्तनहीं चढ़ती सरस्वती ने कहा देखो उसी गुलबासाको बुलाऊंगी अम्बिकादत्त की माताने कहा तनख्वाह क्या होगी सरस्वतीनेकहा कि ईमानदार आदमी तोकमदरमाहे परमिलना कठिनहै इनलोगोंको दो की जगह तीनदेने गौंहैं परंतु लच्छी ऐसीको आठआना देकर घर लुटवाना मंजूर नहींहै उससमयतो सासु बहुओं ने मिलजुलके रसोई बनाली भोजनके पीछे सरस्वती यमुना अपनी नन्दकोले अटारीपरचलीगईं उसवक्तपंडित शंकरदत्त

घरदई सरस्वतीने कोठे परसे उतरना बड़त कम कर दिया था। सिर्फ़ सुबह शामनीचे उतरतीथी बल्कि यमुनाको भी मना कर दिया था। कि हर घड़ी नीचे मत जाया करो। यमुना तो लड़कीथी उसनेपूंछा अच्छी भाभीजान क्यों न जावें सरस्वती ने कहा बड़ोंके सामनेहर घड़ी नहींचलते फिरते खानेकेपीछे घरकेहिसाब किताब में शङ्करदत्त हो और घरवालोंसे लड़ाई होनेलगी बीबीकी यह शिकायतथी कि तुमखर्च बड़त थोड़ा देतेहो यहां शादीब्याह बिरादरीका लेना देना आनाजाना सब मुझको करनापड़ता है शङ्करदत्तकहते थे कि वीसरुपया महीना थोड़ानहीं है तुमको घरगृहस्थी करनेका ढंग नहीं है इतनेमें शङ्करदत्तने यमुना को पुकारा यमुना आई कहा अपनीभाभी को बुलालाओ सरस्वतीने बुलाने की खबरसुनी तो आश्चर्यमें ऊई कि इससमय क्यों बुलाया यमुना से पूछा क्याहोरहा है यमुनाने कहा लड़ाई होरही है सरस्वती गई तो शंकरदत्तने कहा क्योंबेटी अबघरका बन्दोबस्त कौनकरे गा सरस्वतीने कहा अम्माजान करेंगी जिसप्रकार अब तक करतीथीं शङ्करदत्तने कहा इनके बन्दोबस्तको देखलिया बीस रुपया महीना जिसघरमें आताहो उसघरकी यही सूरत है कि न अच्छाकोई बर्तनहै न इज़्ज़तकी कोई चीज जो किसी समय एक चिमचा शरबत दरकार होतो परमेश्वरने चाहा उसका सामान भी घरमें न निकले सरस्वती ने कहा अम्मा जानका इसमें क्या दोष है लच्छी मिश्रायन ने घरको सत्या नाशकिया परिण्डतशङ्करदत्तबोले इनमेंगृहस्थीके करनेकीबुद्धि होतीतो मिश्रायन का क्या दावा था मिश्रायन नौकरथी या घरकी मालिकनथी सरस्वती ने कहा पच्चीस वर्ष का जब पु- राना नौकर लूटनेपर कमरबांधेतो उसके धोखेको कौनजान सक्ता है ऐसे पुराने आदमीपर तो शुबहा भी नहीं हो सक्ता शंकरदत्त बोले तुमको आखिर शुबहा ऊआ या न ऊआ सरस्वतीने कहा मुझको क्या शुबहाऊआ उसकी शामत और बुरे दिनथे कि उसने मुझको छोड़के अपने ऊपर खराबी ली

इतनेमें सासबोली पचासमें तो तुम अपने अकेले दमके वास्ते तीसरुपया रक्खो और यहां कुनबेके लिये बीस रुपया शंकर दत्तने कहा घरकाखर्च बाहरका खर्चकहीं बराबर होसक्ता है तुमने तो मुझको अकेला समझलिया और खिदमतगार सवारी मकान कपड़ा लत्ता भी तो इसीमें है जोरूने कहा कि सवारी और मकान तो सरकार से मिलता है शंकरदत्त ने कहा घोड़ा मिला दाना घास तो अपने गिरहसे खिलाना पड़ता है चार रुपयेका साईस और मकान की मरम्मत फिर सरकार दरबारके मुआफ़िक़ हैसियत देनालेना हजारबखेड़े हैं नहीं मालूम मैं किसप्रकार निर्बाह करताहूं सरस्वती ने सासमे कहा अम्मा जान बीस रुपये में तकरार करनेसे क्या फ़ायदा जितना मिलता है परमेश्वर का शुक्रकरो यह बीस हमारे नज़दीक हजारोंके बराबरहैं सासने कहा बेटीमुझसे तो इस बीसमें घर नहीं चलता यह सुनकर सरस्वतीने सास को रोका और शंकरदत्त से कहा आप चाहिये दो रुपये और कमदीजिये परंतु जोकुछ दीजिये महीने २ मिला करें जिससमय पैसा नहींहोतातो उधारलेनापड़ताहै और उधार से घरकी रहीसही बरकत भी उड़जातीहै शंकरदत्तने कहा- हिंदुस्तानी सरकारों में तलब मिलनेका दस्तूर बहुत बुराहै कभी छठेमहीने कभी बरसवेंदिन तलब मिलतीहै इस कारण खर्चका बंधेज नहीं हो सक्ता परंतु छदामीलाल से मैं कह जाउंगा कि महीने के महीने बीस रुपया तुमको दे दिया करेगा सरस्वतीने पूछा कि महाजन बनाजाइयेगा तो वह आप से सूदमांगेगा शंकरदत्त ने कहा नहीं सूद क्या लेगा हमारे सरकारमेंभी इसका लेनदेनहै वहांसे उसका आजायगा सरस्वतीने कहातो बहुत उत्तमहै इसप्रकार बीसरुपये तना ख़्वाह ठहरी परंतु अम्बिकादत्तकी माता को बुरा लगा और और अलग जाकर सरस्वतीसे गिलाकिया सरस्वती ने कहा कि घरतो बीस रुपयेमें मैंचलादूंगी इसका आपकुछ सोच न कीजिये और पण्डितजीतो तीसरुपये से कममें अपनी हैसि-

वत दुरुस्त नहीं रक्खा को सुलतानी की नौकरीमें पहिले तो
ऊपरसे आमदनी नहीं और जो हुई भी तो पण्डितजी क्यों
लेनेलगे अगरवह आप लोभ करेंगे और दोचार रुपया घरमें
अधिक भी आयेतो उचित नहीं यहबात सुनकर सासचुपहो
रही सरस्वतीने गुलबासा मिश्रायन को बुलाभेजा और कह
सुनकर दो रुपया खानेपर राजी करलिया और जता दिया
कि गुलबासा कोई ऐसीबात नहो कि तुम्हारे भरोसेमें फ़रक
पड़े जिसप्रकार तुम्हारी बड़ीबहिन हमारे मैके में रहती है
उसी प्रकार तुम रहना गुलबासा ने कहा बेटी भगवान उस
घड़ी मौत देवे कि पराये मालपर नज़र करूं ज़रूरत हो तो
तुमसे मांगकर खाऊं पर बेहुक्म नोनतक चखना दोष सम-
झतीहूं दूसरे दिन शंकरदत्त आगरेको सिधारे और ज़रूरत,
की सबचीज़ें सरस्वतीने इकट्ठीमंगवालीं और सदायहदस्तूर
रक्खा कि सब समय पर हर एक चीज़ ले रखती थी मिर्चा
धनियां अनाज, दाल, चावल, खांड़, लकड़ी, कंडा, आलू,
अरुई, मेथी, शलजम, सोयेकासाग, हरचीज़ वक़्तपर मोलली
जातीथी मिश्रायन मिलाकर घरमें छः आदमी थे दोनों जून
दालरोटी चावल और दो भांति की तरकारी मिश्रायन बना-
लेती थी और सातवें दिन सादा पुलाव और मीठे चांवलों
के पकने का मामूल था घरमें दोतीन प्रकार की चटनी कोई
चाशनी दार कोई अर्क नाना की कोई सिर्का की दो चार
प्रकार का मुरब्बा बना रक्खा इसके सिवाय शर्बत अनार
नीबू शर्बत, शिकंजबीन शर्बत, बनफ़शा शर्बत, नीलोफ़र
शर्बत,फालसाको एकर बोतल बनाली और हरतरहका ज़-
रूरी सामान घरमें मौजूदरहा करता था बावजूद इससामान
के पन्द्रह से अधिक खर्च नहीं होताथा पांच रुपया जोबचते
थे उससे बड़े २ बर्तन और एक बर्तन चाह बनाने का मोल
लिया दोसंदूक बनाये गये दो अलमारियां असबाबकी को-
ठरीमें बैठने की चौकी पुरानी होगई थी वह दुरुस्त कराई दोप-
लंग तैयारहुये खुलासा यह कि सरस्वतीने इसबीस रुपये में

घरको बड़ी रौनक़दी हर वस्तु में बन्दोबस्त और हरचीज़ में किफ़ायतको दख़लदिया लक्ष्मी मिश्रायनके समय में यमुनाके वास्ते दोचार पैसेका नित्यसौदा बाज़ारसे आताथा इसवास्ते कि रसोई में कुछनहीं बचताथा अब सवेरे की रसोई जो कुछ बचजाता था वह तीसरे पहर यमुनाके खानेकेलिये रखदिया जाताथा कभी यमुना को वह खाना दिया गया कभी नमक पारा बनादिये गये और जो आठवें दसवेंदिन यमुना कोभी चाहा तो बाज़ारसे कुछ मंगवादिया गया इस घरसे जन्मभर भिक्षुक को एक दिन चुटकी आटा या किसी अपाहिज को आधी रोटी नहीं मिलती थी अब दोनों समय दो२ रोटियां फ़क़ीरोंको भीदी जातीहैं घरमें जो असबाब बेढंगी से साग मूलीकी तरह से पड़ा रहता था अब सब वस्तु ठिकाने लगी कपड़ों की गठरियोंमें तो कपड़े अच्छे प्रकार तह किये हुये बंधेहैं अनाज पानी की कोठरी में हर एकचीज़ एहतियात सेरक्खीहुईहैबर्तन साफ़ सुथरेअपनीजगहरक्खे हैं फूलकेअलग और पीतलकासकुटके अलगगोया घरएककलथीजिसकीकील पुर्जेसबदुरुस्त और उसकलकी कुंजी सरस्वतीके हाथमेंथी जब हुकदियाकलअपने मामूलसेचलनेलगी जबसेसरस्वतीने घरका बन्दोबस्त अपने हाथमें लियाश्धारलेना सौगन्धहोगया सरस्वती घरका सबहिसाब एककिताब में लिखा करती थी जब कोई वस्तुहोचुकी फिर आई और गुलबासा ने ख़बर की कि बीबी दोदिनकाघी औरहै सरस्वतीनेअपनी किताब निकाल करदेखा किकिसदिन कितनाघी आयाथा और कितनेरोज़के हिसाबसे ख़र्चहुआ गुलबासा ऐसी ईमानदार नौकर थी कि मुमकिन नहीं था कि कोई चीज़ फ़ज़ूलख़र्च होया बेहिसाब उठजाय पिसाई वालोंकी पिसाइयां और धोबिनकी धुवाइयां तकसरस्वतीकी किताबमें लिखीजातीथी जबहर एकचीज़का बन्दोबस्त होगया तो सरस्वतीने दूसरे कार्यों को देखना आरम्भ कियाकम्बिख़्तदत्त पढ़ता लिखतातोथा परन्तु उस बेतदबीरी और बेपर्वाई से जिस तरह आज़ादख़ुद मुख़्तार लड़के पढ़ा

करते हैं बाप तो इसके बाहर रहते थे बड़े भाई से सिर्फ़ अढ़ाई वर्ष की छुटाई थी इसलिये अम्बिकादत्त पर बड़े भाई का दबाव कमथा सुबहशाम अम्बिकादत्त सबक़ पढ़लेता था और फिर अपने हम जोलियों में गंजीफा शतरंज चौसर खेला करताथा बाज़ दफ़ा खेलमें ऐसामसरूफ़होता किपहररात गये घर आता सरस्वती को यहहालतोमालूमथा परंतु मौक़ा ढूंढ़तीथी कि ऐसेढबसे कहनाचाहिये कि बुरामालूम नहो एकदिन बहुत रातगये अम्बिकादत्तआया और शायदबाज़ीजीतकर आया था इससे खुशथा आतेही साथभोजनमांगा गुलबासा मिश्रायन खाना गर्मकरने दौड़ीगई अम्बिकादत्त समझा अभी मिश्रायन पकारही है पूछा मिश्रायनअभीतक तुम्हारीदेगची चूल्हे सेनहीं उतरी सरस्वतीने कहा कई बेर उतरकर चढ़चुकी है ऐसे समय तुमभोजनकिया करते हो फिरसोई ठंढीहोकरमिट्टीहोजाती है तुमऐसा उपाय क्योंनहीं करते कि सबेरे भोजन कर लिया करो तुम्हारे इन्तिज़ार में अम्मा जान कोभी नित क्लेश होता है अम्बिकादत्त ने कहा अये तुमलोग मेरे आसरे बैठे रहते हो मैंतो जानताथा कि तुमभोजनकरलिया करते होगे सरस्वतीनेकहा पुरुषों के पहले स्त्रियोंको खाना कब उचित है अम्बिकादत्तने कहा दो चार दिनकी बातहोतो कटसक्ती है इसमें हठकी क्या बातहै तुम भोजनकरलिया करो सरस्वती तो उससमय चुपहोरही परन्तु कोठेपर अम्बिकादत्त ने फिर आप छेड़कर इसी बातको कहा सरस्वतीनेकहा आश्चर्य की बातहै तुम अपने दस्तूर के खिलाफ़ नहीं करसक्ते और हम लोगोंसे चाहतेहो कि हम अपने दस्तूरके खिलाफ़करैं तुम्हीं सबेरे चलेआयाकरो अम्बिकादत्तने कहा भोजनपानेकेपीछे मेरा बाहर निकलने को जी नहीं चाहता और मुझको नींद देरको आतीहै घरमें बेकाम कार्यपड़े २ जी घबराताहैइसलियेमैं देरकरके आताहूं कि भोजनके पीछे सोरहूं सरस्वती ने कहाकि कामकार्य तो अपने आधीनहै अगर आदमी अपने वक्तोंका बन्दोबस्तकरे तो हज़ारों कामहै एक पढ़ने का

शग़ल क्या काम है मैं अपने बड़े भाई को देखा करती थी कि आधी रात तक किताब देखते और जिसदिन संयोग से सो जाते तो बड़ा पछताव किया करते थे तुम पढ़ने में कम मन लगाते हो इस कारण बेशक इसी से तुम्हारा जी घबराता है अम्बिकादत्त ने कहा और क्या मन लगाऊं दो तीन सबक सब का पढ़ लेता हूं याद कर-लेता हूं सरस्वती ने कहा नहीं मालूम तुम कैसा पढ़ना पढ़ते हो जिस दिन मिसायन का हिसाब किताब होता था और अम्मा जान तुमसे हिसाब पूछती थीं तो तुम बता नहीं सके थे मुझको शर्म आती थी अम्बिकादत्त ने कहा हिसाब दूसरी चीज़ है मैं अरबी फ़ारसी पढ़ता हूं उससे और हिसाब से क्या तअल्लुक़ सरस्वती ने कहा पढ़ना लिखना इसी वास्ते होता है कि अपना कोई काम अटका न रहे बड़े भाई अरबी फ़ारसी बहुत पढ़ गये हैं परन्तु नौकरी नहीं मिलती अब्बा कहा करते हैं कि जब तक हिसाब किताब और कचहरी का काम न सीखोगे नौकरी का ध्यान मत करो छोटा भाई रामदत्त मदर्से में पढ़ता है और हिसाब किताब में बड़े भाई से ज़ियादा होशियार है और अब्बा उससे बहुत खुश हैं और कहते हैं कि चार बर्ष मदर्से में और पढ़ो तो तुमको कहीं नौकर करा देंगे अम्बिकादत्त ने कहा मदर्से में कम उमर आदमी को भरती करते हैं मेरी उमर अधिक है सरस्वती ने कहा मदर्से में जाने पर क्या है यों शहर में क्या सिखाने वाले नहीं हैं जितना समय तुम खेल कूद में गंवाते हो पढ़ने लिखने में लगाओ अम्बिकादत्त ने कहा खेलता क्या मैं दिन रात खेलता हूं कभी घड़ी कभी दो घड़ी को बैठ गया सरस्वती ने कहा खेलना अफ़यून की भी चाट है थोड़े से शुरू होकर बढ़ती जाती है इहां तक कि लत पर जाती है फिर छूटना कठिन होता है पहले तो ये खेल दोष हैं दूसरे मनुष्यों को पढ़ने और काम की बातें हासिल करने से रोकते हैं कामकार्य के मनुष्य ऐसे खेल नहीं खेलते निकम्मे लोग अलबत्ता इस प्रकार दिन काटते हैं इन खेलों में जैसा दांव जीतने से मन प्रसन्न होता है हा-रने से दुःख भी बहुत प्राप्त होता है और जिस प्रकार उस आनन्द

की कुछ जड़ नहीं होती उसप्रकार यह दुःख भी नाहक का होताहै और बहुधा खेलते २ आपसमें मुफ़्तकी तकरार भी होजातीहै मेरी सलाहमानो तो इन खेलों को बिलकुल छोड़ दो लोगतुम्हारे मुंहपरतो कुछनहीं कहते परन्तु पीछे हंसते हैं परसोंकी बातहै कि तुमको कोई आदमी बुलानेआया था सियायनने अन्दरसे जवाबदिया कि बाहर गयेहैं उस पुरुषने अपने साथवालेसे कहा कि मियां चलो सवरूप रंजीके मकान पर चलो वहां शतरंजके जमघटमें मिलेंगे अब्बाजानकाशहर में बडानामहै ऐसीजगह जाने से नाम बदहोताहै और मैंने अब्बाजानको अफ़सोसकरते सुना कि हाय हमारे भाग दो लड़कों में कोई ऐसा न हुआ कि उसको देखकर जी प्रसन्न होता परमेश्वरीदत्तको कुछ लिखाया पढ़ाया था वह अपनी नौकरीके पीछे ऐसा पड़ाहै कि लिखना पढ़ना सब भूलगया है ये छोटे साहबहैं इनको खेलकूदसे छुट्टी नहीं बल्कि हमारे अब्बाकोभी किसीने इसकी खबर करदी मुझसे पूछते थे मैंने कहा सब झूठहै अगर ऐसी बात होती तो मुझको मालूम होता सरस्वती की नसीहत ने अम्बिकादत्त पर बहुत असर किया और उसने खेलना बिलकुल छोड़दिया अब पहिले के बनिस्बत अरबी फ़ारसीपर ज्यादह मेहनत करनेलगा और एक दस्तूरसे मदर्सेके बाहर हिसाब किताब वग़ैरहभी सी-खना आरम्भ करदिया परमेश्वर ये समय में बड़ी बर्कत दीहै उसको बंदोबस्तके साथ बरतने से अम्बिकादत्त की इस्तादाद अरबी और फ़ारसी की बहुत दुरुस्त होगई और हिसाब रयाजी कीभी कई किताबें निकल गईं अम्बिकादत्त तो इधर मसरूफ़ रहा सरस्वतीने एक और कारखाना इसी बीच में जारी किया इस महल्ले में पण्डित ईश्वरी प्रसाद बड़े नामी गिरामी आदमी थे ईश्वरी प्रसाद तो सरकार महाराजा बलिरामपुरमें दीवान थे परन्तु घरबार लड़के बच्चे सब इसी महल्लेमें रहतेथे मकान बाग़ नौकर चाकर बड़ा कारखाना था पण्डित ईश्वरीप्रसादके छोटे भाई अयोध्याप्रसादमहाराजा

कपूरथला के सरकार में मुद्दत तक मुख़्तार कुल रहे जब उस सरकारमें दीवान रामयशको बड़ा अख़्तियार हुआ मसलहतवक़्त समझकर नौकरी छोड़कर घरचलेआये परन्तु लाखों रुपया घरमेंथा नौकरी की कुछ परवाह न थी हज़ारों रुपये की रियासत शहर में खरीद करली थी सैकड़ों रुपये माहवारी किराया चला आताथा बड़े शान से रहतेथे डयोढ़ीपर सिपाहियों का गारद अंदर बाहर तीस चालीस आदमी नौकर घोड़ा हाथी पालकी बग्घी सवारीको मौजूद अयोध्या प्रसादकी दो बेटियां थीं गुलाब कुंअरि और महताब कुंअरि गुलाबकुंवरि पण्डित चंडीदत्तके बेटे से ब्याही गई थी परन्तु ब्याहके पीछे से नामवाफ़क़त कि ससुरालमें आना जाना बन्द होगया महताबकुंवरि की मंगनी पण्डित रामप्रसाद दीवान महाराजा रीवांसे ठहरी हुई थी इन लड़कियोंकी मौसी गुलबास कुंअरि उस महल्ले में रहतीथी जिसमें सरस्वतीका मैकाथा उस महल्लेमें तो सरस्वती की लियाकत का शुहराथा गुलबास कुंअरि सरस्वतीके हालसे खूब वाक़िफ़थी कई मर्तबह उसको देखाथा गुलबास कुंअरि अपनी छोटी बहिन महताब कुंअरि की मातासे मिलनेको आई संसारका दस्तूर है कि कोई आदमी दुःखसे खाली नहीं और यह बात कुछ परमेश्वर की तरफ से है जो हरतरफ से आनन्द होतो आदमी परमेश्वरको भूलकरकेभी याद न करे और न अपनी तईं परमेश्वरका दास समझे गुलबास कुंअरिकी छोटी बहिन फूल कुंवरि को संसार के सब आनन्द प्राप्तथे परन्तु लड़कियों के तर्फ़से दुखी रहा करती थी उधर गुलाबकुंवरि ब्याह बरात होने के पीछे घर आकर बैठी थी इधर महताब कुंअरि के मिज़ाज की बुनियाद ऐसी बुरी पड़ी थी कि घर में सब से बिगाड़था न माताका लिहाज न बहिन का दबाव न पिता का डर नौकर हैं सो आप चिल्ला रहेहैं चेरियां हैं सो पनाह मांगतीहैं ग़र्ज़ कि महताब कुंअरि सब घरको सिरपर उठाये रहती थी गुलबास कुंअरि के आने से चाहे कि बड़ी मौसी

समझकर महताब कुंअरि घड़ी दो घड़ी को चुप होकर बैठ जाती क्या जिकिर गुलबासकुंअरि को पालकीसे उतरते देर नहींहुईथी कि लगातार दोतीनलौंडियांईआईं बसंतीरोते हुये आई कि देखिये छोटीसाहबजादी ने मेरा नया दुपट्टा फार २ कर डाला लल्ली ने शोर मचाया कि महताब कुंअरि ने मेरे गलेमें चकत्ता भरलिया मेंहदिया बलबलाउठी कि मेरा कान नोच लिया दाई चिल्लाई कि देखिये मेरी लड़की के ऐसे जोर से लकड़ी मारी कि बाजूमें बड़ी पड़गई रसोई से मिश्रायन ने दुहाईदी कि देखिये पतीलियोंमें मुट्ठीभर २कर राख झोंक रहीहै गुलबासकुंअरिनेपुकारा किमहताबोयहांआवोमौसी की बोली पहिचान कर महताबकुंअरि चली तो आई परंतु सलाम न प्रणाम हाथों में राखपावों में कीचड़ उसी प्रकार दौड़ मौसी से चिमट गई मौसीने कहा महातावो तुम बड़ी शोखी करनेलगी महताबकुंअरिने कहा इसीलल्ली चुड़यलने फ़र्याद की होगी यह कह कर मौसी के गोद से निकल लप झपकर लल्लीका सिर नोचखसोट लिया बहुतेरी मौसी, ऐं २ करती रही एक न सुनी तब गुलबासकुंअरि अपनी बहिन से बोली कि फूलकुंअरि इस लड़की को परमेश्वर के लिये तो दुरुस्त करो यह बेपढ़े दुरुस्त नहीं होगी फूलकुंअरिने कहा मैंमहीनों से एकस्त्री कीतलाशमेंहूं जोपढ़ना लिखना सिख-लावे परनहींमिलती गुलबासकुंअरिनेकहाकितुम्हारे महल्ले में पंडित शंकरदत्त की छोटी बहू लाखस्त्रियों में पढ़ी लिखी एक स्त्री है फूलकुंअरि ने कहामुझको आजतक खबरनहीं देखो मैं अभी आदमी भेजती हूं यह कहकर अपने घर की मिश्रायन को बुलाया और पूछा कि कोई पंडित शंकरदत्त इसमहल्ले में रहतेहैं बहिन कहतीहै कि उनकी छोटी बहू बहुत पढ़ीलिखीहैं उनको लिवालाओ अगर नौकरी करेंतो खाना कपड़ा दशरुपये महीना देनेको हमहाजिरहैं औरजब लड़की पढ़लिख जायगी और अदब क़ायदा सीखजायगी तो दर्माहेके अलावा हम उनको खुश करेंगी मिश्रायनने शंकर

दत्त के घरमें आई और अम्बिकादत्तकी माता से पूछने लगी कि शंकरदत्तकी जो लड़की हो गुलबासा मिश्रायनने कहा हां यहीहैं आवोबैठो कहांसेआई मिश्रायनने कहा तुम्हारीछोटी बहू कहांहै अम्बिकादत्तकी माताने कहा कोठे परहै मिश्रायनने पूछा मैं उनकेपास ऊपरजाऊं गुलबासा ने कहा आप अपना पता निशान बताइये बहू यहां आजावेगी मिश्रायनने कहा मैं पंडितअयोध्या प्रसाद के घरसे आईहूं अम्बिकादत्त की माताने सबछोटे बड़ोंकी खैरसल्लाहपूछी और मिश्रायन सेकहा बहूसे क्याकाम है मिश्रायनने कहाबहूआवैं तो कहूं जोकि सरस्वतीके नीचे उतरनेका समयभी आगयाथा थोड़ी देर पीछे सरस्वती नीचे उतरआई सरस्वतीको मिश्रायन ने देखाऔरबात चीतकी तो नौकरीकेवास्ते कहतेहुवे संकोच किया परन्तु बातोंमेंयहकहा कि फूलकुंअरिको अपनी छोटी लड़कीका पढ़ाना मंजूरहै उनको बहीनेदिनगुलबासकुंअरि ने आप का ज़िकर किया तो फूलकुंअरि ने मुझ को भेजा सरस्वतीने कहा दोनों बीबियोंको मेरेतर्फ़से प्रणाम कहना और यहकहना जो कुछ भला बुरा मुझको आता है उसके सिखाने पढ़ाने में किसी प्रकार संकोच नहीं इसवास्ते कि आदमी इसीलिये पढ़ताहै कि दूसरेकोफ़ायदा पहुंचावे और गुलबासकुंअरि को तो मालूम होगाकिमैं अपनेमैकेमें कितनी लड़कियों को पढ़ातीथी और मेरा जी बहुत चाहता है कि फूलकुंअरिकी लड़कीकोपढ़ाऊं परंतुक्याकरूं नतोफूलकुंअरि लड़कीको यहांभेजेंगी और नमेराजाना होसक्ताहै मिश्रायन ने दर्माहेकातो साफ़नामनलिया परन्तुदबी जबानसे कहाकि फूलकुंअरि सब प्रकारकेखर्च पातकी ज़िम्मेदारी भी करनेको मौजूदहैं सरस्वतीनेकहा यह उनकीकृपाहै और उनकीरि- यायतपर यहीबात शोभितहै परन्तुउनके पड़ोसमें हज़ारों गरीब भीपड़ेहैं परमेश्वरमेंगा भूखानहींरखताहै वेदामोंकी चेरीबन कारसेवा करनेको मैंहाजिरहूं और दर्माहादार पढ़ानेवाले दरकार हैं तो बहुतसे बहुत मिलेंगे इसकेपीछे मिश्रायन ने

सरस्वतीका हालपूछा और जब यह सुना कियह तहसील-
दारकीबेटी है और पंडितशंकरदत्तभी पचास रुपये महीनेके
नौकरहैं तो मिश्रायनको बहुतखुशहुई नौकरी का इशारा
नाहक किया परन्तु सरस्वती की बातचीत सुनकर मिश्रायन
लट्टू होगई हरचंदश्रमीरी घरकेकार खाने देखेहुये थी परंतु
सरस्वतीकेसाफ़ और मीठेवचन सुनकर मोहित होगई और
मिन्नतकी कि बीबी मुझको माफ़करना सरस्वतीने कहा
क्यों तुममुझको कांटोंमें घसीटतीहो पहिले तो नौकरी कुछ
गालीनहीं ऐब नहीं दूसरे अनजानमें जो तुमने पूछा क्याडर
हैग़र्ज़ मिश्रायन बिदा हुई और घरमें आकर कहा कि बीबी
शंकरदत्तकी बहू लाख पढ़ी हुई स्त्रियोंमें एक स्त्रीहै जिसकी
सूरत देखने से आदमी बनजाय पास बैठे मनुष्यता प्राप्त हो
छांह पड़जानेसे गुण सीखे और हवा लगजानेसे अदब पकड़े
नौकरी करनेवाली नहीं तहसीलदारकी बेटीहै रईस आगरे
के मुख़्तार की बहू घरमें मिश्रायन और टहलुई नौकर हैं
दालानमें चांदनी बिछीहै सोज़नीगाव तकिया लगीहै अच्छे
विधिसे जीवनकर रहीहैं भलाउनको नौकरीकी क्यापरवाह
है गुलबास कुंअरिबोली सचहै फूलकुंअरि तुमने मिश्रायनको
भेजातोथा परंतु मुझको भरोसा न था किवे नौकरी करेंगी
मिश्रायननेकहा परंतु वे तो ऐसीअच्छी आदमीहैं किसंतही
पढ़ानेसे राज़ीहैं फूलकुंअरिने पूछा कियहां आकर पढ़ायेंगी
मिश्रायनने कहाभलाजो नौकरीकी आसनहीं रखता वहयहां
क्यों आनेलगा फूलकुंअरि ने कहा फिर लड़की वहां जाया
करेगीगुलबासकुंअरिने कहाइसमें क्याडरहै दोक़दमपर तो
घरहै और शंकरदत्त को क्या तुमने ऐसा बेइज़्ज़त समझा है
हमारे भाईके ससुरेके चचेरे भाइयोंसे हैं फूलकुंवरिने कहा
फिर तो हमारे ज़ात पांत की हैं गुलबासकुंवरिने कहा तो
परमेश्वर न करे कुछ ऐसीवैसी नहीं पहिले इनकाकाम खूब
बनाहुआ था जबसे रईसबिगड़ा बिचारे ग़रीब होगये फिर
भीदोएक आदमी सदा घरमें नौकर रहते हैं फूलकुंवरि ने

कहा अच्छा महतावकुंवरि वहीं चली जाया करेगी अगले दिन गुलबास कुंवरि और फूलकुंवरि दोनों बहिन महताव-कुंवरि को लेकर सरस्वतीके घर आई गोकि सरस्वतीके यहां ग़रीबी सामान था परंतु उसके इन्तिज़ाम और बन्दोबस्त के ढंगसे उन दो स्त्रियोंका वह आदरभाव हुआ कि सबप्रकार की वस्तु बैठे२ प्राप्त होगई दो चार प्रकारका इतर, चौबड़ा, इलाइची, चिकनी डली, बातकी बातमें सब आगया अच्छे २ मज़े की गिलौरियां तैयार होगई दोनों बहिनों ने खाई और सरस्वती से कहा कि कृपा करके इस लड़की को मनसे पढ़ा दीजिये सरस्वतीने कहा पहिले तो आप मुझको क्या आता है परंतु दो चार अक्षर बड़ोंकी कृपासे आते हैं उसकेबतानेमें अपनी शक्तिभर उठा न रक्खोंगी चलते हुये फूलकुंवरि एक अशर्फ़ी सरस्वती को देनेलगी सरस्वतीने कहा कि इसकीकुछ ज़रूरत नहीं भला यह क्योंकर हो सक्ता है कि मैं पढ़वाई आपसे लूं फूलकुंवरि ने कहा भगवान २ करो पढ़वाई देने के वास्ते हमारा क्या मुंहहै आज महतावकुंवरि विद्याआ-रम्भ करेगी इसकी मिठाई मंगाकर बच्चोंको बांटदीजिये सर-स्वती ने अशर्फ़ी फेरदीकहा एकअशर्फ़ीकी मिठाई क्याहोगी सेर आधसेर मिठाई बांटनेको बहुतहै यह कहकर गुलबासा मिश्रायन की तर्फ़ इशाराकिया वह कोठरीमें से एक थाली भरकर बताशे निकाल लाई सरस्वती ने गणेश का पूजन करके थोड़े२ बताशा गुलबास कुंअरि और फूलकुंअरि को दिये और फिर भरीहुई थाली गुलबासा को उठादी किबच्चों को बांटदो फूलकुंअरिने कहा अच्छा तुमने मुझको शर्मिन्दा किया सरस्वती ने कहा कि हम बिचारी ग़रीब किस लाय-क़ हैं परन्तु यहां जो कुछहै वहभी आपहीका है अलबत्ता मेरा देना यही है कि महताव कुंअरि को पढ़ादूं भगवान वह दिन करे कि मैं आपसे सुर्खरू हूं ग़र्ज़ लल्लोपत्तो की बातें हो हुआकर गुलबासकुंअरि और फूलकुंअरि चली गई और महताव कुंअरिको सरस्वतीको सौंपगई सरस्वतीनेजिस

ढंगपर महताबकुंअरि को पढ़ाया जो वह विस्तार पूर्वक लिखा जाय तो एक अलग पोथी बनजाय परंतु संक्षेप हाल इस जगह लिखा जाता है कि महातावकुंअरि के बैठते ही महल्ले का महल्ला टूटपड़ा जिसको देखो अपनी लड़की को लियेचलाआताहै परंतु सरस्वतीने भलेआदमीकीलड़कियोंको चुनलिया और कमीनों की लड़कियों को इसबहाने से टाल दिया कि मैं आयदिन अपनी मातकेघरजाती रहतीहूं पढ़ना पढ़ाना जब तक लगातार न हो बेफ़ायदा है फिर भी बीस लड़कियां पढ़नेबैठीथीं परंतुसरस्वतीको किसी लड़की से लेने लिवाने की सौगन्ध थी एक दो रुपिया इनका लड़कियों पर खर्चहोजाता था सवेरेसे दोपहर तक पढ़ना होता था और फिर भोजन के लिये चार घड़ी की छुट्टी इसके पीछे लिखना छः घड़ी दिनरहेसे सीना सीने पिरोने का काम गुंजाथी था इसकारण कि न सिर्फ़ सीना सिखलायाजाताथा बल्कि अनेक प्रकार की जाली काढ़ी जाती थी अनेक भांति की सिलाई होतीथी मसाला बनाना और टांकना जाली काढ़ना पहले तो सरस्वतीको सब सामग्रीके इकट्ठाकरने में दशरुपया खर्च हुआ परन्तु फिर तो उसीकामसे बचतहोने लगी जो काम लड़कियां बनातीं गुलवासा उसको चुपके से बाजार में बेंच-लाती इसप्रकार धीरे२ पाठशालाकी एक रक़म जमाहोगई जो लड़की गरीबकंगालहोती उसीरक़मसे उसके वस्त्रबनाये जाते पुस्तकें मोललेदी जातीं लड़कियोंके पानी पिलाने और पंखाझलनेके लिये एकखवासी नौकरथी और मदर्सेकी रक़म से उसकी तलब मिलती थी लड़कियों का यह हाल था कि और स्त्री पढ़ानेवाली के पास लड़कियों का जाते हुये प्राण निकलताथा परन्तु सरस्वतीकी विद्यार्थिनी उसपर मोहित थीं अभी वह सोके नहीं उठी आपसे आप आने शुरूअ हुईं और पहर रातगये तक जमअ्रहती थीं और घरको वे मन जातीथीं इसकारणकि सरस्वती सबके साथ मनसे प्यारकरती थीं और पढ़ानेका क़ायदह ऐसा अच्छारक्खाथा कि बातोंर में

तालीम होती थी न यहकि सबेरे से टें टें का चर्खा बजा तो दिन छिपे तक बन्द नहीं होता जिसप्रकार सरस्वती को उसके बापने पढ़ाया था उसीप्रकार सरस्वती अपने विद्यार्थिनियों को पढ़ातीथी पस ये लड़कियां शागिर्द की शागिर्द और सहेली की सहेलीथीं जबकिसी लड़कीका व्याह हुआ महर की रक़मसे उसको थोड़ा बहुत गहनादिया जाताथा अगर सरस्वती अपने पाठशालाको बढ़ाना चाहती तो सारे शहर की लड़कियों के पाठशाला का उजाड़ होजाते सैकड़ों स्त्रियां अपने लड़कियोंके हेतु चिरौरी और बिनतीकरतीथीं और आप लड़कियां दौड़ २ आतीथीं इसकारण कि और पाठशालोंमेंदिन भरकी क़ैद पढ़ानेवालियोंकी हमेशा पढ़ना कमजारखाना और कामकरना बहुत दिन भरपढ़ै तो सिर्फ़ दो अक्षर सवेरे से संध्यातक मामूली मार और जहां चुपकी और पढ़ानेवाली की नजर पड़ गई आफ़तआई और कामको पूछो तो तड़के आने के साथ घरमें झाड़दी बिछौना तहकिये और चार २ पांचने मिलकर कम्बख़्त भारी बोझल चारपाइयां उठाईं और फिर उस जगह बिछौना बिछाकर पढ़ने बैठीं जिससमय मुंह से आवाज निकली पढ़ानेवाली औरतने बनैठी फेंकनीआरम्भ करदी और दो चार जो कितु अच्छी का मुंह देखकर उठीथीं कामधंधे में लगगईं किसी ने पढ़ानेवाली औरत का लड़का गोद में लिया बोझके मारे कूला टूटाजाता है परंतु मार के डरसे गर्दन पर बलासवार है और समय टालती फिरती हैं बैठीहुई लड़कियोंकी आवाज कानमें चलीआतीहै दिलहैकि अन्दरही अन्दरसहमाजाताहै मारकी आवाजसे यह मुसीबत भली मालूमहोतीहै किसी ने रातके जूठे बर्तन मांजने शुरूअ किये कि घट्टे पड़ पड़गयेहैं और गन्दे रह रहजाते हैं परंतु छोटी बहिन पिटरही है और चिल्लारही है कि अच्छी बी मैं मरगई अच्छीबी परमेश्वरके लिये छोड़ दो हाय री २ जय अम्मा जय बाबा अच्छीमैं तुमपर वारीगई और दीदी हैंकि झांय झांय जल्दी २ बर्तन मांजरहीहैं इनकामों से फ़ुरसत हुई तो

मसाला पीसने आटा गूंधने आग सुलगाने का समय आया
फिर दो पहर को पंडितायन हैं कि सो रहीं हैं और मालूम
नहो पंखा झल रहीं हैं और दिल में दुआ मांग रहीं हैं कि पर-
मेश्वर ऐसी सोवें कि फिर न उठें ग़र्ज़ और मदरसों में यह सुती-
बत रहती है सरस्वती के यहां न मार न धाड़ न बड़ा डर यह था
कि सुनो तुम अपना सबक़ याद नहीं करती तो तुम्हारे सबब
से हमारी पाठशाले का नाम बद होता है मैं तुम्हारी माता को
बुलाकर कह दूंगी की तुम्हारी लड़की यहां नहीं पढ़ती तुम
किसी दूसरी पाठशाले में पढ़वाओ इतना कहना था कि ल-
ड़की का दम निकला फिर सबक़ है कि ज़बान पर याद है या
जिसने सबक़ याद नहीं किया उस से कहा कि आज तुमने
सबक़ याद नहीं किया और लड़कियां दोपहर के बाद सियेंगी
और तुम पढ़ना यह कहना था कि उसने जल्दी २ सबक़ याद कर
लिया न यहां पाठशाला में झाडू देनी है न बिछौने उठाने हैं
न चारपाइयां ढोनी हैं न बर्तन मांजने न किसी की सेवा करनी
है बल्कि इन लड़कियों पर एक टहलुई नौकर है इस पाठशाले
में पढ़ना लिखना सीना तीन काम लड़कियों को सिखलाये
जाते हैं इन्द्रकुंअरि एक स्त्री इस महल्ले में रहती थी चांदकुंअरि
उसकी बेटी कोई दस वर्ष की होगी उस चांदकुंअरि को पढ़ने
और लिखने और सीने पिरोने का बड़ा शौक़ था इन्द्रकुंअरि यह
चाहती कि चांदकुंअरि सारे घर में झाडू दे लीपे पोते बर्तन मांजे
ऐसे कामों में चांदकुंअरि का जी न लगता माता के कहने सुनने
से कर तो देती मगर बे मन से इन्द्रकुंअरि जो एक दिन चांद
कुंअरि से नाराज़ हुई तो साथ ले जाकर सरस्वती की पाठशाला
में बैठा आई और कहा बीबी यह लड़की बड़ी निकम्मी है जिस
काम को कहती हूं टका सा जवाब दे देती है इसको ऐसा
अदब सिखावो कि घर के कामकाज पर इसका जी लगे सरस्वती ने
जो देखा तो चांदकुंअरि को अपने ढब का पाया उधर चांद-
कुंअरि को पढ़ाने वाली अपनी मर्ज़ी के अनुसार मिली नूर के
तड़के आती तो दो पहर को भोजन करने जाती भोजन खाया

और भागी पानी पाठशालामें आकर पीती और तीसरेपहर को आई२ कहीं चारघड़ी रातगये जाती कभी२ इन्द्रकुंअर इसको सुधलेने पाठशालेमें आती तो कईबार उसकोलड़कियों के साथगुड़ियां खेलते देखा दो चार बार छिंडकुलिया पकाते एकदिन चार घड़ी रातगई होगी चांदकुंअरि कोजानेमें देर ऊई इन्द्रकुंअरि उसको लेनेआई तो क्या देखतीहै कि यमुना कहानियां कहरहीहै और पाठशालेकी सब लड़कियां आस पासबैठी और सरस्वती भी लड़कियों में बैठी ऊई कहानियां सुन रहीहै तबतो इन्द्रकुंअरि का जी जलकर खाकहोगया और बोली वाह बीबी अच्छा तुमने लड़कियों को नाश कर रक्खाहै जब कभी मैं चांदकुंअरिको देखने आई कभी इसको मैंने पढ़ते न पाया पाठशाला क्याहै यह तो अच्छा खेलघरहै तभी तो लड़कियाँ दौड़२ आतीहैं सरस्वतीने कहा किबीबी जो तुम्हारी मर्जीके अनुसार तुम्हारी लड़कीकी तालीमनहीं होती तो तुमको अख्तियारहै अपनी लड़कीको उठालेजाओ परंतु पाठशालेमें बे अर्थका दोष मतलगाओ भला मैं तुमसे पूंछती हों कि चांदकुंअरिने बाईजी की पाठशाला में कितने दिन पढ़ा इन्द्रकुंअरिने कहा तीनमहीने सरस्वतीने पूंछाबा-ईजीके यहां चांदकुंअरिने क्यापढ़ा इन्द्रकुंअरिने कहाअक्षर अभ्यास सरस्वतीने कहा तीन महीने में अक्षर अभ्यास पढ़ा और यहां चारमहीनेसे तुम्हारी लड़की पढ़तीहै चौथाईभाग विष्णु सहस्र नाम और दो पुस्तक नागरी यहां पढ़ चुकी है बाईजी की पाठशाले से कितना अधिक होता है और जब चांदकुंअरि यहांआईथी तो कालीलकीर तक इसकोखींचनी नहीं आती थी अब नाम और थोड़ी बऊत चिट्ठी लिख लेती है कि साथ बसूजिब अक्षरभी बुरेनहीं होते बीस तक पूरी गिनतीनहीं आनतीथी अब पन्द्रहका पहाड़ा यादकरती है सीना कुछनहीं आता था अब इसके हाथ का बखिया देखो लाइयो चांदकुंअरि वह कुरती जिसमें तूने बखियाकिया है वेग अपनी माताको दिखला चांदकुंअरिने जिसमें बखिया

कियाथा और टोपियां जिसमें चमेलीका जालकिया था और कामदानी आदि जो काढ़ीथीं दौड़ी२ उठालाई और अपनी माताको दिखाया इन्द्रकुंअरि एक२बातके दम२ उत्तर पाकर हक्का बक्कासी रहगई सरस्वतीने कहा तो बी कुछ न्यावभीहै चार महीनेमें तुम्हारी लड़की और क्या सीखलेगी इन्द्रकुंअरि ऐसी खिसियानी हुई कि घड़ों पानी पड़गया अब सरस्वती के सामने आंख नहीं मिलासक्ती थी इन्द्रकुंअरि के आजाने से यमुना की कहानी तो रहगई और सबलड़कियां इसके ओर घूर२कर देखनेलगीं इन्द्रकुंअरि ने कहा बीबी मुझको इसकी क्या खबर थी चांदकुंअरि दिनभर तो यहां रहती है रातको ऐसी देरकर आतीहै कि भोजन खाया और सोरही मुझको इससे पूछना गाछना कभी पड़ानहीं दो चार फेरजो मैं इधर को आनिकली तो कभी गुड़िया खेलते पाया कभी छिडकुलिया पकाते कभी कहानियांसुनते इससे मुझकोख्यालहुआ कि यह अपना समय खेल कूदमें खोती है अबतो मेरे मुंह से एक बात निकलगई क्षमाकीजिये सरस्वतीनेकहा तुम्हारा संदेह भी अनुचित नहीं था परन्तु मैं इन्हीं खेलकी बातोंमें इन को कामकी बातें सिखाती हूं छिडकुलियोंमें लड़कियां अनेक प्रकारके भोजन बनानेकी युक्ति सीखतीहैं मसाले का अन्दाज नमक की अटकल स्वाद की पहिचान इनकोआती है क्यों चांदकुंअरि परसों तुम लड़कियोंने मिलाकर कितना जर्दा पकाया था उसकी युक्ति और सबहिसाब किताब हो तो हमको सुना दो चांदकुंअरिने कहा हिसाब तो यमुनाने अपनी पुस्तकमें लिखरक्खाहै परन्तु युक्तितो आपकीआज्ञानुसार मैंने खूब ध्यान लगाकर देखली है और अच्छेप्रकार मेरे समझ में आगई है सेर भर चावल थे पहिले उनकोएक तसले पानीमें भिगादिया धेलेकी हरसिंगारकी डंडियांमंगवाईं तीन पैसेभर मिलीथीं उनको कोईडेढ़सेर पानीमें जोश किया जब उबाल आगया और रंगत कट गई तो छानकर अरक में चावल भिगोकर [illegible] चावल जब अधकचड़े

होगये और एक कनी रहगई तो चावलोंको कपड़े पर फैला दिया कि पानीभर निकल जाय फिर आध पावघी डेगचीमें लौंगों का बघार देकर कड़कड़ाया और चावलछोड़ दिये ऊपरसे चावलोंके बराबर शक्करडालदी और अट कलसे इतना पानी डालदिया कि चावलों की एक कनी जो रहगई थी गलजाय फिर एक छटांक किशमिश घीमें कड़काड़ा जबफूलगई चावलों में छोड़ दीं और ऊपर तवे अंगारे रखकर दम दे दिया सरस्वतीने चांदकुंअरिसे कहा युक्तितो दुरुस्तहै परन्तु चावलों को जो मैंने देखाथा तो बैठगयेथे मालूमहोताहै कि तुमने कपड़े पर फैलाकर ठंढे पानीसे उनको धोया नहींथा फिर सरस्वती इन्द्रकुंअरिकी ओर देखकर बोलीकि क्योंजी जर्दीतोतुम्हारी लड़कीनेठीकपकाया यहसबहिडकुलियाका कारणहै फिर यमुनासे कहा तुम अपने जर्देका हिसाब तो सुनाओ यमुनाजो हिसाबकी बहीउठालाई कहाभाभीजान छःसेरी चावल सेरभर पौनेतीनआनेके और एकपैसेकी हर सिंघारकीडंडियाँ और लौंगेंदोसेरकाघीहै पौनपाव मंगाया आधपाव बघारनेवक्त डाला और छटांक भरकिशमिश कड़-कड़ाकर दमदेतेवक्त डेढ़आनेका घीऔरआऔर चौसेरी शक्कर सेरभर चारआनेकी एक पैसेकी किशमिश कुलपौनेग्यारह आनेपैसे खर्चहुये दस्तरखानीयोंकासाझाया पौने दोआने तो जेरेथे और एक२आना और लड़कियों का सरस्वती ने कहा तुमने हिसाबमें धोखाखायायमुना सोचीतो कहा भाभीजी चावलोंमेंकौड़ियां बचीं बनिये ने हलमकीं अय हय डंडियां और लौंगेंउसमेंआजातीं तो एकपैसाबचता गुलबाधामिस्रा-यन जा तू बनिये से कौड़ियां लेआ सरस्वती ने कहा अय हय क्या करती हो कौड़ियों का कुआ मिला परसों की बात अब कुछ न कह तुम्हारे भूलकी सजा है अब अरस्वती महताबकुंअरि से बोली जर्दे की युक्ति और लागत तो मालूम हुई भला सेरभर जर्दा तुम सबने क्या किया महताब कुंअरि ने जवाब दिया हमलोगोंने ... परमेश्वर के नाम दे

दिये फिर छः तश्तरियां भरी गईं दस लड़कियों में से दो२ ने एक२ तश्तरी ली और छठी तश्तरी में मैं अकेली थी सरस्वती ने पूछा क्या तुमने दोहरा भागलिया महताबकुंअरि बोली नहीं मेरी तश्तरी आधी थी सबसे पूछलीजिये सरस्वतीने कहा फिर तुम बिरादरी से अलग क्योंरही महताबकुंअरि तो चुप ऊई चांदकुंअरि ने कहा इनको सबके साथ खाते घिन आती है महताबकुंअरिने कहा घिनकी बातनहीं हैमैं सबसे पीछे आई इससे अकेली रहगई आप यमुना से पूछ लीजिये चांद कुंअरि ने कहा तुम तो अभी थोड़ी देरऊई मेरा जूठा पानी पीने पर लड़चुकी हो महताबकुंअरि ने कहा मैं लड़ीथी या इतनी बात कही थी कि जितनी प्यास ऊआकरै उतना पानी लिया करो गिलास में जूठा पानी छोड़ देना ऐब की बात है फिर सरस्वती ने यमुना से पूछा कि वह पुस्तक जिसमें भो जन बनाने की युक्ति लिखीऊई हैं और जो तुमको मैंने दी है उसमें की सब भोजन बनाने की युक्तिं तुम देखचुकी या अभी नहीं यमुना ने थोड़ी देर सोच कर कहा मैं अपनी समझ में वह सब भोजन बनवा चुकी हों बल्कि कई२ बेर नौबत पक- वाने की आचुकी है और जितनी बड़ी२ लड़कियां हैं मामूली खानों की युक्ति सबको मालूम है इसके सिवाय पुलाव जर्दा मुतञ्जन समोसे मीठे सलोने कसली बड़े दहीबड़े सुहाल सेव घीकी तलीदाल मोठ चौकड़ियां पापड़ बूंदानी तसमई हलवा सोहन पपड़ी नर्म अन्दसें की गोलियां वग़ैरह सब चीज़ें बऊत बेर पक चुकी हैं और सब लड़कियों ने पकते देखी हैं बल्कि अपने हाथों पकाई हैं और महताबकुंअरिको तो चटनी और मुरब्बा से तो बड़ा शौक़ है ये चीजें जैसी वह बनाती है वैसा और लड़कियां कम जानती हैं इसके पीछे सरस्वती ने इंदरकुंअरि से कहा कि बीबी अब तुमको यहां के छिंडकुलियों का फायदा तो मालूम होगया होगा रात ज्यादह गई बाज़ लड़कियों के घर दूर हैं अगर कल आओतो गुड़ियों को घर भी तुमको दिखायें और शाम तक

रहे तो कहानियां भी सुनवायें सब लोग बिदा हुये अगले दिन जो इन्द्रकुंअरि आई तो लड़कियों के कसीदे और लड़कियों के बिनेहुये गोटे लड़कियोंके मोड़ेहुये गुखुरू लड़कियों की बनाई हुई टोपियां और यमुना लड़कियों के ब्योंत कियेहुये और सिये हुये मर्दाने जनाने कपड़े सरस्वतीने सब दिखाये जिसके देखने से इन्द्रकुंअरि को बड़ा अचंभा हुआ इसके पीछे लड़कियों के गुड़ियों के घर दिखाये इन घरों में गृहस्थी का सब समान फर्श फरूश गाउतकिया उगालदान चिलमची आफताबा पिटारी पर्दा चिलमन छत गीरी पंखा मसेहरी पलंग हरप्रकार के बर्तन हरप्रकारका सामान आरास्ता अपने ठिकाने से रक्खाहुआ था गुड़ियां ऐसीसजी हुईथीं कि आन बान जैसे ब्याह के घरमें पाहुन जमा है जब गुड़ियों के घरोंको देखचुकी तो सरस्वतीने इन्द्रकुंअरि से कहा कि लड़कियों के सब खेलों में मुझको गुड़ियों का खेल बहुतप्रिय है इसके वसीले से लड़कियां सीना पिरोना कपड़ों की ब्योंत और गृहस्थी का बन्दोबस्त हर त्योहारों के दस्तूर छठी खीर चटाई दूध चढ़ाई ब्याह बरात वग़ैरह की रीति रस्मों से वकफियत हासिल करती हैं तुम्हारी लड़की अभी थोड़े दिनोंसे आई है जो लड़कियां मेरी पाठशाला में बहुतदिनोंसे पढ़ी हैं जैसे मेरीनन्द यमुनाऔरमहताबकुंअरि हैमैंसौगन्धखाकरकहती हूंजो इनकोइसीसमयकिसी बड़े भरेपुरेघरका बन्दोबस्तसौंप दियाजाय तो परमेश्वर रक्खे ऐसाकरेंगी जैसे कोईबड़ीसयानी पढ़ीलिखी स्त्री करतीहै मैं तो पढ़नेपर ताकीद नहीं करती बल्कि इनको संसारके कामबतातीहूं जो थोड़े दिनपीछे इनके शिरपर पड़ेगा यह कहकर सरस्वतीने महताबकुंअरि को बुलाया और कहा कि बुआ तुम्हारी गुड़ियोंका घर तो अच्छेप्रकार आरास्ता है परएककसरहैकि तुम्हारी गुड़ियों केपास रंगीनजोड़ेनहींमालूम होते शायदतुमको रंगनानहीं आता महताबकुंअरिने कहा रंग तो यमुनाने मुझको बहुत सखादिये हैं योंही नहींरंगे सरस्वती ने कहा भला बतओ-

सहीतो महताब कुंअरि बोली बसंत के रंग सुर्ख नारंजी, गुलनार, गुले, शफ़तालू; सर्दई, धानी जर्दा और जाड़ेकेगेंदई जोगिया, उन्नाबी, काही, तेलिया, काकरेजी, सियाह, नीला गुलाबी, जाफ़रानी, कोकई, करंजी, और गर्मी के पियाजी, आबी, चम्पई, कपासी बदामी, काफूरी, दूधिया, खशखाशी, फालसई सिंदूरिया, रंगतो और बहुत हैं मगर मैंने वही बयान किये जो अकसर पहने जाते हैं सरस्वतीने पूछा रंगोंके नामतो तुमने बहुत से गिनवा दिये भला यह तो बताओ यह सब रंग तुम को रंगने आते हैं महताब कुंअरिने कहा मैंने उन्हीं रंगों का नाम लिये जो मुझको रंगने आते हैं सरस्वतीने कहा भला बताओ सर्दई क्योंकर रंगते हैं महताबकुंअरिने कहा काहीकंद अच्छे गहरे रंग की आधसेर मंगवाइये और पानी खूब जोश करके फिटकिरी डाल दे ऊपरसे कंद का टुकड़ा डालकर हिला दिया फिटकिरी की तासीरसे कंदका रंग कट जायगा पस उनमें कपड़ा रंग लिया सरस्वतीने कहा भला और जो कंद न मिले मह ताबकुंअरि ने कहा तो टेसूके फूलों को जोश करके फिटकिरी पीस कर मिला दी सर्दई हो जायगी परंतु हलका कपासी अच्छा सर्दई बे कंद के रंगा नहीं जाता अगर कंद की जगह बानातका रंग काटा जाय तो बहुत अच्छा रंग आता है परंतु इन दिनों मजीठन ऐसा चला है कि सब रंगोंको मात किया है कपड़े तो कपड़े सिठाई खाने का गोटा मजीठन में बहुत अच्छा रंगा जाता है बड़ी बहिन ने मजीठन के रंगका जर्दा बनाया था जाफ़रान से अच्छा रंग था सरस्वती ने घबड़ाकर पूछा मह-ताबकुंअरि कहीं तुमने तो मजीठन के रंगे हुये चावल नहीं खाये महताबकुंअरि ने कहा मैंने खाये तो नहीं परंतु खाने में क्या बुरी बात है सरस्वती ने कहा अय हय मजीठन में संखिया पड़ती है खबरदार कोई चीज मजीठन की रंगी हुई जबान पर मत रखना महताबकुंअरिने कहा मैंने तो मजीठनका रंगा हुआ गोटा बहुत खाया है सरस्वती ने कहा क्या हुआ थोड़े मजीठनमें तो बहुत ... है इसकारणसे

तुमको कुछ नुकसान नहीं किया परंतु याद रक्खो कि इसमें
ज़हर है महताबकुंअरिने कहा सजीटनकी रंगीज्ञई मिठाई
लोग महीनों खाते हैं सरस्वतीने उत्तर दिया बहुत बुरा करते
हैं ज़हर जब मियाद पर पहुंच जायगा ज़रूर असर करेगा
मालूम हुई तो लड़कियां अपने कसीदे और पुस्तकें रखरखा मा-
मूल बमूजिब खेलने और खाने और पहेलियां कहने सुनने को
आबैठीं सरस्वतीने इंदरकुंअरिसे कहा कि हां चुड़ चिड़ियां
की कहानियां नहीं होती हैं कहानियों की एक बहुत अच्छी
पुस्तक है जिसमें बड़ी अच्छी कहानियां हैं हर एक कहानी
से एक नसीहत की बात निकाली है इस पुस्तक की ज़बान
भी बहुत मीठी है अब यह लड़कियां उसी पुस्तक की कहा-
नियोंसे जो बहुत येगी कहानियां कहने से इनकी बात चीत
साफ़ होती है मतलबकी बातकी खूबसूरतीसे बयान करनेकी
ताक़त बढ़ती जाती है जब कभी मुझको सावकाश होता है
तो मैं कहानियों के बीचमें इनसे उलझती जाती हूं और जैसी
इनकी समझ हैं मेरी बातका जवाब देती हैं अगर नादुरस्त
होता है मैं बतादेती हूं पहेलियों के बूझनेसे इनकी बुद्धि बढ़
तीहै और इनके ज़िहन को तेज़ी होती है तुम इनमें बैठकर
सैर देखो मुझको आज अलपकुंअरि की माता ने बुलाभेजा
है उनके बच्चे का जी अच्छा नहीं है बहुत २ बिरौरी बिनती
कहला भेजी है न जाऊंगी तो बुरा मानेगी और आप मेरा जी
भी नहीं मानता इन्दरकुंअरि बोली हां मैंने भी सुना है कि
उनके लड़के ने कई दिनसे दूध नहीं पिया अय हय परमेश्वर
करे जीता रहे दशवर्ष पीछे भगवान ने वह बच्चा दिया है इस
के पीछे इन्दरकुंअरि ने कहा बीबी तुमको उन्होंने इलाज के
हेतु बुलाया होगा सरस्वतीने कहा इलाज वलाज तो मुझको
कुछ भी नहीं आता एकबार पहिले इस लड़के को प्यास हो
गई थी मैंने ज़हरमुहरा, बंसलोचन, गुलाबकाजीरा, छोटी
इलायची, खीरेकीगरी, कबाबचीनी, खुरमा, इसप्रकार चार
पांच दवाइयां बतलाईथीं परमेश्वर की कृपा से लड़का अच्छा हो

गया इन्दरकुंअरिने कहा तुमबीबी सब गुणोंमेंपूरी हौ सरस्वती बोली इसमें गुणकीक्या बातहै हमारे मैकेमें दवादर्मन होती रहतीहै जबमैंछोटीथीजो दवाआतीसहीउसको छानती बनाती और ध्यानरखती इस प्रकार पर सुनी सुनाई दो चार दवायादहैं जिसको जरूरतहुई बतादी और बच्चोंका इलाज तो स्त्रियां कर करालेती हैं जब ऐसी मुशकिल आ पड़ती है तब बैद डाक्तर के पास ले जाती हैं इन्दरकुंअरि ने कहा बीबी तुमने कृपा करिके मुझको अपनी पाठशाला का बन्दोबस्त तो दिखाया परन्तु परमेश्वर के लिये तनिक चण भर ठहर जाओ तो मैं देखूं कि लड़कियां किस प्रकार कहानियां कहती हैं और कहानी में तुम किस प्रकार सिखाती हो सरस्वती ने कहा मुझको देर होती है पर ख़ैर तुम्हारी ख़ातिर है अच्छा लड़कियो आज किसकी बारी है यमुना ने कहा बारी तो इन्दर रानी की है परन्तु चांदकुंअरि से कह लाइये सरस्वती ने कहा अच्छा चांदकुंअरिकोई छोटी सी कहानी कहो चांदकुंअरि ने कहानी आरम्भ की एक बादशाह था सरस्वती ने पूछा बादशाह किसीको कहते हैं चांदकुंअरि बोली जैसे लखनऊ में वाजिदअली शाहथे सरस्वती, यह तुमने ऐसी बात कही जो लखनऊ और वाजिद अली शाह को जानता हो वही समझे चांदकुंअरि ने कहा बादशाह हाकिम को कहते हैं सरस्वती, तो कोतवाल और थानेदार भी बादशाह है, चांदकुंअरि, नहीं कोतवाल थानेदार तो बादशाह नहींहैं ये तो बादशाह के नौकरहैं सरस्वती, क्या कोतवाल हाकिमनहींहै चांदकुंअरि हाकिमतो है परंतु बादशाह सब से बड़ा हाकिम होता है और सब पर हुक्म चलाता है सरस्वती हमारा बादशाह कौन है चांदकुंअरि जब से अंगरेजों ने वाजिद अली शाह से तख़्त छीनलिया और वाजिदअली शाह कलकत्ते चले गये तब से तो कोई बादशाह नहीं यह सुन कर सब लड़कियां हंस पड़ीं सरस्वती ने कहा बादशाह अंगरेज मुझको ना समझ हो

तुमने आप कहा जो सब से बड़ा हाकिम हो और सब पर हुक्म चलावे वही बादशाह होता है और यह भी जानती हो कि वाजिदअली शाह से अंगरेजों ने तख़्त छीन लिया तो अंगरेज बादशाह हुये या न हुये चांदकुंअरि, हां हुये तो सही सरस्वती, अच्छा अब बताओ हमारा कौन बादशाह है चांदकुंअरि, अंगरेज, सरस्वती, क्या अंगरेज किसी एक पुरुष का नाम है चांदकुंअरि, नहीं सैकड़ों हज़ारों अंगरेज हैं सरस्वती, क्या सब अंगरेज बादशाह हैं चांदकुंअरि, और क्या यह सुनकर फिर लड़कियां हंसी सरस्वती ने महताबकुंअरि की ओर देखकर कहा कि तुम जवाब दो महताबकुंअरि ने कहा हमारा बादशाह मलका विक्टोरिया है सरस्वती ने कहा पुरुष हैं या स्त्री महताब कुंअरि, स्त्री हैं सरस्वती, कहां रहती हैं महताबकुंअरि, लंदन में सरस्वती, लंदन कहां है महताबकुंअरि, अंगरेजों की वलायत में एक बहुत बड़ा शहर है सरस्वती, कितनी दूर होगा महताबकुंअरि, मैंने एक पुस्तक में पांचहज़ार कोस लिखा देखा है सरस्वती, कोस कितना लम्बा होता है महताब कुंअरि, कम्बारीबाज़ार से गुसाईंगंज को सातकोस कहते हैं यह सुनकर यमुना हंसी और कहा १७६० सत्तरहसौ साठ गज़ का मील और दो मील का कोस होता है सरस्वतीने यमुना से पूछा कि पारसाल जो मैं नीमषारण्य के मेले में गई थी तुमभी मेरे साथ गईं थीं तुमनेभी देखा था थोड़े २ दूर सड़कपर पत्थर गड़े थे और पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ था वह पत्थर कैसे थे यमुना, मैंने अटकल से यही समझा था कि कोसों के पत्थर हैं परंतु गाड़ी ऐसी तेज जाती थी कि पत्थरों पर निगाह नहीं जमती थी मैं खूब नहीं पढ़ सकी कि उनपर क्या लिखा था सरस्वती, वह कोसों के पत्थर नहीं थे मीलों के पत्थर थे आधे कोस का मील होता है और हर मीलपर पत्थर गड़ा है उसमें यही लिखा होता है कि यहां से लखनऊ इतने मील है और नीमसार इतने मील है सरस्वती ने फिर महताबकुंअरि की ओर

देखा और पूछा कि हां चन्दन किस दिशा में है महताबकुंअरि, उत्तर में है सरस्वती, वह मुल्क गर्म है या ठंढा महताबकुं-अरि, यह तो मैं नहीं जानती यमुना, बड़ा ठंढा है जितना उत्तर को जाओ गर्मी कम है और जितना दक्षिण को चलो गर्मी अधिक होती जाती है इन्द्रकुंअरि, अच्छी बीबी बाद शाह है सरस्वती, इसमें आश्चर्य की क्या बात है इन्द्रकुंअरि, आश्चर्य की बात क्यों नहीं है स्त्री जात क्या करती होगी सर-स्वती, जैसे पुरुष राज्य करते हैं वैसेही स्त्री करती हैं मुल्क का बन्दोबस्त रैयत का पालना इन्द्रकुंअरि, स्त्री तो क्या करती होगी करते सब कुछ अंगरेज होंगे बरायनाम स्त्री को बादशाह बना रक्खा होगा सरस्वती, यह सब अंगरेज मलि-का के नौकर हैं हर एक का काम अलग है हर एक का अधिकार जुदा है अपने२ काम पर सब मुस्तैद रहते हैं और आखिर जब पुरुष बादशाह होते हैं तबभी मंत्री नौकर चाकर सब काम किया करते हैं इन्द्रकुंअरि, मेरा जी तो अंगीकार नहीं करता कि स्त्री जात राज्य करसके सरस्वती, भूपाल की बेगम का नाम तुमने सुना है इन्द्रकुंअरि, सुना क्यों नहीं खुद मेरे ससुर भूपाल ताल में नौकर हैं सरस्वती, इस प्रकार समझलो भूपाल थोड़ासा मुल्क है और मलिका विक्टोरिया के पास बड़ा राज्य है जिस प्रकार भूपाल की बेगम अपने छोटे राज्य का बन्दोबस्त करती है मलिका वि-क्टोरिया अपने बड़े राज्य का बन्दोबस्त करती है भूपाल छोटी सरकार है नौकर चाकर कम हैं थोड़ी तलब पाते हैं मलिका विक्टोरिया की बड़ी सरकार है बड़े कारखाने हैं लाखों नौकर तनखाहें भी अधिक हैं इन्द्रकुंअरि, अच्छी बी मलिका का कोई मियां है सरस्वती, हां मगर मौत पर किसी का कुछ बस नहीं चलता चांद को भी परमेश्वर ने दाग़लगा दिया है कई वर्ष हुये मलिका रांड़ होगई इन्द्रकुंअरि मलिका के सन्तान है सरस्वती हां परमेश्वर रक्खे बेटे पोते,

में क्यों नहीं आती सरस्वती, वहां भी बड़ा राज्य है वहां के कामों से छुट्टी नहीं मिलती इन्द्रकुंअरि, अच्छी मलिकाको हजारोंकोस दूर बैठे यहां की क्या खबर होती होगी सरस्वती, क्यों नहीं तनिक२ सी खबर होती है डाक और तार बिजली पर रात दिन खबरआती जाती है हजारों अखबार वलायत जाते हैं इन्द्रकुंअरि, मलिका को किस प्रकार देखें सरस्वती, क्योंकर बताऊं परंतु उनकी तसवीर अलबत्ता देख सक्ती हो इन्द्रकुंअरि, खैर तसवीरही देख लेती सरस्वती बोली बीबी तुम भी अजब तमाशे की औरत हो क्या तुमने रुपया नहीं देखा इन्द्रकुंअरि, क्यों नहीं देखा सरस्वती जी का चेहरा जो बना है वह मलिका की तसवीर है चिट्ठियों की टिकट पर मलिका की तसवीर है बल्कि मेरे पास मलिका की एक बड़ी अच्छी तसवीर और है यमुना मेरा संदूकचा तो उठा ला दो यमुना दौड़ी गई और उठा लाई संदूकचे में से सरस्वती ने मलिका की तसवीर निकाल कर दिखलाई और सब लड़कियोंने अति प्रेमसे मलिका की तसवीर को देखा इन्द्रकुंअरि, क्या अच्छी तसवीर है अयन मयन मलिका खड़ी है सरस्वती बोली यह तसवीर हू बहू मलिकाकी है रुपयेके चेहरेसे मिलाकर देखो कितना फ़र्क़ है यह तसवीर हाथकी बनाईहुई नहीं है एक आयनाहोता है उसको कुछ मसाला लगाकर सामने रखदेते हैं खुद बखुद जैसीकी तैसी सूरत उतर आती है इन्द्रकुंअरि, महताबकुंअरि ने लंदनको पांचहजार कोस दूरबताया तो कहीं बर्षों में यहांसे वहां आते जाते होंगे सरस्वती, नहीं समुद्र२ एक महीने में अच्छे प्रकार से पहुंच जाते हैं इन्द्रकुंअरि, अय हय समुद्रहोकर जाना पड़ता है अंगरेजोंके भी कैसे मन हैं इनको समुद्र से डरनहीं लगता मेरेतो समुद्र के नामसुननेसे रोंगटे खड़े होते हैं सरस्वती, समुद्र से डरने की क्या बात है आनन्द से जहाज पर बैठ लिया अच्छा खासा चलता हुआ घर मिलगया इन्द्रकुंअरि, अय हय इतने का कितना बड़ा

इसके जो पार साल की बातहै कि गुलजारीमल महाजनकुनबे समेत द्वारका को गया था और मेरी मौसिया सास भी उन यात्रियोंके साथगईथी जहाज पर चढ़नाथा कि एक दो दिन पीछे जहाज डूबगया घर लौटना नसीब न हुआ सरस्वती, हां संयोगकी बातहै जहाज कभी कभी डूबभी जातेहैं परंतु परमेश्वर न करे आय दिन डूबाकरते तो दरिया के यात्राका कोई नाम भी न लेता अब तो दरिया का रास्ता खुशकी के सड़कों से ज्यादा आबाद हो रहा है हज़ारों लाखों जहाज निश दिन आते जाते रहतेहैं अंगरेज और उनके बीबीबच्चे और कुल अंगरेजी असबाब सब जहाज़के ऊपर यहां आता है बून्दकुंआरि, अंगरेजोंकी स्त्रियोंका क्या ज़िकिर वह तो कुछ औरही प्रकारकी स्त्रियांहैं उनकी क्या रीस वह तो बाहर फिरतीहैं सुनतीहौं नन्हे२ बच्चोंको वलायत भेजदेतीहैं और उनका मन नहीं कुढ़ता नहीं मालूम किसतरह की मायेंहैं और किसप्रकार उनके मनको संतोष आताहै फिर बाहरकी फिरनेवालियां और पत्थरके दिल इनको एक समुद्र क्या पवनपर उड़नाभी कुछ कठिननहीं सरस्वती, बाहरकी फिरनेकी तुमने जो कही तो उनके देशमें परदेका चालनहीं बलवेके दिनोंमें हम लोग एक गांवमें भागकर गये थे वहां भी पर्देकी चाल चलन न था सबकी बहू बेटियां बाहर निकलतीथीं मैं तो चारमहीने वहांरही बाहरके फिरनेवालियों में वह लाज और शरम देखी कि परमेश्वर सब पर्देवालियों को देवे और बच्चोंको वलायत भेजदेनेसे तुमने क्योंकरसमझा कि उनको प्रीति नहीं कि सन्तान को पढ़ने से रोकें गुण न प्राप्तकरने दें नामकोतो प्रीति और हकीकतमें सन्तानकेहक़ में कांटे बोतीहैं और बच्चोंको मूर्खअज्ञान रखतीं और प्रीति का नाम बदनाम करती हैं यहां पहुंचकर सब चुपहुईं तो चांदकुंअरिने अपनी कहानी आरंभकी और उस बादशाह के कोई बेटा न था बादशाह ने यह समझकर कि मेरे पीछे यही लड़की वारिसराज्यकी होगी उस लड़कीको खूबपढ़ाया

लिखवाया और राजनीति की विधि अच्छे प्रकार सिखाई और अपने जीतेजी उसको राज पाट सौंपदिया चांदकुंअरि यहां तक पहुंचीथी कि सरस्वतीने कहा तुम झपर२ कहानी कहती जातीहो और मेरे जीमें पूछनेको हजारों बातें भरी हैं पर क्या करूं दिनहो चुकनेपर आया और मुझको अलप कुंअरिके घर जाना अवश्य है संध्याके समय किसीके घरबुवर को जाना भोवर्जितहै मैंतो अब ठहरनहीं सक्ती तुमलड़कियां आपसमें कहो सुनो इन्दरकुंअरिने कहा लोबआमैं तो जातीहूं तुम्हारा जी चाहे तो बैठीरहोया कल्ह फिर आ जाना यहांतो रोजयही हुआ करताहै सरस्वती यह कहकर अलप कुंअरिके घर सिधारी और इन्दरकुंअरि ऐसीरीझीकि पहर रात तक लड़कियों के बैठीरह गई सरस्वती के पीछे यमुना और महताबकुंअरि ने मजे२ की बातें कहानी में निकालीं सरस्वती महताबकुंअरि को बहुत चाहती थीं और उससे अधिक अपनी नन्द यमुना को सरस्वती ने महताबकुंअरि को इस तरहपर पढ़ाया कि दोवर्ष में हिंदी भाषा की बड़ी२ पुस्तकें पढ़ने लगी और चिट्ठी और हिसाब लिखलेती थी वह बदमिजाजी महताबकुंअरि की बाकी रहीन वह चिड़ चिड़ापन बड़ी सीधी साधी लिखीपढ़ी गुणवंती प्यारी लड़की बन गई गुलाबकुंअरि का जिस प्रकार पर उजड़ा हुआ घर सरस्वती ने बसाया अगर उसका ब्योरा लिखाजावे तो दूसरी पुस्तक बन जाय अर्थात् यह कि पण्डित अयोध्या प्रसाद का सब घर छोटे बड़े सरस्वतीके चरण धो धो पीते थे महताबकुंअरि की माने लाख २ यत्न की कि सरस्वती कुछ ले पर उसने कुछ नहीं लिया जब कि महताबकुंअरि का व्याह होने लगा तब पण्डित अयोध्याप्रसाद ने पण्डित शंकरदत्त का दबाउ डालकर सरस्वती को हजार रुपये के जड़ाऊ कड़े दिये और कहा सुनो तुम मेरी पोती और निवासी के बराबर हो मैं तुमको पढ़वाई नहीं देता बल्कि अपना बच्चा समझकर देताहूं उधर शंकरदत्त ने समझाया तो सरस्वती ने

लड़के के लिये इधर तो सरस्वती अपनी पाठशाला के बंदोबस्त में थी उधर अम्बिकादत्त बेरोजगारी से घबड़ाता था एकदिन सरस्वती से कहनेलगा कि अब मेरा जी बहुत घबड़ाता है अगर तुम्हारी सलाह हो तोमैं तहसीलदार साहब के पास पहाड़पर चलाजाऊं और उनके वसीलेसे नौकरीकी तलाश करूं सरस्वतीने थोड़ीदेर सोचकरके कहा कि नौकरी करनी तो बहुत अवश्य है इस कारण कि तुम देखते होकि कैसा तंगी से घर में गुजार होती है अव्वा जान अब बूढ़े हुये उचित यह है कि वह घर में बैठें और तुम कमाकर उनकी सेवा करो सिवाय इसके यमुना बड़ी होती जाती है मैं उसकी लगनी के चिंता में हूं और मनो कामना यह है कि बहुत ऊंचे जगह इसका व्याह हो और मैं यत्न कररही हूं परमेश्वर ने चाहा तो इसी साल में इस की बात चीत ठहरी जाती है परन्तु इसकेलिये बड़ा सामान दरकारहोगा और इससमय तक किसी प्रकार की कोई वस्तु घरमें मौजूद नहीं है भाईजान पहिले तो अलग हैं फिर ऐसी थोड़ीनौकरी में उनसे अपना निबाह नहीं हो सक्ता वह दूसरे को कहां से देसक्ते हैं फिर सिवाय इसके कि तुम नौकरी करो कोई सूरत नहीं परन्तु पहाड़ पर जाने की मेरी सलाहनहीं अव्वा तो तुम्हारे वास्ते कोशिश करेंगे और निश्चय है कि जल्दतर तुमको नौकरी मिल जाय परन्तु किसी का सहारा पकड़ कर नौकरी करना कुछ ठीक बात नहीं बला से थोड़ी हो पर अपने पराक्रम से हो साना अव्वा कोई ग़ैर नहीं हैं रिश्ते में भी तुमसे बड़े हैं उनसे लेना क्या बल्कि मांगना भी ऐब नहीं फिर भी परमेश्वर किसी का इहसानमन्द न करे सदाकी आंख झपक जाती है उन्हों ने मुंह पर न रक्खा तो कुनबे में परमेश्वर रक्खे सौ आदमी हैं मुंहदर मुंह न कहेंग तो पीठ पीछे अवश्य कहेंगे कि देखो ससुरे के सहारे से नौकरी हुई अम्बिकादत्त ने कहा फिर क्या करूं आगरा चला जाऊं सरस्वती ने कहा आगरे में क्या है रईसकी सरकारतो

आप तबाह है नहीं मालूम अब्बाजानको पहले का लिहाज व मुरौवत मानकर पचास रुपया वह किस तरह देता है नये आदमियों की गुंजायश उसके सरकारमें कहां, अम्बिकादत्त ने कहा और बहुत सरकारें है सरस्वती ने कहा जब से अंगरेजी हुई सब रईस ऐसेही तबाह हैं और पिछले नाम नमूद को सब निबाहते हैं दूसरे दस पांच सूरतें उनके यहां लगी लिपटी रहती हैं सोभी क्या खाक, बरसों तनख्वाह नहीं मिलती अम्बिकादत्त ने कहा फिर क्या इलाज, सरस्वती ने कहा अंगरेजी नौकरी तलाश करो अम्बिकादत्त ने कहा अंगरेजी नौकरी तो बे सई सिफ़ारश नहीं मिलती हजारों लाखों आदमी मुझसे बेहतर २ मारे २ फिरते हैं कोई नहीं पूछता सरस्वतीने कहा हां यह सच है परंतु जब आदमी किसी बातकी इच्छा करे तो परमेश्वर पर भरोसा करके निरास न हो मैंने माना कि हजारों नौकरी के तलाश में फिरते हैं परंतु जो नौकर हैं वह भी तुम्ही ऐसे आदमी हैं और सौबात की कि एक बात तो यह है कि नौकरी भाग्य से मिलती है बड़े आदमी देखते रहजाते हैं और अगर परमेश्वर को देना मंजूर होता है तो न वसीला है न लियाक़त छप्पर फाड़कर देता है घर से बुलाकर नौकर रखलेते हैं अम्बिकादत्त ने कहा तो गरज यह है कि घर बैठा रहूं सरस्वतीने कहा यह हर्गिज मेरा मतलब नहीं है जहां तक अपने से होसके यत्न करना चाहिये अम्बिकादत्त ने कहा यही तो कठिन है क्या यत्न करूं सरस्वती ने कहा जो लोग नौकरी पेशा हैं उनसे मुलाकात पैदा करो उनसे हित और प्रेम बढ़ाओ उनके वसीले से तुमको नौकरी की खबर लगती रहेगी उन्हीं के वसीले से तुम किसी हाकिम तक पहुंच जाओगे अम्बिकादत्त ने यही किया कि नौकरी वालों से मुलाक़ात करना शुरूअ की यहांतक कि सरिश्तेदार तहसीलदार ऐसे लोगों में आने जाने लगा रोज़ के आने जाने से सबको मालूम हुआ कि यह भी नौकरीके तलाशमें है यहांतक लाला रुद्रप्रसाद

ने जो कचहरी में रोज़कार नवीस थे अम्बिकादत्त से कहा कि अगर नौकरी की तलाश है तो मेरे साथ कचहरी चला करो थोड़े दिन उम्मेदवारी करो सरिश्ते के कामसे वाकफ़ियत हासिल करो हाकिमों को सूरत दिखाओ इसी प्रकार कहीं न कहीं ढब लगजायगा उसके कहनेसे अम्बिकादत्त कचहरी जाने लगा और रुद्रप्रसाद के साथ कामकिया करता था यहां तक कि हाकिम से दस्तखत करा लाता हाकिम लोग उसको जाननेलगे इसी बीचमें छोटे २ उहदेदारानकी दो चार एवज़ियां अम्बिकादत्तको मिलगई किसी अमले को रुख़सत की ज़रूरत हुई वह आधी तिहाई तनख़ाह पर इसको एवज़ दे गया यहां तक कि संयोग से एक दश रुपये का मुहर्रिर पेशी तीन महीने की रुख़सत पर गया था सो तीन महीनेके पीछे उसने इस्तीफ़ा भेजदिया पण्डित अम्बिकादत्त उसकी जगह पर मुकर्रर होगया परंतु कभी २ सरस्वती से भिनक कर आता तो अम्बिकादत्त शिकायत के साथ कहा करता कि क्या वाहियात नौकरी है दिन भर पीसना और दश रुपया और न ऊपर से कुछ पैदा है न आगे को बढ़ने की आस मैं तो इसको छोड़दूंगा सरस्वती सदा ऐसे ख़्यालात पर उसको लानत मलामत करती और कहती कि तुम बड़ी नाशुकरी करते हो वह दिन भूलगये कि उम्मेदवारी भी नसीब नथी या अब नौकर होतो नौकरी की क़दर भी नहीं करते घरमें घर बैठे क्या दश रुपये कम हैं अपने बड़े भाई को देखो कि कई वर्ष तक सौदागर के यहां दश रुपये की नौकरी करते रहे और जब तुम्हारा नौकरी में मन नहीं लगता तो तुम से काम क्या ख़ाक होता होगा आख़िर को नौकरी खुद छूटजायगी इसीप्रकार थोड़े से बहुत भी होता है हमारे अब्बा पहिले आठ रुपये महीने के नक़लनवीस थे अब परमेश्वर की कृपासे तहसीलदार हैं और भगवानने चाहा तो और भी बढ़ेगी ऊपर की आमदनी पर कभी भूलकर भी नज़र [illegible] हरामके माल में

हर्गिज़ बरकत नहीं होती भाग से बढ़कर मिल नहीं सक्ता फिर आदमी अपनी नियत को डामाडोल क्यों करे जो इससे अधिक मिलने वाला है तो परमेश्वर यों हलालसे भी देसक्ता है ग़रज़ सरस्वती नित्य अम्बिकादत्त को समझाती रहतीथी यहां तक कि जिस हाकिम के पास अम्बिकादत्त नौकर था वह डिप्टी कमिश्नर देहली का मुक़र्रर हुआ यह हाकिम अम्बिकादत्त परबहुत मेहरबानी करताथा दिन को कचहरी में यहहाल अम्बिकादत्त को मालूमहुआ शाम को अम्बिकादत्त घरमें आया तो बहुत उदास था सरस्वती ने पूछा ख़ैरियत है आज क्यों उदास हो अम्बिकादत्त ने कहा क्या बताऊं मिस्टरवुड साहब की बदली दिल्ली को होगई वह तो एक अपने जानने वाले हाकिम थे अब कचहरी में रहने का मज़ा नहीं सरस्वती बहुत देर तक सोच में रही फिर कहा बेशक मिस्टरवुड साहब का बदल जाना अफ़सोस की बात है परन्तु न इस क़दर कि जितना तुमको है जो उसकी जगह आवेगा परमेश्वर उसके दिलमें भी रहम डाल देगा आदमी को आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिये सरस्वती ने पूंछा मिस्टरवुड साहब कब जांयगे अम्बिकादत्त ने कहा कल शामको डाक पर सवार हो जांयगे सरस्वतीने कहा तुम उनके बंगलेपर नहीं गये अम्बिकादत्त ने कहा अब क्या जाता सरस्वती ने कहा यही तो मिलने का समय है और कुछ न होगा तो कोई चिट्ठी परवानातुम को दे जांयगे अम्बिकादत्तने कहा अच्छा सबेरे को जाऊंगा बहुत तड़के कपड़े पहिये पहना अम्बिकादत्त मिस्टरवुड साहब के बंगलेपर गया मिस्टरवुड साहब ने कहा अम्बिका दत्त हम अब दिल्ली को जाता है और हम तुमसे बहुत राज़ी था अब तुम चाहे तो हमारे साथ दिल्ली को चलो हम तुमको वहां नौकरी देगा और जबतक नौकरी न होगी हम अपने पास से पन्द्रह रुपये देगा अम्बिकादत्त ने सोचकर कहा कि

लाके पूछलूं बारज अम्बिकादत्त घरलौटकर आया तो ज़िकर किया कि मिस्टरडडसाहब मुझको साथलियेजाते हैं अम्बिकादत्त की लागे तो सुनतेही गुलमचाया सरस्वती भी सन्नाटे में होगई आखिर अम्बिकादत्तने पूछा कि साहबोंबताओमें जाकरक्या जवाब दूं अम्बिकादत्तकी माबोली जवाबक्यादेना है अब क्या तेरेलिये वह बैठारहेगा या तेरेलिये सिपाही भेजरहा है अम्बिकादत्त ने कहा अच्छा मैं उससे इक़रार आनेका करआंय।हूं अपने जीमें कहेगा कि हिंदुस्तानीकैसे खुदमतलबी हैं।तेहैं मतलबतक हमसे झूठबोला अम्बिकादत्त से माने कहा अच्छा नकिर कहआओ कि साहबमेराजाना नहींहोसका अम्बिकादत्त सरस्वती से पूछा क्यों जी तुम्हारी क्या सलाह है सरस्वती ने कहा सलाह और होतीहै मनकी अभिलाष। तो यहथी कि तुमयहांरहो घरकाबन्दोबस्त सिर्फ़ तुम्हारे दमसेहै और आखिर घरमें कोई मनुष्य भी चाहिये और सलाह पूछो तो जाना उचितहै जब एक हाकिमखुद बेकहेसुने तुमको साथ लेजाताहै तोज़रूर अपनी जगहपहुंचकरबहुतसलूककरेगा अम्बिकादत्तने कहा पांचरुपयेकेवास्ते क्या दो तीन सौ कोसका सफ़र करूं मेरा तो दिल जानेको नहीं चाहता वह मसल है कि घरकी आधी न बाहरकी सारी सरस्वती ने कहा यों तुमको अख़्तियार है परंतु ऐसे समय भागोंसे मिलाहै फिर हाथ न आयेगा और सफ़रकौन नहींकरता हमारे तुम्हारे अच्छा देखो इनलोगों ने सफ़र में उमर ते करदी और अभी तुमनेपांचरुपयेसुनलिये पीछेदेखोगे कितने पांचहैं और जो नहींजाते तो फिर दस रुपये से बेदिलीमत ज़ाहिर करना अम्बिकादत्त ने कहा तो यहां की नौकरी का इस्तीफ़ा देजाऊं और फ़र्ज़किया कि वहां कोई सूरत न हुई तो इधरसे भी गया और उधरसे भी गया सरस्वती नेकहा कि अव्वल तो यह मानलेनाकि वहां कुछसूरत न निकलेगी बुद्धिके बरखिलाफ़ है डडसाहब इतनाबड़ा हाकिम तुमको कामदेनाचाहे और सूरत न निकले मेरेसमझ

में नहींआता और फिर इस्तीफ़ा क्यों दोमहीने दोमहीनेकी छुट्टी लो अम्बिकादत्त ने कहा हां रुख़सत मंज़ूरहुई पड़ीहै सरस्वती ने कहा मंज़ूरहोनेको क्या हुआ उसी मिस्टर उड साहब से कहो वह चिट्ठी लिखदेगा ग़रज़ सरस्वती ने जबरदस्ती जोतकर अम्बिकादत्त को जाने पर राज़ी किया और अपनेपाससे पचासरुपया नक़ददिया और छ: जोड़नये कपड़े बनादिये रामलाल रामदेईमिश्रायनके बेटेको साथकर दिया पण्डित अम्बिकादत्त दिल्ली को रवाना हुये सरस्वतीने पण्डित शंकरदत्त को यह सारा हाल चिट्ठी में लिखा और यह भी कहदिया कि उड साहब दिल्ली को आगरे होकर जांयगे अगर ऐसा होसके कि आप वहां उनसे मुलाक़ात करके उनकी सिफ़ारिश कुछ रईस से करादें तो बहुत अच्छा होगा पण्डित शंकरदत्त ने मिस्टर उड साहब की तलाशकी और रईस के कुछ गांव ज़िलअ़ देहली में भी थे शंकरदत्त ने रईस की तर्फ़ से साहब की दावत की रईस के बाग़ में ठह-राया खाने के पीछे साहब और रईस दोनों बैठे हुये बातें कर रहे थे कि पण्डित शंकरदत्त ने साहब से कहा कि लखनऊ के रियाया को आप की जुदाईकाबहुत रंजहै अगर्चि आप सिर्फ़ दो वर्ष लखनऊ में हाकिम रहे परन्तु आप के इन्साफ़ और आपके शुफ़्क़ी परवरी से वहां के सब लोग राज़ी थे एक बन्दा ज़ादा भी आपके ख़िदमत में हाज़िर था उसके लिखने से सब हाल मालूम रहता था साहब ने पूछा क्या कोई आप का लड़का भी मेरी कचहरी में था शंकरदत्त ने कहा अम्बिकादत्त साहब ने कहा वह तो हमारे साथ आता है वह आप का बेटा है शंकरदत्त ने कहा आप का गुलाम है रईस ने इस समय कहा कि पण्डित शंकरदत्त हमारे रिया-सत के बहुत पुराने नौकर हैं और हमको उनकी परवरिश हरतरह मंज़ूर रहती है परन्तु आपतो जानते हैं कि हमारे यहां अब गुंजायश नहीं पस अगर आप इनके बेटेकी परव-रिश फ़र्मायेंगे तो हम आपके बड़े एहसानमन्द होंगे मिस्टर

उड साहब पहिले से अम्बिकादत्त के हाल पर मेहरबान था अब ऐसी समय सिफ़ारिश होने से मिस्टर उड साहब का अम्बिकादत्त का बहुत बड़ा ख्याल होगया पहिले ता अम्बिकादत्त जवान नौ उमर दूसरे भले आदमी का बेटा तीसरे रईस का सिफ़ारसी चौथे खुद साहब का रफ़ीक़ पांचवें लायक़ अब इतने हक़ अम्बिकादत्त का हासिल होगये साहब ने पहिले रोज़ कचहरी करतेही अम्बिकादत्त का पचास रुपये का नायब सरिश्तेदार किया और पण्डित शंकर दत्त का खत लिखा कि फ़िल फ़ौल हमने अम्बिकादत्त का पचास रुपये की नौकरी दी है हम जल्द इसकी तरक्की करेंगे आप रईस की खिदमत में इसकी इत्तिला करदीजिये शंकर-दत्त ने नज़र बर सुनासिब साहब का शुकरिया अदा किया और वह अम्बिकादत्त जो कभी उम्मैदवारी का मुहताजथा और छोटे२ ओहदेदारों की एवजियां करताथा और सिर्फ़ दश रुपये महीने का मुहर्रिर था और पन्द्रह रुपये महीनेके वादे पर सरस्वती के जोतने से उड साहब के साथ दिल्लीगया था अब एक दमसे पचास रुपये का ओहदेदार होगया अम्बिकादत्त की माता अगर्चि जाने से नाराज़ हुई थीं पर पचास का नाम सुनकर उनकी भी बाछें खुलगई अब ता घरमें चौगुनी बरकत होगई सरस्वतीका बन्दोबस्त और बीस की जगह अब साठ रुपये महीना घरमें आनेलगा क्या पूछना है अम्बिकादत्त आखिर एकही वर्ष में सरिश्तहदार होगया परन्तु सरिश्तहदार होने तक सम्हला हुआ था खर्च भी बराबर आता था चिट्ठी भी बराबर चली आती थी आखिर जवान आदमी था खुद मुख़्तार होकर रहा संगति बुरीमिल गई बहक चला चिट्ठियों में कमी होनी शुरूअ हुई सरस्वती ता बड़ी बुद्धिमान थी समझ गई कि कुछ दाल में काला है बहुतदिन तक सरस्वती चिन्ता में रही कि अब क्या यत्नकरूं अन्तका सिवाय इसके कुछ समझ में न आया कि आपजाना चाहिये हरचन्द सरस्वती ने दिल्ली जाने का दिलमें पक्का इ-

रादा करलिया था परंतु सलाह के वास्ते जयजयवन्ती को बुला भेजा और सब वृत्तान्त उससे कहा जयजयवन्ती ने कहा बहिन दीवानी हुई है अपना वतन छोड़कर अब कहां दिल्ली जाती फिरेगी सरस्वती ने कहा मुझको जन्मभूमि से क्या प्रयोजन है जिसके साथ मेरा सम्बन्ध है जहां वह है वहीं मेरा घर है जयजयवन्ती ने कहा अय हय कुनबेवाले क्या कहेंगे हमारे कनबे में से कोई आज तक बाहर नहीं गया सरस्वती ने कहा इसमें एक की क्या बात है आखिर यही कहेंगे कि खसम के पास चली गई तो बुरा क्या कहा और कुनबे की रीति जो पूछो तो पिछले दिनों न डाकघी न रेल न रस्ते आबाद थे स्त्रियों का सफ़र करना बहुत कठिन था इसकारण लोग नहीं जाते थे अबक्या कठिन है जो आज शाम को रेलपर बैठूं और परमेश्वर असलखैर रक्खे तो परसों दिल्ली दाखिल होगया लखनऊ से निठूर गये जयजयवन्तीने कहा क्या बुलाये की चिट्ठी आई है सरस्वती ने कहा चिट्ठी तो नहीं आई है जयजयवन्तीने कहा बे बुलाये जाना भी उचित नहीं सरस्वती ने कहा तुम उचित और ग़ैरउचित को देखती हो और मैं कहती हूं जो मैं न जाऊंगी तो जन्म भरके लिये घर बिगड़ जावेगा जयजयवन्ती बोली अय बहिन ऐसी तुम क्यों गिरी पड़ती हो तुमको उनकी क्या परवाह है परमेश्वर तुम्हारे पाठशाले को सलामत रक्खे तुम दमको बेटी खिलासकती हो सरस्वतीने कहा वाह आपकी क्या समझ है यह पाठशाला तो मैंने अपनाजी बहलानेकेवास्ते मुक़र्ररकरलिया है कुछमुझको इससे कमाई करनी मंजूर नहीं भगवान जाने तुमको निश्चय होय या न होय पाठशाले की रक़मसे आजतक एक पैसा मैंने अपने ऊपर खर्च नहीं किया जब वह दिल्ली गयेथे तो पचास रुपया नक़द और बीस रुपये के कपड़े उसी जायदादसे उनको बनवा दिये बाक़ी कौड़ी २ का हिसाब लिखाहुआ मौजूद है देखो स्त्रियों की कमाई भी कोई कमाई है जो स्त्रियों की कमाई से घर बसा करें तो पुरुष क्यों हों जयजयवन्ती ने

कहा बहिन ऐसी भी क्या प्रीत से कहां जाओगी जाड़ा आनेदो उसमें खुले मौसम में देखलेना सरस्वती ने कहा अवहाथ देर करना तो गजब है अब जो काम समझाने से निकलेगा फिर बड़े झगड़ों से न मिटेगा जयजयवन्ती ने कहा अब बहिन घर छोड़ते हुये तुम्हाराजी नहीं कुढ़ता सरस्वतीने कहा क्यों नहीं कुढ़ता क्या मैं आदमी नहीं हूं परन्तु यह थोड़ी देर तक कुढ़ना बेहतर या जन्म भरका जलापा बेहतर जयजयवन्तीने कहा तुमने अपनी सासरेसी आज्ञा लेली है सरस्वती ने कहा भला वह क्या आज्ञा देंगी परन्तु हमारी सास विचारी सीधी आदमी है मैं समझा दूंगी तो विश्वास है कि न रोकैं गरज यह कह सरस्वतीने अपनी इच्छा जाने की और उसका प्रयोजन अपनी सासमे एकदिन कहा बात तो नेकथी उसमें कौन मनाकर सक्ता था सरस्वती का जाना ठहरगया एकदिन सरस्वती सब कच्चा हाल अपनी माता से भी कह आई और विदा हो आई पाठशालेके लिये लड़कियों को समझा दिया कि यमुना तुम सबको पढ़ाने को बहुतहैं मैं दो महीनेके लिये जातीहूं सब लड़कियां बदस्तूर आयाकरैं सरस्वती विदा होनेके लिये अपनी बड़ी बहिन परमेश्वरी के पासभी गई वहां परमेश्वरीदत्त ने पूछा क्योंजी तुम जाती हो पाठशाले को क्या कर चली सरस्वतीने कहा पाठशाला और घर सब आपको सौंपे जातीहूं परमेश्वरीदत्तने कहा वाह क्या खूब सुझो न घरसे प्रयोजन न पाठशालेसे वास्ता मैं क्याकर सक्ताहूं सरस्वतीने कहा प्रयोजन रखना और न रखना सब आपके आधीन में है परमेश्वरीदत्त ने कहा यह बात तुमको कहनी उचित नहीं भला मेरा क्या अख्तियारहै घर तुम्हारी बहिनने छुड़वाया रहा पाठशाला सो लड़कियोंकाहै लड़कों का पाठशाला होता तो मैं सबको पढ़ादिया करता सरस्वतीने कहा अब आप और बहिन दोनों घरमें चलकर रहियेअम्मा जान अकेलीहैं परमेश्वरीदत्तनेकहा अपनी बहिनको समझावो सरस्वतीने कहा समझानेकी क्याहाजतहै वहतो आपजानती

समझती हैं यहां अकेले उनको लोभ होता है न बच्चोंका कोई सम्हालने वाला न घरका कोई देखनेवाला दुःख सुख आदमी के साथ है बेजरूरत अलग रहना उचित नहीं और पिछली बातें अगई गुज़री हुई आपुसको नाइत्तिफ़ाक़ी क्या और इसका रंजक्या परमेश्वरी अलग घरकरने का मज़ा खूब चख चुकीथी और बहाना ढूंढतीथी कि फिरसाथ रहनेको कोई कहे तुरंत राज़ी होगई सरस्वती अपने साथ दोनोंको लिवालाई अम्बिकादत्तकी माको सरस्वतीके जानेका बहुत रंजथा अब उसकी भीतसल्ली होगई कि एकबहू गई तो दूसरी मौजूद है यमुनाको अलबत्ता बड़ा सोच हुआ कि देखिये क्या हो परंतु सरस्वतीने उधर तो यमुना की तसल्ली की और समझा दिया कि अब वहबातें नहीं हैं इधर अपनी बहिनको समझा दिया कि यमुना अब बड़ी होगई है कोई बात कहीन कहियेगा पाठशाले के हेत परमेश्वरीदत्त से इतना कह दिया कि पढ़ाना लिखाना सब यमुना कर लिया करेगी आप सिर्फ़ ऊपर के बंदोबस्त की खबर ले लियाकीजिये और पाठशाले का हिसाब यमुना को लिखवा दिया कीजियेगा गरज़ सरस्वती इसतरहसे बिदा हुई और रेलपर सवार हो दिल्ली पहुंची यहां अम्बिकादत्तको सरस्वतीके अचानक पहुंचने से बड़ा आश्चर्यहुआ पूछा कुशल तो है कहीं अम्मासेतो नहीं लड़आई सरस्वतीने कहा परमेश्वर २ करो क्या अम्माजान मेरी बराबर की थीं जो मैं उनसे लड़ती इस चार वर्षमें कभी तुमने मुझको उनसे या किसू से लड़ते देखा यहां अम्बिकादत्तने खूबहाथ पांवनिकालेथे और बुरी संगतिमें फंसाहुआथा ठकुरसुहातियेजमाथे और उसको उल्लू बनाए हुये थे बाज़ार घूसका गर्म था नाच रंगतमाशा निश्दिन हुआ करता था अमीरी ठाठ थे और तनख्वाह से चौगुनाखर्च यहीहाल कुछदिनों और रहता तो ज़रूरमिस्तीर उड साहबको शकपैदा होता आख़िरको नौकरी जातीरहती अच्छे समय सरस्वती जा पहुंची तुरंत उसने हर एक ओर से बन्दोबस्त करना आरंभ किया और समझाया कि तुमको पर-

मेश्वर ने सौका नौकर कर दिया उसका यही बदला है कि तुमको उस पर संतोष नहीं अम्बिकादत्तने कहा जो खुशीसे दे उसके लेने में क्या हर्ज है सरस्वती ने कहा क्या खूबरुपया भी ऐसी चीज़ है कि कोई उसको बेप्रयोजन खुशीसे देता है इन दिनों लोग रुपया को ऐसा जानते हैं कि इज्ज़त तक की परवाह नहीं करते परंतु रुपया नहीं छोड़ते आदमी अपने उपर समझे कि हम किसी को क्या दिया करते हैं तुमकोतो एक रुपया भी बेप्रयोजन देना बुरा मालूम होता है फिर लोगों के पास ऐसा कहां का खज़ाना भरा पड़ा है कि वह बेप्रयोजन दे जाते हैं जब देखते हैं कि काम बिगड़ता है न देंगे तो मुकद्दमा ख़राब होगा लाचार उधार लेकर घरवा-लोंके गहने बेंच ज़मीन गिरों रख कर घूस देते हैं अम्बिका-दत्त ने कहा मैं आप नहीं मांगता वह आप देते हैं तो क्या फिर इसमें डर है सरस्वती बोली पहले तो घूस छिप नहीं सकी सिवायइसके आदमी परप्रगट न हुईपरमेश्वर जो अंदर बाहरका हाल देखता है वह तो जानता है पस आदमियों को पाप जमय् करना और परलोकके लिये अधर्म की गठरी बांधना क्या ज़रूरहै ग़रज़ ऊंच नींच समझा कर सरस्वतीने अम्बिकादत्त से तो बहकरा के थोड़े दिन पीछे सरस्वती ने पूछाये चार आदमी जिनको बाहर सीधा जाताहै कौन आ-दमी हैं अम्बिकादत्त ने कहा नौकरी के उम्मैदवार बिचारे परदेशी हैं मैंने कहा अच्छा जब तक तुम्हारी नौकरी न लगे मेरे पास रहो सरस्वतीने पूछा फिर अब तकक्या इनको नौ-करी नहीं मिली अम्बिकादत्त ने कहा नौकरी मिलतीहै पर उनकी हैसियत से कम है सरस्वतीने कहा जब उनकी यहां तक दशा पहुंची कि दूसरे घर पड़े हुये रोटियां खाते हैंतो हैसियत की क्या बात रही थोड़ी बहुत जो मिले कर लें अ-म्बिकादत्त ने कहा परमेश्वर जाने तुम क्या कहती हो इज्ज़त से घटकर कैसे कम दरजे की नौकरी करें सरस्वती ने कहा कमदर्जे की नौकरीमें [illegible] और दूसरे केआसरेरही

होने में बेइज्जती नहीं जब इन लोगों में इतनी लज्जा नहीं तो और मुआवजी इनमें अवश्य बुरे होंगे इनका साथ रहना अच्छा नहीं ज़रूर तुम्हारे नाम से यह भी लेते होंगे इनसे कहो या नौकरी करें या सिधारें अम्बिकादत्त ने कहा मेरी मुरव्वत तो यह नहीं चाहती कि मैं जवाबदूं सरस्वतीने कहा जब उनमें मुरव्वत नहीं तो तुमको मुरव्वत का लिहाज़ क्या ज़रूर है अगर तुमसे बचे तो कुनबे में बहुत से अज़ीज़ हैं उनका हक़ गैरों से पहिले है और गैरों में भी ऐसों को देने से क्या हासिल और यह ज़रूर नहीं कि तुम सख़्ती से जवाब दो किसी तौर उनको समझा दो खुलासा यह किये लोग अम्बिकादत्त के बिगाड़ने वाले थे सरस्वती ने हिकमति से उनको निकलवा दिया नौकरों में से जो २ बद चलन थे छांट २ कर निकलवा दिये गये डेढ़वर्ष सरस्वती ने रहकर भीतर बाहर सब बन्दोबस्त करदिया अब दुर्गादत्त का ब्याह होने वाला था सरस्वती के बुलावे में चिट्ठी गई जयजयवन्ती ने जल्द आनेको लिखा सरस्वतीको गये हुयेभी बहुत दिन हो चुके थे सरस्वती ने इरादा लखनऊ आने का किया परंतु अपने मनमें सोची कि अम्बिकादत्त को अकेला छोड़ना योग्य नहीं अम्बिकादत्त से कहा कि परदेश में अकेला रहना उचित नहीं अब कोई अपना सम्बन्धी साथ रहना ज़रूर है मेरे समझ में तुम अपने चचेरेभाई रामसहायको बुलाय लो वह यहां तुम्हारे पास कचहरी का काम सीखेगा और पढ़ेगाभी और कदाचित् कहीं उसकी नौकरी भी लगजाय पण्डित शिवदत्त चचा को अम्बिकादत्त की चिट्ठी गई और सरस्वती के रहते रामसहाय पहुंच गये यह लड़का बहुत नेक बख़्त था और अम्बिकादत्त से सिर्फ़ दो वर्ष छोटा था अब सरस्वती को सब तरह विश्वास होगया कि दिल्ली से बिदाहोकर आगरा पहुंची यहां शंकरदत्त के पास दश दिन रही शंकरदत्त की उमर बासठवर्ष की थी और सुख़्तारी की नौकरी में बहुत मेहनत थी सब [illegible] जाकर रईस के

मुक़ह्मात की ख़बर लेना और सुबह शाम अमलों में जाना बेचारे पण्डित जी रातको जो आतेथे तो बहुत थक जाते थे सरस्वतीने कहा अब आपका समय नौकरी करनेका नहीं है मुनासिबहै कि आप घरबैठिये एक पुस्तकमें मैंने पढ़ा है कि आदमी अवस्था के तीन भाग करै पहला भाग गुण और विद्या सीखनेका दूसरा भाग संसारके कामोंके बन्दोबस्तका तीसरा भाग आनन्दसे रहने और परमात्मा के भजनका पस आप घर चलकर आनन्द से बैठें पण्डित शङ्करदत्त ने कहा पहले तो रईस छोड़ता नहीं और दूसरे आखिर मेरी जगह कोई कामभी करनेवाला चाहिये सरस्वतीने कहा जब आप अपने बुढ़ापे का हाल वर्णन कीजियेगा तो निश्चय है कि अवश्यमान जायगा और काम करने को तो भाई जान क्या कम हैं पण्डितजीने कहा वह कचहरी दरबार का दस्तूर क्या जानें सरस्वतीने कहा थोड़े दिन उनको बुलाकर साथ रखिये देखने भालने से सब मालूम होजायगा पण्डितजी को सरस्वतीकी बात पसन्द आई सरस्वती तो लखनऊ पहुंची और पण्डित शङ्करदत्त ने परमेश्वरीदत्त को बुला लेना थोड़े कालमें परमेश्वरीदत्तने बापकासबकाम उठालिया और रईस को अपनी सेवासे बहुत प्रसन्न किया तब शङ्करदत्तने रईस से कहा कि अब यह लड़का हुजूर में हाज़िर रहेगा मुझको आज्ञा दीजिये कि घरमें बैठकर परमेश्वर का भजन करूं रईस दिल चला था उसने पण्डित जी की बात मानली और रईस बीस रुपये महीना पण्डितजीकी पिन्शन करदी और पण्डित शङ्करदत्त की जगह परमेश्वरीदत्त को पूरी तनख़ाह पर नौकर रखलिया सरस्वती लखनऊ में आई तो उसने यमुना की मंगनी की फिकिर की महताबकुंअरि रीवांसे अपने घर आई हुई थी और उन्हीं दिनों गुलाबकुंअरि भी ससुराल से छोटीबहिन से मिलने आईथी पण्डित अयोध्या प्रसाद का तो तमाम घर सरस्वती का चेला था दोनों बहिनें सरस्वती के आनेके समाचार सुनकर दौड़ी आईं गुलाबकुंअरि ने कहा

कि बीबी कैसाजी तुममें पड़ा था बयान नहीं होसक्ता भला महताबकुंअरि तो तुम्हारी विद्यार्थिन है परंतु मैं शागिर्दी से भी अधिक हूं मेरा उजड़ाहुआ घर तुम्हीने बसाया सरस्वती ने कहा मैं किस लायक हूं गुलाबकुंअरि ने कहा वाह २ जी तुम कैसी बातें कहतीहो मैं तो जीतेजी तुम्हारा सलूक नहीं भूलोंगी और क्या कहूं तुम तो हम लोगों की सेवा किसी प्रकार ग्रहण नहीं करती नहीं तो अपने खाल की जूतियां तुम को बनवा देती तब भी शायद तुम्हारा हक़ अदा न होता सरस्वतीने कहा पहिले तो मुझसे कोई काम बननहीं पड़ा और अगर कोई काम मेरा तुम्हारे पसंदहुआ तो परमेश्वरने तुमको सब क़ाबिल बनाया है हम ग़रीबों को खुशकरदेना कौन बड़ी बात है महताबकुंअरि बोली अय हय अपने मुंह कैसी बात कहती हो सरस्वती बोली कि परमेश्वर रक्खे उधर तुमतो पोतड़ोंके अमीर और अमीरों के सिरताज और इधर यह सरदार और सरदारों की बेटी अबतो इस शहरमें तुमसे बढ़कर दूसरा अमीर नहीं तुमतक जो आदमी पहुंचकर निरास रहे तो उसके भाग का दोष है महताबकुंअरि ने कहा अच्छी बी क्या बात है सरस्वती ने कहा बड़ा कठिन कामहै तुम क़रारकरो कि हमनिरास न करेंगी तो मैं कहूं महताबकुंअरि और गुलाबकुंअरिने जाना किसी की नौकरी चाकरी के लिये कहेंगी दोनों ने कहा बीबी परमेश्वर की सौगंध तुम्हारे लिये हम दिलोजान से हाज़िर हैं हमको तो बड़ी आरज़ू है कि तुम हम से कुछ फ़र्मायश करो सरस्वती ने कहा वह काम तो मेरे नज़दीक बड़ा है परन्तु अगर तुम दोनों बहिनें जीसे कोशिशकरो तो बड़ा नहीं है दोनों बहिनोंने परमेश्वर की सौगंध खाई और कहा जो हमसे हो सकेगा तो हम अपनी शक्तिभर उठा न रक्खेंगी सरस्वतीने कहा मेरी यह अभिलाषा है कि यमुना की सगाई द्वारिका प्रसादसे होजाय यह सुनकर दोनों बहिनें चुप हुईं फिर इधर उधर की बातें होने लगीं जब दोनों

बहिने उठनेंको ऊई तो सरस्वतीने महताबकुंअरिका दुपट्टा पकड़ा और दूसरे हाथसे गुलाबकुंअरिका और कहाकि मैं अपना हक्क झगड़कर लूंगी और जब तक मेरा सवाल पूरा न होगा परमेश्वर की सौगंध जाने न दूंगी महताबकुंअरि बोली भला बीबी इसमें हमारा क्या अख्तियारहै अभी तो हाकिका प्रसाद लड़काहै दूसरे ऐसी बातोंमें मा बापके होते बहिनों को क्या दखलहै सरस्वती ने कहा बड़ी और ब्याही ऊई बहिनें माताके बराबर होती हैं रिश्ते नाते वे सब की सलाहके नहीं होते ऐसा मुमकिननहीं है कि तुमसे सलाह न हो महताबकुंअरि ने कहा अभी हमारे यहां तो कुछ इस बातका चर्चानहीं है इसी प्रकार बातमें और बातहोने लगी सरस्वतीने कहा बीबियो मेरा मतलब तो रहा जाता है हां ना का मुझको उत्तर दीजिये गुलाबकुंअरि ने कहा भला हम क्योंकर हामी भरसक्ती हैं सरस्वतीने कहा संपति स्वरूप स्वभाव तीन बातें चाहियें सो संपतितो हम ग़रीबों के पास नामको नहीं रही स्वभाव सो महताबकुंअरि तुम यमुना को अच्छे प्रकार जानती हो दो बर्ष तुम्हारा उसका साथ रहा तुम सचकहना लाज संकोच सुशीलता अदबनेक-बख़्ती लिखना पढ़ना सीना पिरोना अच्छे भोजन बनाना और सब प्रकारकी बातें यमुनामें हैं या नहीं क्यों महताब कुंअरि मैं झूठ कहती हूं तो तुम बोलो महताबकुंअरि ने कहा बीबी भला चांदपर कोई ख़ाक डालसक्ता है यमुना को परमेश्वर जीता रक्खे बड़े घरोंमें तो भला कोई यमुना का पासंगतो होले सरस्वतीने कहा कि अबरहा स्वरूप सो नाक कान आंख जैसे आदमी में होते हैं वैसेही यमुना में भी हैं वह भी आदमी का बच्चा है जवान ऊये पीछे इससे अच्छी सूरत निकल आये गी गुलाबकुंअरि बोली ऐ बीबी यमुना को तुम आदमी का बच्चा कहती हो परमेश्वर की सौगंध यमुना हजारों सुन्दर लड़कियों में अपना दुसरिहा नहीं रखती है बड़े घरों में [illegible] पकवान हम

ने तो कोई स्वरूपवान न देखा देखो हम दोनों बहिनें मौ-जूद हैं भगवान सौगंध वाचा कौड़ियां हमसे अच्छी हैं और य-मुना तो चन्दे आफ़ताब चन्दे माहताब ख़ूबसूरत की स्त्री कहां देखने में आई सरस्वती ने कहा फिर हुआ सिवाय ग़रीबी के और हममें क्या बुराई है महताब कुंअरि ने कहा अच्छा आज हम इस बात का चर्चा अपनी माता से करेंगी सरस्वती ने कहा बात चीत तो मैंभी कर सकी हूं तुम मन से इसमें सहायता करो और अब यह बात जो छेड़ी है तो ऐसा हो कि पूरी होजाय दोनों बहिनों ने वचन दिया कि बी-बी जैसा आपका मन चाहता है वैसाही होगा ग़रज़ कि उस समय दोनों बहिनें बिदा हुईं दूसरे दिन सरस्वती अब फूल कुंअरि से मिलने को गई तीन सौ रुपये का बहुत अच्छा धानी रूमाल कामदार जो दिल्ली से लाई थी फूलकुंअरि को भेंट दिया फूलकुंअरि ने कहा तुम हमको बहुत शर्मिन्दा करती हो हम को तुम्हारी टहल करनी चाहिये न कि उलटा तुमसे लें सरस्वती ने कहा यह रूमाल अवश्य कर मैंने आपही के लिये बनवाया था डेढ़ वर्ष से इसी हेतु मैंने गठरी में बांध रक्खा था कि लखनऊ चलकर मैं आपको दूंगी फूलकुंअरिने कहा मैं इसको लेती हूं परंतु मुझको परमेश्वर की सौ-गन्ध लाज आती है कभी आपने भी तो फ़र्मायश की होती मेरा जी प्रसन्न होता इतना सहारा पाकर सरस्वती हाथबांध कर खड़ी होगई और अपनी मनोकामना बयान की फूलकुं-अरनेकहा अच्छा आप बैठियेतो सही सरस्वतीने कहा अब मैं अपनी इच्छा पूर्ण करके बैठूंगी फूलकुंअरिने हाथ पकड़ करबैठा लिया और कहा बेटा बहुओं के काम कठिन हैं कु-म्हार से दमड़ी का सिकोरा लेते हैं तो ठोक बजा कर लेते हैं और यह तो जन्म भर कमाइयों के व्योहार हैं सोचसमझ कर सलाह मशविरा करके ऐसे काम होते हैं अब इसका तुम ने चर्चा किया अबमैं इनके पितासे और अपनी बड़ी भगिनी और कुनबे वालों से पूछोंगी जैसा होगा देखा जायगा अभी

तो द्वारिकाप्रसाद लड़का है सरस्वती ने कहा मैंने अपने हौसिले से बढ़कर सवाल किया है मेरे पास ग़रीबी और आजिज़ीके सिवाय देने लेनेको कुछ नहीं है अगर्चि फूलकुंअरि ने जबान से न कहा परंतु अन्दाज़ से मालूम हुआ कि बात बुरी नहीं लगी चलते समय सरस्वती गुलाबकुंअरि महताबकुंअरि से कहती गई कि अब इसका निबाह तुम्हारे आधीन है सरस्वतीके जाने पीछे दोनों बहिनोंने यमुना की बड़ी तारीफ की फूलकुंअरि थोड़ी ही बातोंमें राज़ी होगई और अपनी लड़कियों से बोली कि असल तो लड़की को देखना है परमेश्वरकी कृपासे हमारे घरमें किसी वस्तु की कमी नहीं महताबकुंअरि बोली गो उनके घर में ग़रीबी है परंतु सरस्वती बड़ी चालाकी स्त्री है मुंहसे नहीं कहती तो क्या है परंतु समयपर बहुत बढ़ चढ़कर करेगी फूलकुंअरि बोली अच्छा वह आयें उनसे पूछाजाय संध्यासमय पण्डित अयोध्या प्रसाद आये तो गुलाबकुंअरि महताबकुंअरि ने यमुना के मुक़द्दमे को इस तरह पेश किया जैसे कचहरीमें वकील अपने मुक़द्दमोंको पेश करते हैं ग़रज़ बहुत सोच बिचार करके पण्डित अयोध्या प्रसाद ने यमुना की बात को पसन्द किया दूसरे दिन गुलाबकुंअरि महताबकुंअरि दोनों बहिनें पास सरस्वतीके आईं और कहा बीबी मुबारक हमारा इनाम दिलवाइये सरस्वतीने कहा परमेश्वर तुम सबको भी मुबारक करे और इनाम देने का मेरा क्या मुंह है मेरा इनाम है आशीर्बाद सो रातदिन तुम्हारे लिये मैं करती हूं महताबकुंअरिने कहा नहीं आनतो अवश्य करमुंहमीठा करना चाहिये सरस्वतीने कहा बैठिये२ मिठाई खाइयेगा गुलबासाको बुलाया और पांच रुपये निकाल उसके हाथ दिये कहा कि पांच रुपये की अच्छी मिठाई पांच चारप्रकारकी ले आओ और दोनों बहिनोंको पान दिये इतनेमें मिठाईकी टोकरीभी आगई सरस्वती परमेश्वरी महताबकुंअरि गुलाबकुंअरि सबने मिलकर खाई और जो बची पाठशालामें भेजदी जब सरस्वतीने कहा इससमय तक

मैंने अम्मांजान को खबर तक नहीं की थी अब उनसे चर्चा करके परसों अच्छी साअत अच्छा लग्न मुहूर्त है परमेश्वरने चाहा तो रीतरस्म-मंगनी की होजायगी दोनों बहिन बिदा हुई तो सरस्वतीने नीचे उतरकर सासुके पास बैठकर कहा कि अम्मांजान कुछ आप को यमुना के ब्याहकाभी सोच है सासबोली क्या सोच करूं कहीं से बातभी आई सरस्वती ने कहा मैंने एक बात सोचीहै जो आपको पसंद हो तो चर्चा चलाऊं अम्बिकादत्त की माताने पूछा वह क्या सरस्वती बोली पण्डित अयोध्या प्रसादके लड़के से अम्बिकादत्तकी स-बोली भला बेटी झोपड़े का रहना महलों का ख़ाब देखना कहां पण्डितजी का घर आज उनके यहां वह सम्पदा है कि शहर में उनका दुसरिहा नहीं और हम ग़रीब कि रहने तक का झोपड़ा दुरुस्त नहीं यहां की बात क्या उनके जीमें आवेगी दृथा कहकर बात खोनीहै सरस्वतीने कहा वह धन वाली हैं तो अपने लिये हैं परमेश्वर न करै हम क्या उनका आसरा रखती हैं वह अपने सुखाउ चादी में मगनहैं तो हम अपनी दाल दलिया में प्रसन्नहैं जात पांतमें हम उनसे हेठी नहीं गुण जो यमुना मेंहै वह उनके बड़ोंकोभी नसीब न हुआ होगा अम्बिकादत्त की माता ने कहा बेटी सम्पति के आगे गुण हाथ बांधे खड़ा रहता है सोनेके छपरखट बनवाऊं तो उनसे बातकरूं तुम इसका ध्यान मत करो सरस्वतीने कहा हज़ार सम्पति की एक सम्पति सुन्दरताई है यमुनासे अच्छा अपने कुनबे में तो ढूंढलो अम्बिकादत्त की माता बोली तुम कैसी लड़कियों की कैसी बात करती हो पहले स्वरूपभी बराबरी में पूछा जाताहै दूसरे यह बात मुंहसे कहने कीहै कि हमारी बेटी सुन्दर है और फिर सुन्दराई क्या बला है बड़े २ स्वरूपवालोंको देखाहै कि जूतियों के समान आदर है और कुरूपेहैं कि लाखोंके लाल बने बैठेहैं सरस्वतीनेकहा सुन्दरताईभी ऐसी चीज है कि आदमी उस पर मोहित न हो परन्तु बहुत आदमी जिनकी सूरत अच्छी हुई पर प्रकृति

उनकी बुद्धी और स्वभाव निकम्मे होतेहैं और मनमें घमण्ड होता है इसकारण उनकी दाल कहीं गलने नहीं पाती उनकी प्रकृति उनका मिज़ाज उनकी सुन्दराईके मोलकोघटा देताहै जैसे कोई घोड़ाहै रंगतका साफ हाथ पांवका अच्छा बाल भौंरों से निर्दोष जोबन का दुरुस्त परन्तु चाल का बुरा अड़ूहै दुलत्ती अलग चलाताहै खड़ा होकर उलट जाता है ऐसे घोड़े की कोई सूरत देखकर क्याकरे और जो अच्छी सूरतकेसाथ मिज़ाजभी होतो अमोलहै तैसे मेरीनन्द यमुना गुणस्वरूप और स्वभावमें अपनादूसरिहा नहींरखती अम्बिकादत्त की माता ने कहा फिर कुछ देनेकोभी चाहिये हम ग़रीबों के पास उनके देने योग्य सामान कहां है माना जो बातभी ठहरी और वहां आंखों में लड़की निरादर रही तो कुछ हासिल नहीं सरस्वती ने कहा इज़्ज़त और आदर दहेज पर नहीं होताहै स्त्री पुरुषके मेल मिलाप परहै गुलाबकुंअरि क्या थोड़ा दहेज लेकर गईथी परन्तु बहुत दिनों ससुरालमें एक दिनभी रहना न मिला और दूर क्यों जाओ हमारी बड़ी बहिन को देखो कि उनकोभी हमारे बराबर दहेज मिलाथा फिर क्यों रोज लड़ाई होती रहतीहै यह तो अपना २ स्वभाव और अपना२ गुणहै अम्बिकादत्तकी माता बोली यह तो मैंने माना कि मियां बीबी का प्यार मिलाप जहेज पर नहींहै परन्तु कुनबेके लोग कब मानते हैं लड़केने खयाल न किया तो क्याहै सास नन्दें तो कभी समय पाकर कह गुज़रेंगी आखिर जीको बुरा लगताहीहै एक तो बेटी वालेका योंही सिर नीचा होताहै उसपर दान दहेजभाजनी बाजनी यह बेल मड़ये चढ़ते दिखाई नहीं देती सरस्वतीने कहा कुनबे वालों से क्या प्रयोजन कुनबे वाले क्या सदा थोड़ेही पास बैठे रहते है हां सास नन्दों के रात दिन के ताने बहुधा क्रोध का सामनाहै सो गुलाबकुंअरि महताब कुंअरि क्याताने देंगी ऐसा क्या अंधेर है ब्याह होने पीछे क्या आंखों पर ठिकरी रखलेंगी महताबकुंअरि को जैसे

मित्रताई यमुनाके साथहै आप देखतीहोरही शुलाबकुंअरि परमेश्वर जाने ज़ाहिर में जब वह मिलती हैं बिछी जातीहैं मैं भी तो आख़िर जीती बैठी हूं यमुना को जो बुरी प्रकार देखेंगी मुझको क्या मुंह दिखावेंगी और सौ बातकी एक बात मैं यह जानतीहूं कि सास नन्दें भी हवा देखा करती हैं लड़केको रीझाहुआ देखेंगीतो किसी की सामर्थ्य नहींकि कोई यमुनाको आंख उठाकर देखे अम्बिकादत्त की माता ने कहा भला तुम्हारी मर्ज़ी क्या है ढांक के पत्तेपर पांव पूजदूं सरस्वती ने कहा यह तो मैंभी नहीं कहती परन्तु न होने से क्या बेटा बेटीके काम काज इस प्रकार नहीं करते हैनादि-खाना एक रीति रखा संसार की है जितनी चादर देखे उतना पांव फैलावे जितना मक़्दूर हो और जो बन पड़ा दिया और जो न होसका न दिया नाम निशानके पीछे घर का दिवाला निकालना बुद्धि के विरुद्ध है मेरी पाठशाला में एक शहज़ाद कुंअरि लड़की पढ़तीथी उसके पिताको बलवे की खैरख्वाही में सरकार से पन्द्रह हज़ार रुपये इनाम मिलेथे किसी अंग-रेज़ की जान बचाई थी पन्द्रह हज़ार रुपया उनको इतना था कि जन्मभर इज़्ज़तसे रहते एकबेटा और एक बेटीब्याहने कोरठी शेखीमें आकरपन्द्रह हज़ार सरकारका दियाहुआ उठा बैठे और दो हज़ार रुपया ऊपरसे उधार लेकर लगा दिया उस समयतो चारों ओर वाह२ हुई अब घरमें इसप्रकार लोषपेटेर करतेहैं कि भोजनतकका भीठिकाना बहुत कठिन से लगता है ब्याह में मुझको भी बुलावा आया था सामान और तैयारी देखकर मेरी तो होश की चिड़ियां उड़गईं बल्कि शहज़ादकुंअरि की माता ने बुरा भी मानाहो इस-लिये कि मैंने तो उस समय कह दिया था कि बीबी बेटा बेटीका देना आंखों सुखकलेजे ठंढकथी कहां गया खिचड़ी में परन्तु अपनी हंड़िया की खैर मनानी अवश्यहै कहनेको तो मैं कहगुज़री पीछे मुझकोभी पछतावा आया कि शह-ज़ादकुंअरि कहैगीकि लेना एक नदेनादो यह बे प्रयोजन

भांजी मारतीहै अम्बिकादत्तकी माने कहा हां सचहै मगर कमबख़्त संसारमें रहना है क्या करें कहां गांयहा न हो कर नाही पड़ताहै संसार कीसी न करें तो नकू कौन बनेगरीबी सारी बे इज़्ज़ती कराती है सरस्वती बोली ग़रीबी की क्या बातहै संसारमें तो ग़रीब लोग अधिक हैं जो ग़रीब होना बेइज़्ज़ती की बात है तो जगत में बे इज़्ज़त बहुत हैं ग़रीबी अमीरी सबअपनी अपने भागसेहै सब एकसे क्योंकर होजांय अम्बिकादत्त की माता बोली अब हय शादी व्याहमें अगर बहुत ख़र्च करने की अंगरेज़ी सरकार से मनाही होजाती तो झगड़ा मिटता सरस्वती, अख़बार से तो प्रकट होताहै कि अंगरेज कुछ बन्दोबस्त करने वाले हैं और कहीं २ कुछ बन्दोबस्त होगया है और व्याहमें ख़र्च की एक हद्द बांधी गई है परंतु यह काम हम लोगों के करने काहै सब एका करके जितने ख़र्च के फजूल हैं छोड़दें, अम्बिकादत्त की मा बोली ख़र्चके फजूल होने को जो तुमने कहा सो जिसको परमेश्वरने दिया है कुछ फजूल नहीं हां जिसकी गांठ पैसा कौड़ीनहीं उसकोतो सभी फजूलहै सरस्वती, यह न कहिये शादी व्याह मेंतो वाजिबी ख़र्च कम है फ़जूल बातोंमें अधिक रुपया उठ जाता है जैसे नाच, तमाशा, बाजा गाजा, आतशबाजी, आरायश, नौबत, नक्कारा, चौथी, चाली, बहुत भारी जोड़े जड़ाऊ गहना सभी फजूल है अम्बिकादत्त की माता बोली तो सीधी यही एक बात क्यों नहीं कहती कि व्याही फजूल है सरस्वती हंसनेलगी और कहा व्याह तो फजूल नहीं है परंतु उसके ऊपरके सब सामान निरे ढकोसले हैं अम्बिकादत्त की माता भला रक्खो तो रक्खो तुम तो कपड़े गहने को भी वाहियात बतलाती हो सरस्वती निरे कपड़े और निरा गहना तो काम की चीज है परंतु भारी कपड़े और भारी जोड़े आपभी सोचियेकि किस काम आतेहैं मेरे जोड़े पड़े २ सड़ते हैं घरमें पहनने से कमबख़्त दिल कुढ़ताहै कभी कभाड़ शादी व्याहमें पहन गये या त्योहार को पहनलिया

बाकी बारह महीने गठरीमें बंधे रक्खे रहतेहैं उसपर यह बखेड़ाकि आय दिन धूपदेना और जो बेचनेजाओ तो माल का मोल नहीं मिलता मसाला गोटा किनारी के दाम तक नहीं खड़े होते यही हालजड़ाऊ गहनेका है पण्डित सुन्दर दास की बेटीका व्याह आपने सुनाहै मुझको तो ऐसे व्याह भातेहैं अम्बिकादत्त की माता बोली कौन पंडित सुन्दरदास सरस्वती, लड़कियों के मदर्से के अफ़सर अम्बिकादत्त की मा बोली वह तो शहरके रहने वाले नहीं सरस्वती, नहीं पटने के ओर के रहने वाले हैं स्त्री और बच्चों को अपने पास बुला लिया है मगनी इसी शहरमें की थी घरवाली चाहतीथी कि अपने देशजाकर अपनी बेटी का व्याह करें यहां से बरात जाय पंडितजीने स्त्रियोंको समझा बुझा यहीं करनेको राजी कर लिया एक दिन चार मेल मिलापवालों को बुला भेजा वो जो घरमें पहुंचे तो सुनाकि घरमें बेटीका व्याहहै थोड़ी देर के पीछे समधी पुरोहित नाई लड़के को साथलिये आ मौजूद हुये व्याह होगया व्याहके पीछे पण्डित सुन्दरदास ने हजार रुपये नक़द बेटी दामादके आगे लाकर रखदिये और कहा भाई मेरी कमाई में तुम्हारे भाग्य का इतनाही था जो मैं चाहताती इसमें बिरादरीकी और आस पड़ोसकी जिव-नार भी करदेता और संसार के व्योहारके अनुसार एक दो भारी जोड़े भी बना देता परंतु जो सोचा तो यही उचित दिखाई दियाकि नक़द तुमको देदूं अब तुमचाहो जिसप्रकार अपने काम में लावो अम्बिकादत्त की माता बोली कि हां परदेश में पण्डितजी ने जो मनभाया सो किया कहने सुनने वाला कौन था सरस्वती, क्यों कहने सुनने वाला घरवाली थी परदेश पर क्या है हिम्मत चाहिये करने वाला हो तो शहर में भी कर गुजरे कहने वालोंको बकनेदिया अपने काम से काम रक्खा अम्बिकादत्त की माता बोली क्या तुम ने यमुना का इस प्रकार ऊंघता उदास व्याह करना बिचारा है सर-स्वती, मैं तो लोगों के कहने सुनने की परवाह नहीं करती

मेरा बसचले तो यमुनाका ब्याह पण्डित सुन्दरदासकी बेटी
के अनुसार करूं उन्होंने तो दो चार महमान बुलाये थे
और मैं तो इसकी भी कुछ जरूरत नहीं जानती अम्बिका-
दत्त की माता बोली न बेटी परमेश्वरके लिये तो ऐसा अंधेर
मत करो इस बुढ़ौती में मेरी यही एक बच्ची ब्याहने को है
अब क्या मैं मरघट से किसी का व्याह करने फिर आऊंगी
सरस्वती, नहीं ऐसा तो मैं नहीं करूंगी परंतु यह बात मैंने
जीमें ठान रक्खी है कि न तो एक पैसा उधार लिया जाय और
न कोई जायदाद गिरों रक्खी जाय जो कुछ जोड़ा बटोड़ा
यमुना के नाम रक्खा है और जो कुछ उसके भागसे समयपर
मिलजाय वही बहुत है अम्बिकादत्त की माता ऐसा होतो
क्या बात है परंतु जब दूसरे तर्फवाले हामी भरें सरस्वती ने
कहा जो वह राजी हो जांय अम्बिकादत्त की माता बोली
उनका मान लेना क्या हंसी ठट्ठा है परमेश्वर रक्खे एक बेटा
नहीं मालूम क्या २ हौंसिले उनके मनोंमें हैं वह तो बराबर
के टक्कर को देखकर बातकरेंगे और सब अरमान निकालेंगे
सरस्वती ने कहा जबसे मैं दिल्लीसे आई हूं इसबातकी फि-
किरकर रहीहूं उधर सब बातचीत ठीकठाकहोगई है अभी
गुलाब कुंअरि महताब कुंअरि दोनों भागी हुई आई थीं
फूलकुंअरि और पण्डितअयोध्याप्रसाद ने मानलिया है अब
बिलंबनहींकरना चाहिये परसों अच्छा वारभीहै और अच्छी
सायत मुहूर्तभीहै इधरसे मिठाई भेजी जाय और बात पक्की
होजाय फिर व्याह देखा जायगा परमेश्वरदत्त की मा यह
बात सुनकर आश्चर्यमें रहगई और कहा बात तो अच्छी है
हमारी प्रतिष्ठासे कहीं अधिक हैं परन्तु उनके योग्य सामान
हमसे होना कठिन है सरस्वतीने कहा जब यमुना का भाग्य
ऐसे ऊंचे घरमें लड़ा है तो परमेश्वर समय पर सब सामग्रीभी
इकट्ठाकर देगा इतनेमें पण्डित शङ्करदत्त बाहर से आये सो
बहनी भगनी का हाल सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और कहा
बे सोचे साचे परसों मिठाई भेजदो अर्थात् बहुत अच्छी दो

मन मिठाई चालीस रुपये की थालियों में भरकर भेजदो सगनौका होनाथा पण्डित अयोध्याप्रसादने व्याहका सञ्जाना करना आरम्भ कर दिया और पण्डित शङ्करदत्त से कहला भेजा कि बहुत दिन से मेरी मनोकामना यह है कि तीर्थ यात्रा करूं और केवल इसी बातका इन्तिज़ारहै कि द्वारिका प्रसाद का जल्द व्याह होजाय क्योंकि जीवनेका भरोसानहीं पण्डित शङ्करदत्त ने सरस्वती से पूछा कि क्या जवाब कहला भेजें सरस्वतीने कहा इस समय यह कहला भेजना चाहिये कि हमभी इसी चिन्तामें हैं जहां तक होसका है यत्न करते हैं सामान जो देना मंजूर है इकट्ठा होजाय तो हमको भी यह काम कर देना है जितना बेग होजावे उतनाही उत्तम है पण्डित अयोध्याप्रसादने इसके उत्तर में यह कहला भेजा कि मैंने दान दहेज लेनेके लिये आपके यहां नातेदारी नहीं की मुझको केवल लड़की चाहिये इधर से जवाब गया बहुत अच्छा हमकोभी वैशाख में व्याह कर देना मंजूर है अर्थात् वैशाख सुदी तीन लग्न मुहूर्त व्याहका ठीक हुआ और दोनों ओरसे सामान होने लगा सामान का आरम्भ होना था कि पण्डित शङ्करदत्तको चिन्ता आई किसीसमय कहतेथे छदामी लालसे उधार लूं कभी सोचतेथे कि रुईका कटरा बेंचडालूं सरस्वतीने पण्डित शङ्करदत्त को दुचित्ता देखकर पूछा कि आपने खर्चका क्या यत्नकियाहै पण्डित शङ्करदत्तने कहा क्या बताऊं कि व्याह का दिन शिर पर चला आता है रुपये का यत्न कहींसे बन नहीं पड़ता छदामीलालसे मैंने उधार मांगा था वहभी टाल टल गया रुई कटरा बेंच डालनेको सोचा था कोई गाहक नहीं ठहरता सरस्वतीने कहा कभी आप व्योहरियाका नाम न लीजे और न रुई कटरा बेचियेगा उधार से कोई वस्तु बुरी नहीं है और जायदादका बेंचडालना कौन कठिनहै परन्तु उसका मिलना फिर बहुत दुर्लभ है पण्डित शङ्करदत्त ने कहा ऋण तो लूं नहीं और कोई वस्तु बेंचूं नहीं तो क्या मैं रसायन बनाना जानता हूं रुपया कहां से

आवे सरस्वती ने कहा पहिले घरका हिसाब देखिये कपड़े तो कुछ पहिले से तैयार हैं सिर्फ थोड़ा मसालालेनाहोगा सो मेरे जोड़े में कोई २ बहुत भारी हैं उनमें से कमकरके इतना मसाला निकल आवेगा कि यमुना के जोड़ोंमें पूरा होजाय बर्तन भांड़ा मौजूद है कोईमोललेनानहीं काठकवाड़ यह सब मैं अपना देदूंगी बे प्रयोजन पड़ा२ सत्यानाश होता है और रुपया आखिर आपके पासभी कुछ होगापण्डितशङ्कर दत्तने कहा मेरे पास तो पांच सौ रुपये हैं सरस्वतीने कहा बसबहुतहैं जब मैं दिल्ली जाने लगीथी तो पाठशालेकीरकममें चारसौ रुपयेथे वह अबतक रक्खेहैं मेरे पीछे दोसौ रुपये और हुयेआधा दीदीका हिस्साहै और आधा यमुनाका यहमिलकर पाठशालेकी रक्कम पांचसौ होजायगी यमुनाकेछोटेभाई को मैने चिट्ठी लिखीहै और तीनसौ रुपये मंगवाये हैं दोसौ रुपयेभाई जाननेभेजमेको लिखाहै इसप्रकार डेढ़हजारनक़द इससमय मौजूद है हजारके कड़े जो महतावकुंअरिके व्याहमें मुझको मिले थे मेरेकिस कामकेहैं मैंने चाहाथा कि यमुना को व्याहमें देदूं परन्तु फिर सोचा कि उसी घरके कड़े उसी घरमें जाने उचित नहीं मैं इनको बेंच डालूंगी जयजयवन्तीके वसीले से बाजार में भेजे थे कछूमल जौहरी तेरह सौ रुपये देताथा यमुनाके भाग्यसे शायदआगे अधिकका गांहक मिल जाय और एक यह मेरे मनमें बैठी है कि आप भाईजान के लानेको आगरा जाइये और रईससे उनका छुट्टी दिलाने में व्याहका जिकरकर दीजिये रईसबड़ा हौसलेवालाहै विश्वास होता है कि वहभी कुछ सहायता करे इसलिये कि सदा से हिंदुस्तानी सरकारों की यह रीति है कि शादी व्याहमें अपने पुराने सेवकों के सहायक होते हैं सरस्वती की सलाह से पण्डित शंकरदत्त आगरा गयेतो रईसने पूछा कि पण्डित जी किस कारण आये पण्डित जीने कहा कि मेरी लड़कीका व्याह है बस इस हेतु आया हूं कि आप परमेश्वरीदत्त को एक महीने की छुट्टी देव आप ... नहीं कर सका

कि हजूर के कुनबेसे कोई शरीक होवे परंतु दीवान साहब जो इन दिनों लखनऊमें हैं सरकार की तर्फसे शादीमें तशरीफ लावेंतो बराबर वालोंमें बड़ी इज्जत बढ़ेगी रईसने परमेश्वरीदत्तको छुट्टी मंजूरकी और पण्डित शंकरदत्तके आने जानेका खर्च दिया और दीवान जीको हुक्म भेज दिया कि हमारे तर्फ से पण्डित जीके यहां जाना और पांचसौ रुपये न्योता देना सरस्वतीके सलाहसे यह पांच सौ बे बैठे बैठाये मुफ्त आगये उधर जड़ाऊ कड़े जयजयवन्तीके मारफ़त मजिलका जहां के पास पहुंचे तो वह देखकर लोट पोट होगई और आंख बन्द करके दो तोड़ हवाले कर दिये अबतो रुपये की चारों ओर से रेल पेल होगई सरस्वती के अच्छे बन्दोबस्त से बहुत अच्छे जोड़े तैयार हुये और जो गहना बना वह दोहरा तेहरा बना पण्डित शंकरदत्तके तो कई पुस्तोंमें ऐसा ब्याह नहीं हुआ था समधियाने वाले भी यह सामान देखकर दंग होगये गहने जो २ दिये गये ब्योरा उसका संक्षेप से यह है नाक में नथ और कील माथे में टीका कानमें पत्ते जड़ाऊ और सादे छपके की बालियां, मगर, मुरकियां, बिजुलियां, करनफूल, झुमके, गलेमें चम्पाकली, तुलशी, तोड़ा, धुकधुकी, चन्दनहार, कण्ठमाला, पचलड़ी, भुजापर जोशन नोरत्न, भुजबन्द, नौनगे, हाथों में कड़े नौगरही, चुहोदंतियां, पहुंचियां, जहांगीरियां, अंगुलियों में अंगूठी छल्ले आरसी पांवमें पायजेब कड़े कारचोबी जालदार मसालेदार मिलाकर बहुत से जोड़े और सौसे अधिक बर्तन और उपरी सामान भी बहुत अच्छा इसी प्रकार का दिया अर्थात् बड़े धूम धाम से यमुनाका ब्याह हुआ यमुना सुखपाल परबिदा हुई पण्डित अयोध्या प्रसाद ब्याह हुए पीछे थोड़े दिनों तक बहू का रंग ढंग देखते थे यहां क्या देखना था यमुना तो सरस्वती के खराद परचढ़ चुकीथी किसी प्रकार कोर कसर इसमें नहीं रही थी पण्डितजी ने जितना बहू को परखा गुणी चतुर पाया पण्डितजीको अबपक्का बिश्वास हुआ कि यमुना

सब विधि घरको सम्हाल लेगी तो पण्डित अयोध्या प्रसाद ने तीर्थ यात्रा का सामान शुरूअ कर दिया नक़्द रुपिया तो आप अपने साथ लिया मकानात, दुकानात, गंज गांव गिरावं, सब बेटे के नाम लिख दिये और आप स्त्री सहित तीर्थ यात्रा को निकल खड़े हुये यमुनाका यद्यपि ब्याह होचुका था परंतु यमुना सरस्वती का पहले से भी अधिक लिहाज करती थी ज़रा २ सी बात में सरस्वती से सलाह लेती अब सरस्वती को अपने बुद्धिके प्रकाश का अच्छा समय मिला बड़ा कारखाना बड़े कार्य वो बन्दोबस्त किये कि द्वारिका प्रसाद को परमेश्वर झूठन बुलवाये समयका राजा महाराजा बना दिया अभी तक तो सरस्वती ग़रीबीकी दशामें थी नंगी क्या नहाये क्या निचोड़ परंतु अब परमेश्वर रक्खे दौलतधन सम्पदा उसके नंदको मिली तो फिर उसके बन्दोबस्त करनेका मनमाना समय सरस्वतीको मिलगया ऐसे समयमें जो२ काम सरस्वती ने किये वह प्रलय कालतक लोगोंकी ज़बानपर रहेंगे मगर अफसोस है कि उसके लिखनेका सावकाश नहीं रहा जोनसीहत मानने वाला हो और बातका सुनने समझने वाला हो तो जितना लिखजा चुका है वहभी कुछकम नहीं अनेक प्रकार की बात और अनेकप्रकारकी शिक्षा इसमें मौजूद कहने को तो कहानी क़िस्सा है परंतु हक़ीक़त में नसीहत व हिदायत है अबइस पुस्तकके समाप्तकरनेके पहिले एकबात यह लिखनी अवश्य है कि सरस्वती बहुतसी छोटी अवस्थामें पुत्रवती होगई थी सो सरस्वतीके सन्तानोंका चर्चा इस पुस्तक में नहीं हुआ अब उसका जिकर किया जाता है सरस्वतीके लड़केतो बहुत हुये परमेश्वर की माया से जीते कम रहे एक लड़का महेश दत्त आखिर में जीता रहा कई लड़कों के ऊपर यह लड़का हुआ था इस लड़के के उत्पन्नसे पहिले एक बेटा मंगलप्रसाद और एक बेटी मैना मरचुकी थी बच्चोंके पालनेमें एहतियात बहुतेरी होती थी सर्दी गर्मी का बचाव खाने तक के समय मुक़र्रर थे और बंधा हुआ अन्दाज़ और ख़बरदारी ऐसी

भारी कि खुराबचीज़ कहीं मुंहमें न डालने पावें जब दांत निकले मसूढ़ा में नश्तर दिया गया कि ऐसा नहो कि दांतों के क्लेशको अज्ञान सम्हाल सकें जब बालक चार वर्षका हुआ तुरंत चेचक के बचावके लिये टीका लगवादिया ग़रज़ जहां तक मनुष्य की बुद्धि काम करतीहै सब प्रकार का बन्दोबस्त किया जाता था परंतु तक़दीर के आगे तदबीर नहीं चलती मंगलप्रसाद चार बर्ष का होकर मरा पेचिश हुई दस्त बन्द करने की दवा दी बुखार आने लगा सरसाम होगया पला पलाया बालक हाथसे जाता रहा यह दाग़ मिटा न था कि मैना सात बर्षकी होकर बीमार पड़ी और कुछ ऐसे बला के दस्त छूटे कि प्राण लेकर बन्दहुए दुनियां जहान की दवायें हुईं परन्तु मौत कब दवा को मानतीहै मैनाके मरनेका सरस्वती को बहुत बड़ा दुःखहुआ पहिलेतो लड़की दूसरे कुछ सरने वाली थीं अपनी माता पर ऐसी मोहित थी कि एक चण मात्र अलग न होती साथ सोना संग उठना माता की दवातकहो तो अवश्य चीखलेना और छोटीसी उमरमें बस पढ़ने में ध्यान जब मंगलप्रसाद मराथा तो स्त्रियोंने सरस्वती के ईमान में खलल डालना चाहा था कोई कहती कोख का खलल है प्रदुमनमिश्र का इलाजकरो कोई कहती दूध पर नज़र है चौराहे में उतारा रखवाओ कोई कहती घर अच्छा नहीं लच्छन ओझासे लिखवाओ कोई कहतीसफरमें आई गई होकोई चुड़यल लपटगईहै किछौछे चलोगंडे तावीज़ अमल मंत्र टोने टटके सारे दुनियां जहांन के लोग बतलातेथे परंतु वाहरी सरस्वती यों ऊपर तले दो बच्चे मरे लेकिन सदा परमेश्वर पर भरोसा रखती थी किसी ने कुछ कहा भी तो यही उत्तरदियाकि जब परमेश्वर की इच्छाहोगी तो यों भी वह अपनी कृपा करसक्ता है मैनाके मरनेकी खबर जबदेवीदत्तको कांगड़ेमें पहुंचीतो बहुत घबड़ाये और उस घबड़ाहट की दशामें बेटीके नाम उन्होंने यह चिट्ठी लिखी ॥

स्वस्तिश्री चिरंजीविनी सरस्वती को देवीदत्त का आशीष

प्राप्त होवै इससमय मुझको लखनऊ की चिट्ठीसे मैनाकेमरने का हाल मालूमहुआ मैं इसबातसे इन्कार नहीं करता कि मुझको क्षोभ नहीं हुआ परंतु मेरी बुद्धि ऐसी बेठिकाने नहीं हुई कि ना समझपुरुषों के प्रकार में सन्तोष न करसका मुझको तुम्हारा बड़ा शोच है तुमपर यह दुख बड़ा भारी हुआ होगा परंतु हरएक समयमें मनुष्यको बुद्धि से सम्मति लेना चाहिये बुद्धि हमलोगोंको इसीहेतु परमेश्वर ने दीहै कि दुख में हमअपनी बुद्धिसे सहायता लेवें मनुष्योंको संसारकी दशा पर विचार करना अवश्यहै और यहशोचप्रयोजन से खालीन नहीं है पृथ्वी आकाश पहाड़ बन नदी मनुष्य पशु पक्षी वृक्ष अनेकप्रकार की वस्तु संसार में हैं और इस संसार का बड़ा भारी फैलाव है दिनमें एक समय पर सूर्यका निकलना रात्रि का होना चन्द्रमा और तारागणोंका चमकना कभी सर्दी कभी गर्मी कभी बसंत और जल के प्रभाव से भांति २ के फलफूलका उत्पन्न होना यहसब बातें विचार करने वाले को वर्षों तक शोचने को बहुत हैं आप मनुष्य को अपनी दशा शोच विचार करने को क्या कमहै किसप्रकार मनुष्य उत्पन्न होता है और किस भांति पलता और सयाना होता है और क्योंकर बालापन और युवा और वृद्ध का समय इस पर व्यतीत होताहै और किसप्रकार अन्तमें संसारको त्याग करता है यह बड़ी उत्तम और कठिन बात विचार करने योग्यहै यह सब कारखाना किसी हेतुसे परमेश्वरने जारीकर रक्खा है और जब तक वह चाहेगा यह रचना इसीप्रकार रचा रहेगा संसारके खाने शुमारीसे प्रगट होता है कि एक घंटेमें साढ़े तीन हजार मनुष्य संसार में मरते हैं यानें एक पलमें एकआदमी और इतनेही उत्पन्नभीहोतेहोंगेअबहिसाब करो कि एक महीनेमें केलाख मनुष्य मरते और पैदा होते हैं और शोचो कि लाखों वर्षसे यही तार चला आताहै पस अनगिन्त आदमी अबतक संसारमें मरचुकेहैं मौत एक सामनी और जरूरी बात है बड़े २ बलवान राजा महाराजा

और बड़े ऋषि मुनि तपस्वी योगी पण्डित आचार्य्य वैद्य जो कि संसारमें मुर्दौंको जिला सक्तेथे आप कालके चबेना होगये संसारमें जो पैदा हुआहै यह परमेश्वर की आज्ञाहै कि वह एकदिन मरे फिर जो यह आज्ञा किसी दिन हमपर या हमारे किसी सम्बन्धी या नातेदार पर जारी की जाय तो हमको कोई कारण दुख माननेका नहींहै यहबात खूबसोच करनेके योग्यहै और जब तुमको मृत्युका भेद प्रकट होजावेगा तो मुझको भरोसा है कि तुमभी मेरे प्रकार समझोगी कि किसीके मरनेपर शोक करना व्यर्थहै किसीके मौतपर दुखित होना दिलके लगाओ परहै जो हम सुनें कि ब्रह्मा का बादशाह मरगया हमपर उसका कुछ खेद नहीं होगा इसलिये कि हमको उससे कुछ प्रयोजन न था बल्कि महल्ला और पड़ोस में जो कोई ग़ैर आदमी मरजाय जिस्से किसीतरह का वास्ता न हो तो हमको बहुत कम दुःखहोताहै फिर हमको जो यहसोचखुसके मरनेका होताहै जिससे हमकोतअ़ल्लुक़ है और जितना तअ़ल्लुक़है भारीहै उसी क़दर रंजभी भारीहै नानी के भतीजी के पोतेबहू पर निवासे के बेटे की जोरू जो मरे तो क्या दूरका वास्ता दूर के सम्बन्ध रिश्तेनाते पर कुछ नहीं बल्कि मेल मिलापमेंभी दुःख होताहै अब सोचना चाहिये कि संसार में हमको किससे अधिक तअ़ल्लुक़ है इसके वास्ते कोई दस्तूर मुक़र्रर नहीं है नज़दीक का रिश्ता हो और सदा लड़ाइयां और सदा बिगाड़ रहाहो तो ऐसे रिश्तेदार ग़ैर समझे जातेहैं या अपना गोत नहीं और सम्बन्धनहीं परन्तु प्रीति मेल मिलापहै तो उनके मरनेसे बहुत दुःख होता है और हर एक शख़्स अपने हालत के मुवाफ़िक तअ़ल्लुक़ रखता है यह संसार के बन्धन सब प्रयोजन अर्थ होतेहैं जो अपना सम्बन्धी हमारे फायदे में बिघ्न डाले अवश्य कि वह हमसे छूटजाय जो ग़ैर आदमी हमारे काम आवे अवश्यहै वह मिस्ल अपनोंके प्याराहो परन्तु वह अर्थ जिस्से तअ़ल्लुक़ प्रगट होताहै ज़रूर नहीं कि रुपये पैसेका हो यद्यपि बहुधा

ऐसे प्रकार का होता है परन्तु कभी उम्मेद से भी तअ़ल्लुक़ पैदा होता है बहुत लोग हमारे मित्र हैं जो हमको कुछ देते नहीं परन्तु यह आसरा है जो हमको कभी किसी प्रकार की ज़रूरत होगी तो यह काम आनेवाले हैं तअ़ल्लुक़ के पैदा होने के कई कारण होते हैं मैं इस बात को अब बहुत नहीं बढ़ाता प्रयोजन मेरा इस चिट्ठी में संतान के तअ़ल्लुक़ के लिखने से है यह तअ़ल्लुक़ जो संतान से है सर्वत्र है कोई मा बाप बल्कि कोई पशु पक्षी तक इससे निवृत्त नहीं है इससे मालूम होता है कि केवल अर्थ औ प्रयोजन पर इसकी बुनियाद नहीं है बल्कि परमेश्वर चाहता है कि माता पिता को अपने संतान की प्रीति हो क्योंकि संतान थोड़े दिनों तक मुहताज पालने की होती है इसलिये यह प्रीति माता पिता को परमेश्वर ने लगा दी है कि इस प्रीति के लगाव से मा बाप बच्चों को पालें और बड़ा करें यहां तक कि वह बड़े होकर आप संसार में रहने सहने लगें यह सन्तान का पाल देना इतना तअ़ल्लुक़ तो परमेश्वर के तर्फ़ से माता पिता को दिया गया अब रहे यह बखेड़े कि अब संतान की तमन्ना है नहीं है तो दवा है इलाज है मंत्र तअवीज़ गंडा है संतान हुई तो यह चिन्ता है कि बेटे हों बेटियां नहों या जो हों जीते रहें यह खुद मनुष्यों की अपने हवस की बातें हैं रही यह बात कि सन्तान की आस जो मनुष्य ने परमेश्वर की इच्छा से अधिक अपने मन में प्रगट की निस्संदेह अपने अर्थ और प्रयोजन के हेतु होती है अर्थ भी कई प्रकार के हैं बाज़ मनुष्य यह समझते हैं कि संतान से नाम चल[illegible] है बहुतेरे जानते हैं कि बुढ़ापे में हमारी सेवा करेंगे ब[illegible]ों को यह ध्यान होता है कि हमारी सम्पत्ति धन को [illegible]ारे पीछे लेंगे अब इन खयालों पर शोच करो कि [illegible]नो वाहियात और झूठे हैं नाम चलता क्या मानो कि [illegible] यह जानें कि फलाने के बेटे और फलाने के पोते हैं प[illegible] तो हम जब आप संसार में न रहे तो जो किसीने हम[illegible] जाना तो क्या और न जाना तो क्या अब विचार करो [illegible] नाम कहां तक चलता है किसी

और बड़े ऋषि मुनि तपस्वी योगी पण्डित आचार्य्य वैद्य जो कि संसारमें मुर्दोंको जिला सक्तेथे आप कालके चबेना हो-गये संसारमें जो पैदा हुआहै यह परमेश्वरकी आज्ञाहै कि वह एकदिन मरे फिर जो यह आज्ञा किसी दिन हमपर या हमारे किसी सम्बन्धी या नातेदार पर जारी की जाय तो हमको कोई कारण दुख माननेका नहींहै यहबात खूबसोच करनेके योग्यहै और जब तुमको मृत्युका भेद प्रकट होजावेगा तो मुझको भरोसा है कि तुमभी मेरे प्रकार समझोगी कि किसीके मरनेपर शोक करना व्यर्थहै किसीके मौतपर दुखित होना दिलके लगाओ परहै जो हम सुनें कि ब्रह्मा का बाद-शाह मरगया हमपर उसका कुछ खेद नहीं होगा इसलिये कि हमको उससे कुछ प्रयोजन न था बल्कि महल्ला और प-ड़ोस में जो कोई ग़ैर आदमी मरजाय जिस्से किसीतरह का वास्ता न हो तो हमको बहुत कम दुःखहोताहै फिर हमको जो यहसीयखुसके मरनेका होताहै जिससे हमकोतअल्लुक़है और जितना तअल्लुक़है भारीहै उसी क़दर रंजभी भारीहै नानी के भतीजी के पोतेबहू पर खिवासे के बेटे की जोरू जो मरे तो क्या हरका वास्ता दर के सम्बन्ध रिश्तेनाते पर कुछ नहीं बल्कि मेल मिलापमें भी दुःख होताहै अब शोचना चा-हिये कि संसार में हमको किससे अधिक तअल्लुक़ है इसके वास्ते कोई दस्तूर मुक़र्रर नहीं है नज़दीकी का रिश्ता हो और सदा लड़ाइयां और सदा बिगाड़ रहाहो तो ऐसे रिश्ते दार ग़ैरसमझे नातेहैं या अपना गोत नहीं और सम्बन्धनहीं परन्तु प्रीति मेल मिलापहै तो उनके मरनेसे बहुत दुःख होता है और हर एक शख्स अपने हालत के मुवाफ़िक तअल्लुक़ रखता है यह संसार के बन्धन सब प्रयोजन अर्थ होतेहैं जो अपना सम्बन्धी हमारे फायदे में विघ्न डाले अवश्य कि वह हमसे छूटजाय जो ग़ैर आदमी हमारे काम आवे अवश्यहै वह मिस्ल अपनोंके प्याराहो परन्तु वह अर्थ जिस्से तअल्लुक़ प्रगट होताहै ज़रूर नहीं कि रुपये पैसेका हो यद्यपि बहुधा

ऐसे प्रकार का होता है परन्तु कभी उम्मेद सेभी तअल्लुक़ पैदा होताहै बहुत लोग हमारे मित्रहैं जो हमको कुछ देते नहीं परन्तु यह आसराहै जो हमको कभी किसीप्रकारकी ज़रूरत होगी तो यहकाम आनेवालेहैं तअल्लुक़के पैदाहोने के कई कारण होतेहैं मैं इसबातको अब बहुत नहीं बढ़ाता प्रयोजन मेरा इस चिट्ठीमें संतान के तअल्लुक़ के लिखने सेहै यह तअल्लुक़ जो संतान से है सर्बच है कोई मा बाप बल्कि कोई पशु पक्षी तक इससे निवृत्त नहींहै इससे मालूम होता है कि केवल अर्थ औ प्रयोजन पर इसकी बुनियाद नहीं है बल्कि परमेश्वर चाहताहै कि माता पिताको अपने संतानकी प्रीतिहो क्योंकि संतान थोड़े दिनों तक मुहताज पालने की होतीहै इसलिये यह प्रीति माता पिता को परमेश्वरने लगा दीहै कि इस प्रीति के लगाव से मा बाप बच्चों को पालें और बड़ा करें यहां तक कि वह बड़े होकर आप संसारमें रहने समझनेलगें यह सन्तानका पालदेना इतना तअल्लुक़तो परमेश्वरकी तर्फ़से माता पिताको दियागया अबरहे यहबखेड़े कि अब संतानकीतमन्नाहै नहींहै तो दवा है इलाजहैमंत्र तअवीज गंडाहैसंतानहुई तो यह चिन्ताहै किबेटे हों बेटियां नहोंया जोहों जीते रहैं यह खुद मनुष्यों की अपने हवसकीबातेंहैं नहीं यह बात कि सन्तानके आस जो मनुष्यने परमेश्वर की इच्छासे अधिक अपने मनमें प्रगटकी निस्सन्देह अपने अर्थ और प्रयोजनके हेतु होती है अर्थभी कई प्रकारके हैं बाज़ मनुष्य यह समझतेहैं कि संतानसे नाम चलता है बहुतेरे जानतेहैं कि बुढ़ापेमें हमारी सेवा करेंगे बहुतोंको यह ध्यान होता है कि हमारी सम्पत्ति धनको हमारे पीछे लेंगे अब इन खयालों पर सोच करो कि कि तने वाहियात और झूठे हैं नाम चलता क्या मानी कि ल[illegible] यह जानें कि फलानेके बेटे और फलाने के पोते हैं पर तो हम जबआप संसार में न रहे तो जो किसीने हम जाना तो क्या और न जाना तो क्या अब विचारकरके [illegible] नाम कहां तक चलता है किसी

मनुष्यसे उसके बाप दादोंके नाम पूछो तो कदाचित् परदादे तक सब कोई बता सकेगा इसके ऊपर संतान को नहीं मालूम होगा कि हमारे सगरदादा कौन थे दूसरे मनुष्यों को उनके मुरदों की हड्डियाँ उखाड़नेकी क्या जरूरत है फिर जो नामभी चला तो दोतीन पीढ़ीतक आगे कुशल क्षेम और दो तीन पुश्त तक नाम चलनाभी एक खयाली बातहै दश बर्षसे मैं इस जिले में हूं हजारों आदमी मुझको जानते हैं और हजारोंको मैं जानता हूं परन्तु न मैं उनके बापको जानता हूं और न वह मेरे बापको जानतेहैं दूसरा कारण संतानकी अभिलाषा का यहहै कि बुढ़ापे में सेवा करें यह ध्यान कितना वाहियातहै यह क्योंकर निश्चय है कि उनके बड़े होने तक हम जीते रहेंगे और मानों कि हम जीतेभी रहे तो उनके निस्बत यह ध्यान करना कि बुढ़ापे में हमारी सेवा करेंगे एक मन समझौता है इस कलियुगमें हम ऐसी संतान बहुत कम पाते हैं जिनको माता पिता का अदब और सेवा करनेका ध्यान होता है अदब और सेवा को तो अलग रहने दो इनदिनों तो बहुधा संतान से माता पिता को दुःख क्लेश पहुंचताहै जिस संतान की मनुष्य अभिलाषा करते हैं अन्त तक उनके हाथोंसे दुःख पातेहैं जब तक छोटे हैं पालना एक मुसीबत आज आंखें दुखतीहैं कभी पसुलीका दुःख कभी दस्त जारी कभी दांत निकलतेहैं कभी चेचक निकलीहै परमेश्वर २ करके बड़े हुये तो उनके खाने कपड़े का शोच आदमी नहीं मालूम किस हालमें है नौकर है या नहीं पैसा पासहै या नहीं इनको कहांसे लाके देना जरूर मातापिताको उपास हो तो हो इनको कुछ न हो तो दमड़ी छदाम रोजके चने चाहियें अब माबाप चाहते हैं कि लड़का काम सीखे पढ़े लिखे और पूत कपूतहै कि पढ़ने के नामसे कोसों भागता है जब तक मदर्से के चार लड़के टांग पकड़ के घसीट न लेजांय जाना सौगन्धहै और वहां गये तो मास्टरकी आंख बची कहीं चौराहे का निकला कहीं सड़क पर गोड़ियां खेलते हैं

कहीं बाजारोंमें खाक छानते फिरतेहैं और तनिक बड़े हुये माता पिताको जवाबदेनेलगे लुच्चोंकी संगति और बदमासों का साथ न नाचसे परहेज न बुरी सुहबत से बचाव पुरुषों के नाम बदनाम करते फिरते हैं इसीप्रकार बहुधा लड़के चोर जु-आरी ऐयाश औबाश गंजेड़ी भंगेड़ीहोजाते हैं अब संतानब्या-हनेयोग्य हुई सारा शहर छान मारा कहीं ढबकी बात नहीं मिलती मेल मिलापवाले हारकर बैठरहे कुनबेके लोग एक २ से कह चुके कोई हामी नहीं भरता एक दुरदशा में प्राण हैं माता बिचारी मंदिरों में मानता मांगती फिरती है नजूमी जोतिषी से जन्म पत्रदिखाती है और हरवक्त परमेश्वरसे यह मांगती है कि ग़ैब से किसी को भेज परमेश्वर २ करके कहीं बातचीत ठहरी तो माता बिचारीके पास चांदी तककातार नहीं समधियाने वाले सोने चांदी का गहना मांगते हैं कोई बिधि घरको उजाड़ पजाड़ बेंचबांचकर ब्याह किया चिड़िया की जान गई खाने वालों को स्वाद नहीं मिला दहेज है कि फेंका २ फिरताहै समधिन कहतीहै क्या दिया ऐसे न होतमें बेटी जननी क्या जरूर थी कोई वस्तु आंख तले नहीं आती बात २ में ताना तिशना है दामाद जो आवे उनके मिजाज नहीं मिलते ब्याहको चार दिननहीं हुये कि जोड़ू खसम में जूती पैजार होनेलगी बेटीकी बेटी दी और लड़ाई कीलड़ाई मोललगी फिर यह नहीं कि यह लड़ाई एक दिनहै बल्किजन्म भरकी मुसीबतका चर्खाचला बेटीके संतानहोने का लग्गा लगा माता बे दामोंकी चेरी बे दर्माहे की दाई बनगई जन्म भर अपने लड़कों के पालने के दुख सहती रही अब परमेश्वर परमेश्वर करके दो वर्ष से आराम मिला था कि बेटे के चेंगे पोटे सम्हालने पड़े जो बहूआई तो झगड़े की गांठ लड़ाईकी पोट सासकोतो जूतीके समाननहीं समझती नन्दोंकानथुनों में प्राणकर रक्खाहै न जेठसे शर्म न ससुरेकी लाज स्त्रीहैकि पुरुषों की पगड़ी उतारे लेतीहै परमेश्वर पनाहमें रक्खे बेटे नालायक को देखिये कि बीबीने तो यह उधम जोतरक्खीहै

यह भड़ुआ बीबीके पक्षपरहै उलटा माता पिताले लड़ता है यहां तक कि माता पिता घर छोड़कर अलग भारेके मकान में जा रहे यह फल इस समयके संतानसे माता पिताको मिलता है बहुत थोड़े हैं वह मनुष्य जो सन्तान से सुखपाते हैं फिर हमलोग अपनी अज्ञानतासे सन्तानकी अभिलाषकरते हैं गोया हम लोग दुखकी कांक्षाकरके बुलाते हैं अवरहा यह हाल कि माल और सम्पत्ति का कोई वारिस हो इसकारण से पुत्रकी लालसा की जाय यह ध्यान कितना पूचहै क्योंकि जब आदमी आप संसारसे उठगया तो उसके धन दौलतको जो उनकेबेटोंने लियातो क्या अथवा माल लावारिसहोकर सरकारमें गयातो क्या यह दौलत सम्पत्ति परलोक में कुछ काम न आवैगी परंतु उतनीही काम आयेगी कि जितनी परमेश्वरके राहमें हम आप खर्चकर जांय या हमारे पीछे हमारे नामसे परमेश्वर के राहमें खर्च हो जब हमने धनदौलतको आप खर्च नहीं किया और ऐसाबड़ा गो काम सन्तान के जिम्मे छोड़गये तो हम से अधिक कोई निर्बुद्धि नहीं है जो सन्तान माता पिताके जमाकी हुई संपति संत मेंत पा जाते हैं उनके खर्च करनेमें उनको सोच नहीं होता मनुष्य उसी धनका आदर करताहै जिसको वह खुद अपनी मेहनत और बलसे पैदाकरता है पस माता पिता तो सन्तान के लिये संपति छोड़गयेऔर उसने नाच रंगमें उड़ानी शुरूअ करदी और इतनाभी नहीं होताकि पिताके नाम एकसीधा भी किसी साधू या किसी अतिथि कोदे क्या ऐसे सैकड़ों हजारों कहानी संसार में नहीं हैं कि लोग जन्मभर इकट्ठा करते२मरगये सन्तानने दौलत पातेही वह गुलछर्रे उड़ाये कि थोड़े दिनोंमें बापकी जमाकी हुई दौलत उठाकरबैठरहे इस बातसे तुमको प्रकटहोगा कि जितना अधिक बंधन अपने मनसे तुमने सन्तान में बढ़ा लियाहै वह हमारे हक़में बहुत लोभ देने वालाहै हमको सन्तानसे इतने बंधन रखनेकी आशाहै कि जब तक वहहमारी सहायताके मुहताज रहें हम

उनकी पालनाकरें और इस पालनमेंभी इस बातकी तमन्ना अपने मनमें न आने दें कि सन्तान बड़ी होकर इस पालनके बदलेमें कभीहमारी सेवा करेगी यह अभिलाष प्रगटकरना बड़ी ना समझी की बात है बल्कि यह समझना चाहिये कि परमेश्वरने जो हमारा मालिकहै उनकी पालनेकी सेवा हम से तअल्लुक़की है हम संतानको पालतेहैं परमेश्वरकी आज्ञा की तामीलकरतेहैं यह फुलवाड़ी परमेश्वर की है और हम उसकी ओरसे इसफुलवाड़ीके माली हैं जो फुलवाड़ीका मालिक किसी दृक्षको क़लम कराने अथवा काटडालनेकी आज्ञा दे माली यह कब कहसक्ता है कि मैंने इस दृक्षको बड़े यत्न और क्लेशसे पालाहै यह क्योंकाटा और क़लमकिया जाता है संसार के सब बन्धन केवल इतने लिये हैं कि आदमी एक दूसरे को लाभ पहुंचावे हम थोड़े दिनों के लिये संसार में भेजे गये हैं और यहां हमको किसी का पिता किसी का पुत्र बनादिया है इसलिये कि वह लोग हमारी और हम उन लोगों की सहायता करें और मेल मिलाप से अपने जीवन के दिन पूरे करजांय संसार हमारा घर नहीं है हमको ऐसी जगह भी जाना होगा कि जहां न कोई हमारा है न हम किसी के हैं जो हम किसी के पिता हैं तो केवल थोड़े दिनके लिये और जो किसी के बेटे हैं तो भी थोड़े दिनों के लिये फिर हम किसी को मरता देखें तो दुःख क्लेश उठानेकी क्या बात है क्लेश तो तब हम करें जब हम यहां बैठरहैं हमको खुद भी तो जाना है नहीं मालूम किस घड़ी बुलावा हुआ और चलना ठहर जाय फिर सब से कठिन यह है कि मरना केवल यही नहीं है कि शरीर से प्राण निकल गया बल्कि वहां जाकर बात २ का लेखा देना होगा ज़बान झूठ और गाली और बेहूदह बकवाद की जवाबदिही करेगी आंख नज़र लड़ाने की सज़ा पायेगी कानको किसी की बदी और बुरी बातों के सुनने की सज़ा दीजायगी हाथसे किसी पर ज़ादती की है या पराया माल चुराया है काटा जायगा

पांव जो बेराह चले हैं शिकंजे में कसे जायंगे बड़ा टेढ़ा समय होगा परमेश्वर अपनी दया से बेड़ापार करे तो हो सक्ता है जिनको इनबातों से निश्चिन्ताई हो वह किसी के मरने पर ग़म करें या किसी के पैदा होने से आनंद करें तो हो होसक्ता है परन्तु संसारी मनुष्यों में कोई ऐसा भी मनुष्य है जो अपने परलोक से निश्चिन्त होचुका हो सरस्वती अपनी सुधि लो और परलोक के हेतु सामान करो कि जहां सिवाय अमल के कुछ काम न आयेगा और परमेश्वर से विनती करो कि वह हम सबका अंजाम बख़ैर करे॥

इति स्त्री दर्पण समाप्तः॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
रामायण नानार्थ नौ स-	भगवद्गीता विष्णु सहस्रना-	भाषा महाभारत विजय
ङ्ग्रहावली	म सहित	मुक्तावली
दूसरी पुस्तक रामायण माला	भरतरी गीत	शृंगार प्रकाश
तीसरी रामायण गीताष्टक	देवी भागवत नागरी	दोहावली रत्नावली
चौथी ज्ञान दोहावली	कल्प सूत्र	समर बिहार बिन्द्राबन
पांचवीं रस सारिणी	बिहारी सतसई सटीक	रमल सार
छठी तिथि बोध	विश्राम सागर	कथा चित्र गुप्त
सातवीं पुस्तक मातृदत्त कृत	राम लगन	कायस्थ दर्पण
सत्य नारायण की कथा स०	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कृष्ण बाल लीला
शनिश्चर की कथा	वैष्णवी संध्या	गीत गोविन्द सटीक
राम कलेवा	याज्ञवल्क्य भाषा टीका स०	रामाभिषेक नाटक
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	इन्द्र सभा नागरी
कवि कुल कल्पतरु भाषा	आनन्दामृत वर्षिणी	सिंहासन बत्तीसी
प्रेम रत्न	निर्णय सिन्धु	शुक बहत्तरी
बन यात्रा	ज्ञान माला	अपूर्व कथा अर्थात् गुल-
भजनावली	दैवज्ञाभरण	बकावली
बारह मासा फ़क़ीर अल्ला	ज्ञान चालीसी	गुलसनोबर नागरी
बरवा	शाङ्कर दिग्विजय भाषा	चित्र चन्द्रिका
बारह मासा बलदेव प्रसा-	योग वाशिष्ठ देवनागरी में	छन्दोर्णव पिङ्गल
द कृत	मार्कण्डेय पुराण	हिदायत नामा माल गुज़ारी
कृष्ण सागर	बैताल पच्चीसी	हिदायत नाम बन्दोबस्त
हारीत स्मृति नागरी	दान लीला नाग लीला	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
भगवद्गीता सटीक नागरी	सभा विलास	बाल बोध
रामायण राम विलास	विक्रम विलास	क़ानून ॥
यमुना लहरी	इन्द्रजाल नागरी	ताज़ीरात हिन्द अर्थात्
षट् पञ्चाशिका	कायस्थ कुल भास्कर	ऐक्ट ४५ सन् १८५६ ई०
कल्प सूत्र भाषा	क़िस्सह गोपी चन्द भरतरी	ऐक्ट २५ सन् १८६६ ई०
विनय पत्रिका सटीक	बहार बिन्द्राबन	ज़ाबिते फ़ौजदारी
किताब पटवारी ४ भाग	पद्मावती खण्ड आल्ह खंड	मजमूआ ऐक्ट लगान अ-
रस राज	लावनी व शेर बनारसी	वध जिसके साथ नीचे लि-
कृष्ण प्रिया	युगल विलास	खे हुए ऐक्ट संयुक्त हैं॥ ॥
ज्ञान स्वरोदय	जनक पच्चीसी	ऐक्ट १४ सन् १८६५ ई०

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ऐक्ट १० सन् १८७७ ई०	भाषा चन्द्रोदय	आरण्य काण्ड
जदीद	इंग्लिस्तान का इतिहास	किष्किन्धा काण्ड
ऐक्ट १६ सन् १८६१ ई०	गणित लता १ भाग	सुन्दर काण्ड
ऐक्ट नं० २६ सन् १८६६ ई०	तथा २	लंका काण्ड
ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	तथा ३	उत्तर काण्ड
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	गणित प्रकाश १ भाग	अक्षरारम्भ
ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०	तथा २	भाषा तत्त्व दीपिका
ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०	तथा ३	बाला भूषण
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	तथा ४	हिदायत नामा मुदर्रिसा-
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	शिशु बोध	न् हल्क़ह बन्दी
ऐक्ट नं० १९ सन् १८६९ ई०	पशुचिकित्सा	शिक्षावली
क़वायद रेलवे और उस	क्षेत्र चन्द्रिका १ भाग	भोज प्रबन्ध सार
के साथ क़ानून भी हैं ॥	तथा २	राजनीति
ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०	रेखा गणित १ भाग	स्त्रियों की हित पत्रिका
ऐक्ट १९ सन् १८७३ ई०	तथा २	अवध भूगोल
अर्थात् क़ानून लगान	सूरज पुर की कहानी	कवित्त रत्नाकर
मुमालिक मग़रबी व शि-	विद्या चक्र	भूगोल दर्पण
माली	भूगोल तत्त्व	बीज गणित १ भाग
ऐक्ट १२ सन् १८७४ ई०	पदार्थ विद्या सार	तथा २
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	वर्ण प्रकाशिका १ भाग	क्षेत्र व्यवहारिक तत्त्व
सरिश्त: तालीम की पुस्तकें	तथा २	महाभारत भाषा छन्दप्र-
	वर्ण प्रकाशिका कैथी	बन्ध में जो श्री मन्महाराजा-
विद्या की नेव नागरी अक्षरों में	१ भाग	धिराज उदित नारायण सिं-
विद्या की नेव कैथी अक्षरों में	तथा २	हजी काशी नरेश ने गोकुल
भाषा लघु व्याकरण	मंगल कोष	नाथादि कवीश्वरों से रचना
१ भाग	पत्र दीपिका	कराय कलकत्ते में छपवाया
तथा २	भारत खण्डिका	था सही श्रीयुत माधव सिंह
धात्वर्णव	क्षेत्र प्रकाश	गढ़ अमेठी नरेश की सहाय-
अक्षरावली	पत्र हितैषिणी	ता और अनुराग से इस य-
अक्षरदीपिका	रामायण सातों काण्ड	न्त्रालय में अच्युत नामा टैप के
विद्यांकुर	बाल काण्ड	पुष्ट अक्षरों में दूसरी बेर
बालबोध	अयोध्या काण्ड	शुद्धता से छपा है ॥